

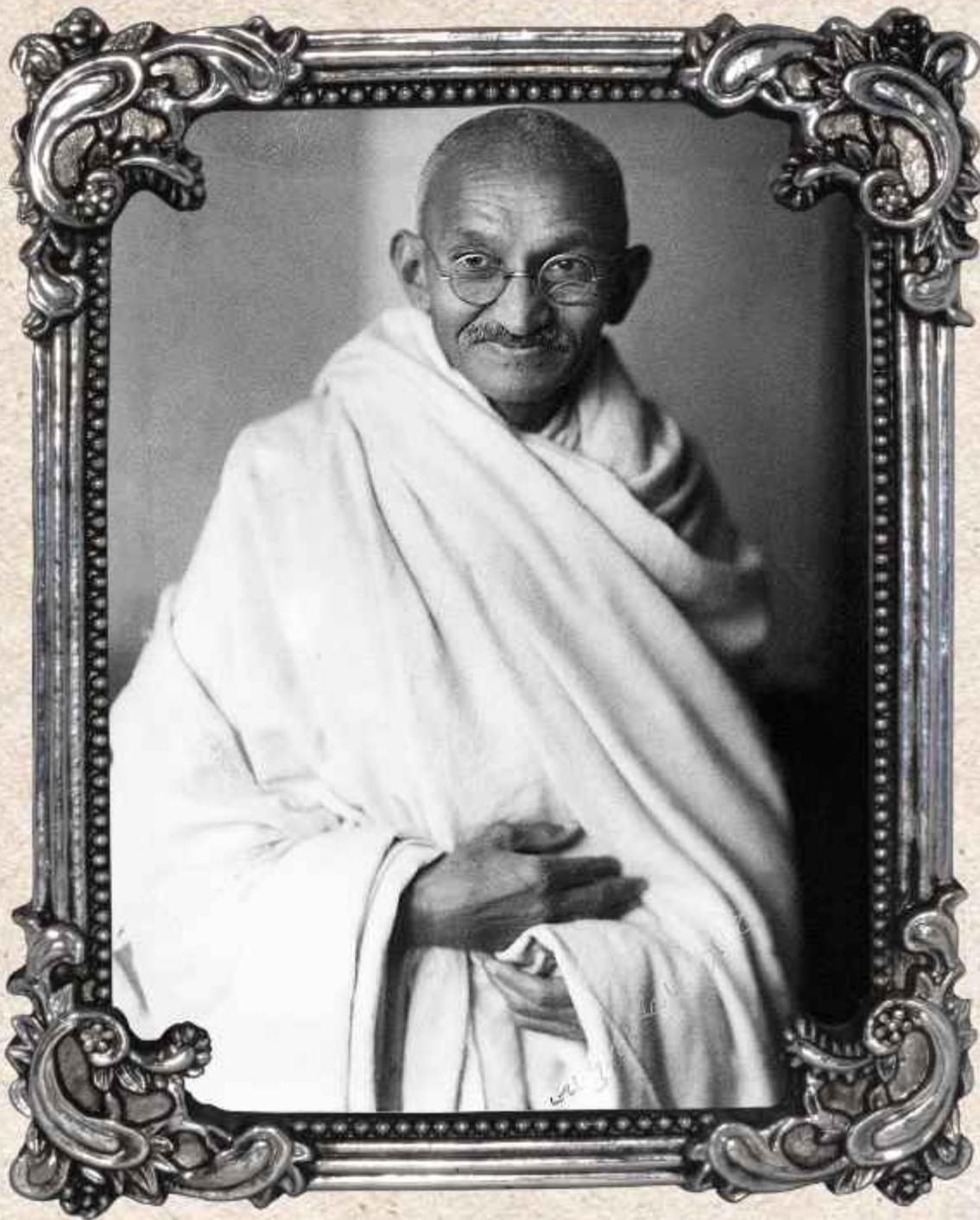


भारतीय
प्रौद्योगिकी
संस्थान
मण्डी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी

उहल

वार्षिक पत्रिका, अंक-3, अक्टूबर, 2024



मोहनदास करमचंद गांधी

(2 अक्टूबर 1869 – 30 जनवरी 1948)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी
के 155वें जन्मदिवस के अवसर पर उनकी सृति में
'उहल' का यह अंक प्रमाणपूर्वक निवेदित है।

नियम-निर्देश

- ❖ उहल के आगामी अंक हेतु अपनी मौलिक रचनाएँ भेजने का कष्ट करें।
- ❖ रचनाएँ यथासंभव टाइप हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- ❖ लेखों में शामिल छाया चित्र तथा आंकड़ों से संबन्धित आरेख स्पष्ट होना चाहिए।
- ❖ अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान के हिन्दी प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- ❖ प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- ❖ उहल में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा हिन्दी प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी ज़िम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।



साम्भार

संपादक - मंडल
उहल परिवार

संरक्षक

प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहेग
निदेशक

मार्गदर्शन

डॉ. कुमार सम्भव पाण्डेय
कुलसचिव

परामर्श मण्डल

डॉ. सुमन, डॉ. अतुल धर
एवं श्री नरेश सिंह भण्डारी
विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मुख्य संपादक

डॉ. सौम्य मालवीय
प्रभारी- हिन्दी प्रकोष्ठ

संपादक एवं अनुवाद

श्री नितिन सिंह तोमर
कनिष्ठ अधीक्षक-राजभाषा

संपादन सहयोग

श्रीमती लावण्य प्रभा
कार्यालय सहायक-हिन्दी प्रकोष्ठ



संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक	5
कुलसचिव	7
संपादकीय	
मुख्य संपादक	9

रिपोर्ट

11वाँ दीक्षान्त समारोह	11
15वाँ स्थापना दिवस समारोह	13
माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संस्थान का निरीक्षण	15
हिंदी परखवाड़ा 2023 का आयोजन	17

साक्षात्कार

डॉ. समीर शुक्ला	20
श्री कौल सिंह	22
बधाई - भूतपूर्व छात्र नितेश कुमार	24

साहित्यिक यात्रा

देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण - नितिन सिंह तोमर	26
वर्तमान जीवन में पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में मूल्य चेतना की आवश्यकता - श्रुति सिन्हा	30
मेरा पहला सोलो ट्रिप - मिनी कौर	32
मैं कौन हूँ - प्रेरक शर्मा	34
मेरी भाषा ही मैं हूँ - आर्य	35
ईशू का क्रेच में सफर - सुनील चौहान	36
पंचकर्म: एक आयुर्वेदिक उपचार - डॉ. मिलन बहल	38
वृक्षारोपण अभियान की कहानी - मुन्ना कुमार	40
ढूँघरी मेला मनाली - पवन कुमार	41
हमारे साहित्य का ध्येय - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	42
ल्हासा की ओर - राहुल सांकृत्यायन	43

निवन्ध

चुनौती बनती मानसिक बीमारियाँ - अनुराग रावत	45
ऑनलाइन शिक्षा व चुनौतियाँ - सुरुचि देवी	47
रोज़गार का संकट - समीम खान	50

महिला सशक्तिकरण और समाज - अंजली शर्मा	52
ईतस्ततः - जैनेन्द्र	54
प्रेमचन्द के फटे जूते	56
कविताएँ	
अपने बारे में सोच जगा -संखदीप मण्डल	58
भ्रमजाल -तिलक राज	59
आँखे -आर्विक ओवराँय	60
बहो शान से बहको मत, आओ कविता पकाए -हिमांशु जोशी	61
तेरा धर्म -नलिन धीमान	62
वो पुराने दिन -प्रतिक्षा चौहान	63
गुब्बारे वाली -हेमन्त लाटा	64
मैं फिर वही, तु फिर वही -तबस्सुम इकबाल	65
ए कलम तू लिख ज़रा -पंकज कुमार	66
कवि नहीं हूँ -शक्तिजा मिश्रा	67
हर बेटी है ख़ास -अनुप कुमार	68
ईश्वर ये कहलाता है -अभिषेक कुमार	69
रात खामोश है -डॉ. दीपक स्वामी	70
माता-पिता -लावण्य प्रभा वत्सी	71
मैं समंदर हूँ -हिमांशु पंथ	72
माँ -श्रीया देवलिया	73
आज बोलूंगी -करिना	74
लिखता रह गया -तुलसी राम	75
जब लौट आए तो कुछ कहना नहीं -मो. उमर फ़ारूक	76
जननी - आशा भण्डारी	77
सतपुड़ा के जंगल -भवानी प्रसाद मिश्र	78
मोकों कहाँ हूँढ़े बंदे -कबीरदास	80

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से ...



प्रिय पाठकों !

हिमाचल प्रदेश के मण्डी जनपद की रमणीय और मनोरम कमांद घाटी के बीचों-बीच वर्ष 2009 में स्थापित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, आज ज्ञान और विज्ञान, नवाचार और समकालीन शिक्षा के प्रतीक के रूप में विद्यमान है। हमारा संस्थान आज तेज़ी से तकनीकी उन्नति के केंद्र के रूप में विकसित हुआ है, जो न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता बल्कि सर्वांगीण विकास को भी प्राथमिकता देता है।

संस्थान के बढ़ते शौर्य के साथ मुझे अत्यंत हर्ष है कि इस वर्ष संस्थान, अपनी गृह हिन्दी पत्रिका 'उहल' का तीसरा संस्करण प्रकाशित कर रहा है। यह पत्रिका एक संगम के रूप में पठनीय है, जहाँ ज्ञान, विचार, संस्कृति और समाज आदि आपस में जुड़ते हैं। यह जानना दिलचस्प है कि पत्रिका का नाम स्थानीय नदी 'उहल' के नाम पर रखा गया है, जो हमारे दोनों परिसरों के समानांतर बहती है।

उहल का तीसरा संस्करण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत इस वर्ष अपनी राजभाषा की हीरक अर्थात् 75वीं जयंती मना रहा है। यदि हम विश्व पटल पर देखें, तो कई विकसित और विकासशील देश अपनी शिक्षा, शोध और दैनिक गतिविधियों का संचालन अपनी मूल भाषाओं में करते हैं। इस प्रकार, यह न केवल हमारा संवैधानिक कर्तव्य है, बल्कि औपनिवेशिक मानसिकता के अवशेषों को त्यागने और आत्मविश्वास के साथ अपने दैनिक जीवन में हिंदी को अपनाने का आह्वान भी है, जो कि विकसित भारत @2047 भारत सरकार की परिकल्पना है, जिसका लक्ष्य वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित गप्ट बनाना है, जो कि इसकी स्वतंत्रता का 100वाँ वर्ष होगा। इस परिकल्पना में आर्थिक वृद्धि, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलू शामिल हैं।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी अपने संवैधानिक मूल्यों का निर्वहन करते हुए, अपना अधिकांश काम हिन्दी भाषा में कर रहा है। इसी क्रम में, संस्थान की गृह हिन्दी पत्रिका 'उहल' का तीसरा संस्करण संस्थान की शैक्षणिक क्षमता को हिंदी और गैर-हिंदी दोनों भाषियों के अभिव्यंजक उत्साह के साथ जोड़ता है। 'उहल' केवल एक पत्रिका नहीं है। यह हमारे संकाय, अधिकारियों,

कर्मचारियों, छात्रों और स्थानीय निवासियों की रचनाओं से अलंकृत एक भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। यह पत्रिका भाषाई और सांस्कृतिक संबंधों का पोषण करने के साथ-साथ हिंदी भाषा की भव्यता और इसकी सांस्कृतिक समृद्धि को सुशोभित करती है, जो अपने मूल में निहित रहते हुए संस्थान की युवा सोच के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में कार्य करेगी।

मैं इस हिंदी पत्रिका के प्रकाशन में शामिल सभी लोगों को हार्दिक बधाई देता हूँ। साथ ही, अपनी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ, मैं विनम्रतापूर्वक आपके समक्ष 'उहल' का तीसरा संस्करण प्रस्तुत करता हूँ।

प्रो. लक्ष्मीधर बेहेरा

निदेशक





शुभेच्छा

कुलसचिव की कलम से ...

प्रिय पाठकों,

इस वर्ष जब हम अपनी हिंदी पत्रिका 'उहल' के तीसरे संस्करण का अनावरण कर रहे हैं, तो यह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में हम सभी के लिए गौरव का क्षण है। मण्डी जनपद की शांत, सुरम्य कमांड घाटी में स्थित हमारा संस्थान हमेशा से परंपरा की समृद्धि को आधुनिक शिक्षा के हॉल्लास के साथ सामंजस्य बिटाने का प्रयास करता रहा है। 'उहल' पत्रिका इस भावना का प्रतीक है, जो हमारे संस्थानिक समुदाय की रचनात्मकता, बुद्धिमत्ता और सांस्कृतिक लोकाचार का प्रमाण है। ऐसे युग में जब तकनीकी प्रगति हमारे जीवन पर हावी हो रही है, तो हमारी पहचान को आकार देने में भाषा के गहन प्रभाव को याद रखना आवश्यक है। हमारी राजभाषा हिंदी, हम सभी के हृदय में एक विशेष स्थान रखती है। इस वर्ष, जब भारत राजभाषा की हीरक जयंती मना रहा है, तो हमें हिंदी की एकीकृत शक्ति पर गौर करना होगा - हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जो विविध संस्कृतियों और क्षेत्रों को आपस में जोड़ती है तथा राष्ट्रीय सामंजस्य की भावना को बढ़ावा देती है।

संस्थान में, हम मानते हैं कि भाषा संचार के साधन से कहीं अधिक है। यह सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक माध्यम है, हमारी साझा विरासत का भंडार है। 'उहल' पत्रिका इसी विश्वास का प्रतिविवर है। यह न केवल वैज्ञानिक और तकनीकी उत्कृष्टता को पोषित करने के लिए हमारे संस्थान की प्रतिबद्धता का सार प्रस्तुत करती है, बल्कि सांस्कृतिक और भाषाई समृद्धि को भी दर्शाती है। यह पत्रिका हमारे छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों तथा स्थानीय नागरिकों को अपने विचारों, रचनात्मकता और प्रतिविवरों को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती है तथा अध्ययन के सभी क्षेत्रों के विचारों को एक साथ समाहित करती है।

'उहल' का यह संस्करण एक महत्वपूर्ण समय पर आया है। दुनिया तेजी से बदलाव देख रही है और सांस्कृतिक और भाषाई संरक्षण की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक ज़रूरी है। हमारी हिंदी पत्रिका के माध्यम से, हमारा उद्देश्य इस संरक्षण में योगदान देना है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ कल के नवाचारों को अपनाते हुए अपनी जड़ों से जुड़ी रहें।

हमारे संस्थान ने हिंदी को हमारी शैक्षणिक और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में शामिल करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। यह न केवल हमारी राष्ट्रीय भाषा नीति के अनुरूप है, बल्कि हमारे संस्थानिक समुदाय के भीतर समावेशिता को भी बढ़ावा देता है। 'उहल' में शामिल कहानियाँ, निबंध और कविताएँ आदि इस समावेशिता का प्रतीक हैं, जो संस्थान के ताने-बाने को बनाने वाली विविध रचनाओं को दर्शाती हैं।

मुझे आशा है कि जब आप इस पत्रिका को पढ़ेंगे, तो आपको हमारे योगदानकर्ताओं द्वारा साझा किए गए शब्दों और विचारों से प्रेरणा मिलेगी।

मैं उन सभी लोगों की तहे दिल से सराहना करता हूँ, जिन्होंने 'उहल' के इस संस्करण को जीवंत बनाने के लिए अथक परिश्रम किया है। जैसे-जैसे हम एक संस्थान के रूप में आगे बढ़ते और विकसित होते जा रहे हैं, आइए हम हिंदी की विशस्त को आगे बढ़ाते हुए यह सुनिश्चित करें कि यह हमारी यात्रा का एक जीवंत और अभिन्न अंग बनी रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

डॉ. कुमार सम्भव पाण्डेय

कुलसचिव



संपादकीय

मुख्य संपादक की कलम से ...



प्रिय साथियों,

हम अपने संस्थान की पत्रिका उहल का नया अंक लेकर प्रस्तुत हैं। इसमें संस्थान के सदस्यों की रचनाएँ तो हैं ही, यहाँ की सांस्कृतिक और वैचारिक प्रगति की झलकियाँ भी हैं। शिक्षा जगत् में अपने दृढ़ पग धरता हुआ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, गुजराती भाषा हिन्दी की सांस्थानिक कार्यकलाप में व्याप्ति को लेकर जिस कदर अविचल रूप से प्रतिबद्ध है उसका भी एक जीवंत प्रमाण यह पत्रिका है। हालांकि मेरा प्रस्ताव है कि केवल भाषा मात्र के उत्सव के रूप में न देखकर हम इस पत्रिका को सृजन के जश्न के तौर पर देखें। सृजन एक ऐसी श्रेणी है जो भाषागत भी होती है और भाषातीत भी। वह भाषा के भीतर रहते हुये, भाषा के बाहर पुलों का निर्माण करती है। सृजन पर केन्द्रित होने से हम भाषा को अस्मिता से जोड़कर नहीं अभिव्यक्ति के आसमान से जोड़कर देखते हैं और ऐसे में भाषा धर्म, लिंग, जाति इत्यादि की तरह पहचान का मूलम्भा नहीं संधान का साधन बन जाती है। भाषा का यही बदलता, परिवर्तित होता रूप उसका मर्म-प्राण होता है, जिसके बिना वह एक ठहरी और निर्जीव व्यवस्था मात्र रह जाती है। यह पत्रिका हमारे लिए एक ज़रिया है जिसके सहारे हम संस्थान के सदस्यों को सृजनोन्मुख होने का अवसर देते हैं और हमें हार्दिक खुशी मिलती है जब विभिन्न संकायों और कर्मचारी वर्ग की प्रतिभाएँ स्नेह और विश्वास के साथ हमें अपनी रचनायें सौंपती हैं। इसी स्नेह और विश्वास की एक बानगी के रूप में यह पत्रिका आपके सामने प्रस्तुत है।

पिछले कुछ वर्षों में सारी दुनिया में सृजन पर खतरे गहराये हैं और अभिव्यक्ति पर पहरे लगते गये हैं। लीक पर चलने और परिपाटी में सुरक्षा ढूँढ़ने की प्रवृत्ति ने सृजन के उछाह को नियंत्रित करना चाहा है। नतीजन, सृजन ने भी सुविधाजनक रास्ते चुन लिए हैं और अपनी उड़ान भूल सा गया है। यह पत्रिका सृजनात्मकता की अलख जगाये रखने का एक विनम्र प्रयास है और पीछे कही हुई बातों के मद्देनजर समकालीनता में एक छोटा सा हस्तक्षेप भी। ज़ाहिर है कि किसी विशुद्ध साहित्यिक पत्रिका के बनिस्वत इसका ध्येय संस्थान की रचनाशीलता को संदर्भित करते हुये, संस्थान की उपलब्धियों एवं क्रियाकलाप की झाँकी प्रस्तुत करना है। फिर भी हमें आशा है कि रचना-कौशल के लिहाज से अलग-अलग पायदानों पर खड़े हमारे लेखकों की रचनाओं में आपको सृजनात्मक ऊष्मा के दर्शन होंगे और यदि इससे आपके मन में भी कोई सोयी हुई अभिव्यक्ति सुगबुगाई तो हम अपना प्रयास सार्थक समझेंगे।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी समाज में अपनी भूमिका लेकर बेहद सचेत है और विभिन्न उपक्रमों के जरिये और विशेषकर समाजोपयोगी शोध के माध्यम से सार्थक हस्तक्षेप की पहल करता रहता है। हिमाचल प्रदेश के सुरम्य पर साथ-ही-साथ पर्यावरण क्षरण और जलवायु परिवर्तन की मार झेल रहे प्रांत में स्थित होने के कारण पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता को विकसित करना और उसके अनुसार शोध और शिक्षण को दिशा देना हमारी प्राथमिकता रहा है। हम भाषा के प्रश्न को भी पारिस्थितिकी के प्रश्न के साथ जोड़कर देखना चाहते हैं और इसकी कामना करते हैं कि भाषा, सम्प्रेषण, सौहार्द और केवल मनुष्य और मनुष्य के बीच ही नहीं, मनुष्य और प्राणी-जगत् के बीच भी समरसता का साधन बनेगी। ये कहना तो आसान है पर इसे आकार दे पाना अत्यंत मुश्किल। हिन्दी का 'ह' इस संस्थान के लिये हम 'ह' को अनुप्राणित कर सके यही भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी परिवार की कामना है। हम उम्मीद करते हैं कि इस पत्रिका को पढ़ते हुये आप हमारी पारिवारिकता को तो अनुभव करेंगे ही, पर उससे बढ़कर एक विस्तृत और समावेशी सामुदायिकता के लोकतान्त्रिक आधार तलाशने की अभीप्सा भी लक्ष्य कर सकें, तो हमें अपना यह विनम्र प्रयास फलीभूत होता लगेगा।

हमारी आशा है कि भविष्य में हम इस पत्रिका में शोधपरक लेखों कि संख्या में इजाफ़ा कर सकेंगे और सरस-साहित्यिक लेखन के साथ-साथ वैचारिकी को भी समुचित स्थान मिलेगा। पत्रिका को और समृद्ध बनाने के प्रति हम प्रतिश्रुत हैं और एक प्रामाणिक और बहुरंगी दस्तावेज़ के रूप में इसे नित नये सोपान चढ़ते देखना चाहते हैं।

इसी कामना के साथ, रचनाओं के इस गुलदस्ते को आपको सौंपते हुये हम हर्ष और संतोष का अनुभव करते हैं। हमें सुधि पाठकों की ओर से प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा रहेगी।

-डॉ सौम्य मालवीय
प्रभारी हिन्दी प्रकोष्ठ





उत्कृष्टता के 11 वर्ष : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में 565 छात्रों को स्नातक की उपाधि के साथ मनाया गया 11वां दीक्षांत समारोह

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी ने 16 अक्टूबर, 2023 को अपना 11वां दीक्षांत समारोह मनाया। कुल 565 छात्र स्नातक हुए, जिनमें 60 पीएचडी छात्र शामिल थे। स्नातकों में 426 पुरुष और 139 महिलाएं थीं, जो भा.प्रौ.सं. मण्डी के विविध और समावेशी शैक्षणिक माहील को दर्शाती हैं।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव और परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष डॉ. अजीत कुमार मोहन्ती उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथियों में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद के प्रो. आर.पी. सिंह, सैमसंग आरएंडडी इंस्टीट्यूट इंडिया, बैंगलोर के वरिष्ठ निदेशक डॉ. बलविंदर सिंह, पर्सिस्टेंट सिस्टम्स, पुणे के इंजीनियरिंग के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री आनंद बोरा और जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर मैटेरियल्स साइंस (एनआईएमएस) के प्रमुख अनुसंधान वैज्ञानिक प्रो. अनिरबन बंद्योपाध्याय शामिल थे। भा.प्रौ.सं. मण्डी बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) कंवल जीत सिंह ढिल्लों ने समारोह की अध्यक्षता की।

स्नातक वर्ग को संबोधित करते हुए, डॉ. अजीत कुमार मोहन्ती ने छात्रों की दृढ़ता और कड़ी मेहनत की प्रशंसा की और इस बात पर जोर दिया कि स्नातक होना उनके जीवन में सबसे

महत्वपूर्ण उपलब्धि में से एक है। उन्होंने छात्रों को उनके द्वारा अर्जित कौशल, विशेष रूप से उनकी तकनीकी विशेषज्ञता और आलोचनात्मक सोच के साथ भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस वर्ष महिला स्नातकों की संख्या में वृद्धि देखी गई, जिसमें 52 महिलाओं ने स्नातक कार्यक्रम पूरा किया, 66 ने स्नातकोंतर उपाधियाँ पूरी कीं और 14 ने पीएचडी अर्जित की - जो पिछले वर्षों की संख्या से अधिक है।

अपने संबोधन में, लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) कंवल जीत सिंह ढिल्लों ने छात्रों को भा.प्रौ.सं. मण्डी की विरासत को बनाए रखने और संस्थान की वैज्ञानिक संस्कृति को आगे बढ़ाने की याद दिलाई। उन्होंने छात्रों को आश्वासन दिया कि उनका संस्थान हमेशा उनकी उपलब्धियों पर गर्व करेगा और उनकी यात्रा का हिस्सा बना रहेगा।

वहाँ, भा.प्रौ.सं. मण्डी के निदेशक प्रो. लक्ष्मीधर बेहेरा ने सभी स्नातकों को हार्दिक बधाई दी और उनकी पेशेवर उत्कृष्टता और ईमानदारी के माध्यम से समाज का नेतृत्व करने की उनकी क्षमता पर विश्वास व्यक्त किया। उन्होंने भा.प्रौ.सं. मण्डी की भविष्य की योजनाओं के बारे में भी बताया, जिसमें अगले पांच वर्षों में संख्या की संख्या को 350 से अधिक करना

और छात्र संख्या को 5,000 से अधिक करना शामिल है। संस्थान 87 करोड़ रुपये की लागत वाली 158 शोध परियोजनाओं में सक्रिय रूप से शामिल है। साथ ही, इसका लक्ष्य अपने शोध आउटपुट को वैश्विक स्तर पर ले जाना है।

सैमसंग आरएंडडी के डॉ. बलविंदर सिंह ने सभी स्नातक छात्रों से जीवन की चुनौतियों को आत्मविश्वास के साथ स्वीकार करने का आग्रह किया, जबकि प्रो. आर.पी. सिंह ने भविष्य को आकार देने में क्वांटम प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। पर्सिस्टेंट सिस्टम्स के श्री आनंद वोरा ने निरंतर सफलता के लिए आजीवन सीखने की आवश्यकता पर जोर दिया और प्रो. अनिश्वन बंद्योपाध्याय ने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सही मार्गदर्शन के महत्वपूर्ण प्रभाव पर जोर

दिया।

समारोह का समापन निदेशक स्वर्ण पदक विजेता, प्रीतिश चुध के प्रेरक समापन भाषण के साथ हुआ। भा.प्रौ.सं. मण्डी में छात्रों द्वारा साझा की गई परिवर्तनकारी यात्रा पर विचार करते हुए, उन्होंने उन यादों के बारे में बात की, जो उन्होंने संजोई हैं और आगे आने वाले रोमांचक अवसरों के बारे में आशा व्यक्त की।

11वें दीक्षांत समारोह ने न केवल अकादमिक उपलब्धियों का उत्सव मनाया, बल्कि स्नातकों के लिए नए रोमांच की शुरुआत भी की, क्योंकि वे नवप्रवर्तक, नेता और परिवर्तनकर्ता के रूप में दुनिया में कदम रख रहे हैं।

स्वर्ण पदक विजेता

भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्वर्ण पदक



आदित्य सरकार

बी.टेक, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, 2023 बैच

भा.प्रौ.सं. मण्डी के निदेशक द्वारा स्वर्ण पदक



प्रीतिश चुध

बी.टेक, कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग, 2023 बैच

संस्थान का स्वर्ण पदक



सुधांशु गंगावार

एम.टेक. मैकेनिकल इंजीनियरिंग, ऊर्जा प्रणालियों में विशेषज्ञता के साथ



विकास के 15 वर्षों का जश्न : 15वें स्थापना दिवस समारोह के साथ भविष्य के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी की परिकल्पना

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी ने 27 फरवरी 2024 को गणमान्य व्यक्तियों और अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति में अपना 15वां स्थापना दिवस मनाया। डीडी (आरएंडडी) के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. समीर वी. कामत मुख्य अतिथि थे, उनके साथ डीआरडीएल के निदेशक श्री जी. ए. श्रीनिवास मूर्ति और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के आरएंडडी निदेशक श्री मनोज जैन विशिष्ट अतिथि थे। इस कार्यक्रम में भा.प्रौ.सं. मण्डी के निदेशक प्रो. लक्ष्मीधर बेहेंग द्वारा सभी का स्वागत किया गया और इसमें संकाय, छात्रों और कर्मचारियों ने भाग लिया। भा.प्रौ.सं. मण्डी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष लेफिटनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) के. जे. एस. ढिल्लों ने वर्चुअली अध्यक्षता की।

डॉ. कामत ने अपने संबोधन में भा.प्रौ.सं. मण्डी को उसकी तीव्र प्रगति के लिए बधाई दी, खासकर 2047 तक भारत के वैश्विक लीडर बनने के लक्ष्य के संदर्भ में उन्होंने छात्रों को अनुसंधान और विकास में सक्रिय रूप से भाग लेने के

लिए प्रोत्साहित किया, भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के लिए इंजीनियरिंग प्रतिभा का लाभ उठाने के महत्व को रेखांकित किया।

प्रो. बेहेंग ने भा.प्रौ.सं. मण्डी की विकास यात्रा और शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा संकाय, कर्मचारियों और छात्रों को उनके समर्पण का श्रेय दिया। उन्होंने संस्थान के अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे के बारे में बात की, जिसमें शैक्षणिक भवन, आवास, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय और खेल सुविधाएँ शामिल हैं। उन्होंने पर्यावरण प्रयासों के लिए संस्थान की मान्यता का भी उल्लेख किया, जैसे कि COP 28 में 'ग्रीन यूनिवर्सिटी' पुरस्कार शामिल है। भविष्य की ओर देखते हुए, प्रो. बेहेंग ने संकाय और छात्र क्षमता का विस्तार करने और सीखने के माहौल को बढ़ाने के लिए सुविधाओं में सुधार करने की महत्वाकांक्षी योजनाओं को साझा किया।

लेफिटनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) के. जे. एस. ढिल्लों ने अपने वर्चुअल संबोधन में संस्थान की उपलब्धियों की सराहना की और छात्रों तथा शिक्षकों को उत्कृष्टता के लिए

प्रयास जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के निदेशक अनुसंधान एवं विकास श्री मनोज जैन ने उद्योग के विकास को बढ़ावा देने में शिक्षा की आवश्यक भूमिका के बारे में बात की और छात्रों से भारत की प्रगति में योगदान देने के लिए अपने ज्ञान का उपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सरकार, उद्योग और शिक्षा जगत को एक साथ लाने के लिए भा.प्रौ.सं.मण्डी की प्रशंसा की।

डीआरडीएल के निदेशक श्री जी. ए. श्रीनिवास मूर्ति ने भा.प्रौ.सं.मण्डी में अत्याधुनिक सुविधाओं की सराहना की और शोधकर्ताओं को डीआरडीएल के साथ सहयोग के अवसरों का पता लगाने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने भारत को ग्लोबल टेक्नोलॉजी की लीडरशिप के रूप में स्थापित करने के लिए मिलकर काम करने के महत्व पर ज़ोर दिया।

वर्ष 2023 में भा.प्रौ.सं.मण्डी की उपलब्धियों में 63 प्रायोजित परियोजनाओं के माध्यम से ₹29.62 करोड़ से अधिक बाहरी फंडिंग और 47 परामर्श परियोजनाओं से ₹2.21

करोड़ हासिल करना शामिल है। संस्थान ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों की मेजबानी भी की, जिनमें आईसीडीईसीपी 23 सम्मेलन और माइंड ब्रेन एंड कॉन्सियसनेस सम्मेलन शामिल हैं, जिससे अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा मिला।

संस्थान ने अकादमिक आदान-प्रदान, संयुक्त अनुसंधान और उद्योग साझेदारी के माध्यम से अपनी वैश्विक उपस्थिति का विस्तार किया है। भा.प्रौ.सं.मण्डी का सतत शिक्षा केंद्र और इसका प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर, भा.प्रौ.सं.मण्डी कैटालिस्ट, आजीवन सीखने को बढ़ावा देने और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

15 वर्षों की उत्कृष्टता के साथ, भा.प्रौ.सं.मण्डी शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार में अग्रणी बना हुआ है, जो आने वाले वर्षों में और भी बड़ी उपलब्धियों के लिए मंच तैयार कर रहा है।





माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संस्थान का निरीक्षण

दिनांक 5 मार्च, 2024 को हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला शहर में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी का माननीय संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उप-समिति द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण का नेतृत्व माननीय राज्यसभा सांसद श्री रामचंद्र जांगड़ा, माननीय लोकसभा सांसद श्री श्याम सिंह यादव तथा संसदीय समिति के अन्य गणमान्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने किया।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी का प्रतिनिधित्व संस्थान के कुलसचिव डॉ. कुमार सम्भव पाण्डेय, हिंदी प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. सौम्य मालवीय, उप कुलसचिव (प्रशासन) श्री विवेक तिवारी, कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा) श्री नितिन सिंह तोमर तथा कनिष्ठ सहायक श्री अनुराग गवत ने किया।

यह संसदीय समिति द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी का पहला राजभाषा निरीक्षण था। समिति ने राजभाषा

नीति के क्रियान्वयन की दिशा में संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर संतोष व्यक्त किया, साथ ही सुधार के लिए कुछ बहुमूल्य सुझाव भी दिए।



यह निरीक्षण संस्थान के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर थी, क्योंकि इसने राजभाषा अधिनियम के अनुपालन और अपने प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अपनी पहल की समीक्षा और आकलन करने का अवसर प्रदान किया। इस तरह के निरीक्षण यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण हैं कि सरकारी संस्थान भाषा नीतियों का पालन करें और भारत सरकार द्वारा अनिवार्य रूप से राजभाषा के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

इस निरीक्षण के दौरान, 10 से अधिक संस्थानों की समीक्षा की गई, जिसमें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी ने इस आयोजन के समन्वयक के रूप में कार्य किया। निरीक्षण ने न केवल संस्थान की राजभाषा संबंधी जिम्मेदारियों को पूरा



करने में प्रगति को मापने में मदद की, बल्कि उन क्षेत्रों को भी उजागर किया जहां प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के उपयोग को मजबूत करने के लिए और प्रयासों की आवश्यकता है।



दिनांक : 18 सितम्बर, 2023

स्थान : सभागार, उत्तरी परिसर, भा. प्रौ. सं. मण्डी
समय : सायं 7:00 बजे से



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में हिंदी पखवाड़ा 2023 का आयोजन

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में 18 सितंबर से 03 अक्टूबर 2023 के दौरान हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन संस्थान के प्रभारी कुलसचिव प्रोफेसर सतिन्द्र कुमार शर्मा जी के मार्गदर्शन में 18 सितंबर को किया गया। इस दौरान एक हिंदी काव्य संध्या का आयोजन किया गया। काव्य संध्या के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रशंसित हास्य कवि पद्मश्री प्रो. अशोक चक्रधर और कवि एवं गीतकार डॉ. ओम निश्चल और संस्थान के युवा कवि डॉ. दीपक स्वामी तथा मंच पर हिंदी प्रकोष्ठ के प्रभारी डॉ. सौम्य मालवीय मौजूद रहे। काव्य संध्या संस्थान के हिंदी पखवाड़े का ऐतिहासिक आकर्षण थी, क्योंकि कवियों की मनमोहक प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर

दिया।

हिंदी पखवाड़ा में लगातार विविध प्रतियोगिताएं का जैसे कि, हिंदी निबंध लेखन, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, टंकण, स्वरचित काव्यपाठ, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें संस्थान के सभी सदस्यों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और प्रतियोगिताएं सफल बनाई।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान संस्थान में हिंदी भाषा के रूझान हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. ओम निश्चल ने, जो कि सेवानिवृत वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी भी हैं, 'राजभाषा कार्यान्वयन' विषय पर उपस्थित सभी को प्रशिक्षित किया। उन्होंने संस्थान के दैनंदिन कार्यालयीन कामकाज में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु भविष्य की योजनाओं को प्रस्तुत किया। इस कार्यशाला का



संस्थान के 20 से 25 कर्मचारियों ने प्रत्यक्ष रूप से लाभ लिया।

हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 03 अक्टूबर को संस्थान के हॉल बी में किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रभारी कुलसचिव प्रोफेसर सतिन्द्र कुमार शर्मा जी ने प्रतियोगिता विजेता को पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने गजभाषा के रूप में हिंदी का महत्व सभी को अवगत किया।

इसके अतिरिक्त, नवंबर में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहेरा की अध्यक्षता में संस्थान की पूर्ण



द्विभाषी वेबसाइट और गृह हिंदी पत्रिका 'उहल' के दूसरे अंक का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर निदेशक ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी प्रकोष्ठ के कर्मचारियों के परिश्रमी प्रयासों पर प्रसन्नता व्यक्त की। इस कार्यक्रम में मंच पर निदेशक महोदय के साथ संस्थान के कुलसचिव डॉ. कुमार सम्भव पाण्डेय और हिंदी प्रकोष्ठ के प्रभारी डॉ. सौम्य मालवीय भी मौजूद थे।



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान विजयी प्रतिभागियों का विवरण :

हिन्दी टाइपिंग

पुरस्कार	विजयी प्रतिभागी
प्रथम	श्री अनुगग रावत
द्वितीय	श्री अनूप कुमार
तृतीय	सुश्री ममता
सान्त्वना	श्री अनुग्रह रावत
सान्त्वना	सुश्री सुरुचि देवी

हिन्दी निबन्ध लेखन

पुरस्कार	विजयी प्रतिभागी
प्रथम	सुश्री अंजली शर्मा
द्वितीय	सुश्री सुरुचि देवी
तृतीय	श्री नीरज यादव
सान्त्वना	श्री अभिजय मुलिया
सान्त्वना	श्रीमती रेणु

हिन्दी टिप्पण एवम् आलेखन

पुरस्कार	विजयी प्रतिभागी
प्रथम	श्री व्योमेश रावत
द्वितीय	श्री अनुग्रह रावत
तृतीय	श्री बलबीर सिंह
सान्त्वना	श्रीमती अंजू
सान्त्वना	श्री अनुगग रावत

हिन्दी पोस्टर मेकिंग

पुरस्कार	विजयी प्रतिभागी
प्रथम	श्री कमलेश सुखदेव वानखेड़े
द्वितीय	सुश्री दामिनी जैन
तृतीय	सुश्री नेहा जसवाल
सान्त्वना	सुश्री सुरुचि देवी
सान्त्वना	सुश्री ऋतिका जैन

हिन्दी कार्यालयी अनुवाद

पुरस्कार	विजयी प्रतिभागी
प्रथम	श्री अनुगग रावत
द्वितीय	श्री विवेक तिवारी
तृतीय	श्री बलबीर सिंह
सान्त्वना	श्री समीम खाँन
सान्त्वना	श्री अनूप कुमार

हिन्दी कविता पाठ

पुरस्कार	विजयी प्रतिभागी
प्रथम	श्री हर्षित कुमार सिंह
द्वितीय	श्री यश शुक्ला
तृतीय	श्री अनुराग रावत
सान्त्वना	श्रीमती नेहा जसवाल
सान्त्वना	श्री अर्जुन



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी के संकाय सदस्य

डॉ. समीर शुक्ला के साक्षात्कार का सारांश

डॉ. समीर शुक्ला भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में गणित एवं सांख्यिकीय विज्ञान स्कूल के संकाय सदस्य हैं। डॉ. शुक्ला के साथ उनके शोध, अध्ययन एवं अन्य कार्याकलापों को लेकर हिन्दी प्रकोष्ठ कनिष्ठ अधीक्षक-राजभाषा, श्री नितिन सिंह तोमर ने बातचीत की। डॉ. शुक्ला के इस साक्षात्कार का सारांश 'उहल' पत्रिका के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैः-

प्रश्न 1: आज के डेटा-संचालित विश्व में, विशेष रूप से विभिन्न उद्योगों में निर्णय लेने में, गणितीय एवं सांख्यिकीय विज्ञान की भूमिका को आप किस प्रकार देखते हैं?

उत्तर: गणित और सांख्यिकी इंजीनियरों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। गणित की समस्याओं पर स्पष्ट और तार्किक दृष्टिकोण देकर इंजीनियरों को वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं। डेटा विश्लेषण में, एल्गोरिदम डेटा को समझने और उसके साथ काम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं और गणित इनमें से कई एल्गोरिदम का आधार है। बड़ी मात्रा में डेटा के साथ काम करने के लिए, इंजीनियरों को गणितीय सिद्धान्तों की आवश्यकता होती है। इन सिद्धान्तों के बिना, उनके लिए उपयोगी ज्ञानकारी प्राप्त करना कठिन होगा।

कैलकुलस, रैखिक बीजगणित और ज्योमिति, सांख्यिकी, संभाव्यता सिद्धान्त जैसे विषय हमें डेटा विज्ञान और मशीन लर्निंग में समस्याओं को हल करने के लिए महत्वपूर्ण तरीके देते हैं। संभाव्यता और सांख्यिकी की अवधारणाएँ, जैसे कि प्रतिगमन विश्लेषण और परिकल्पना परीक्षण, हमें डेटा को

समझने में मदद करती हैं।

कुल मिलाकर, इन क्षेत्रों में गणित और सांख्यिकी बहुत महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 2. क्या आप आईआईटी मण्डी में गणितीय और सांख्यिकीय विज्ञान स्कूल द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों के कुछ पहलुओं को साझा कर सकते हैं?

उत्तर: अभी, हमारे पास एक चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है, जो गणित और कंप्यूटिंग में बी.टेक है। हम दो मास्टर कार्यक्रम भी प्रदान करते हैं: अनुप्रयुक्त गणित में एम.एससी और अनुसंधान में एम.टेक। इसके अलावा, हम बीजगणित, ट्रोपोलॉजी, कॉम्प्लेटेटिव्स, ग्राफ सिद्धांत, विभेदक समीकरण, अनुकूलन, हार्मोनिक विश्लेषण, संख्यात्मक विश्लेषण, मशीन लर्निंग और सांख्यिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में पीएचडी कार्यक्रम प्रदान करते हैं।

हमने 2014 में एमएससी कार्यक्रम और 2022 में बी.टेक कार्यक्रम शुरू किया। दोनों कार्यक्रमों का लक्ष्य वस्तुतः दोहरा है: छात्र या तो उद्योग में नौकरी पा सकते हैं या गणित में अपना करियर बना सकते हैं। ये दोनों पाठ्यक्रम भारत में बहुत लोकप्रिय हैं और हमें बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है।

हमारे कई एमएससी छात्र भारत और विदेशों में प्रसिद्ध संस्थानों में शोध कर रहे हैं, और कुछ ने आईआईटी और एनआईटी में संकाय पद हासिल किए हैं।

प्रश्न 3. मशीन लर्निंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उदय ने गणित और सांख्यिकी के अध्ययन को कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर: हाँ, इसने गणित और सांख्यिकी पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। लोग पहले से कहीं ज्यादा गणित के महत्व और गहराई को समझने लगे हैं।

जैसा कि मैंने बताया, डेटा विश्लेषण में गणित और सांख्यिकी महत्वपूर्ण हैं। जैसे-जैसे हम ज्यादा से ज्यादा डेटा इकट्ठा करेंगे, गणित नवाचार में अग्रणी बना रहेगा।

स्वास्थ्य सेवा से लेकर वित्त, परिवहन से लेकर मनोरंजन तक, गणित उद्योगों को बदल रहा है और मानवीय क्षमताओं में सुधार कर रहा है।

हम एक प्रौद्योगिकी-संचालित दुनिया में रहते हैं जहाँ हर दिन नई तकनीकें उभरती हैं। इन तकनीकियों के साथ नई चुनौतियाँ भी आती हैं, जिसका अधिप्राय है कि गणित का महत्व बढ़ता रहेगा।

प्रश्न 4: आप उन छात्रों को क्या सलाह देंगे जो गणित और सांख्यिकी में करियर बनाने पर विचार कर रहे हैं?

उत्तर : मेरा पहला सुझाव यह है कि गणित सीखने पर ध्यान दें। जब मैं यह कहता हूँ, तो मेरा तात्पर्य यह है कि किसी भी विषय को नजरअंदाज न करें। कम से कम गणित और सांख्यिकी के सभी क्षेत्रों की मूल बातें सीखें। अपनी रुचियों के आधार पर, आप विशिष्ट क्षेत्रों में गहराई से जा सकते हैं, लेकिन आपको गणित के सभी क्षेत्रों को महत्व देना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समय अंत: विषय अनुसंधान का है और अन्य क्षेत्रों की मूल बातें जानने से आपको अपने शोध को दूसरों के साथ जोड़ने में मदद मिल सकती है।

साथ ही, इस बात के प्रति सतर्क और जागरूक रहें शोध क्षेत्र से जुड़े हुए दूसरे लोग किस प्रकार शोध कर रहे हैं, खास कर आपके शोध क्षेत्र से सम्बन्धित क्षेत्र में। समझें कि कौन सा शोध महत्वपूर्ण और उपयोगी है, और इस बारे में सोचें कि आपका शोध अन्य क्षेत्रों से कैसे जुड़ सकता है।

अंत में, कम से कम एक प्रोग्रामिंग भाषा अवश्य सीखें, चाहे आपका शोध क्षेत्र कोई भी हो। आजकल, गणित के लगभग सभी क्षेत्रों में शोध के लिए प्रोग्रामिंग भाषाओं का उपयोग काफी मददगार साबित हो रहा है।

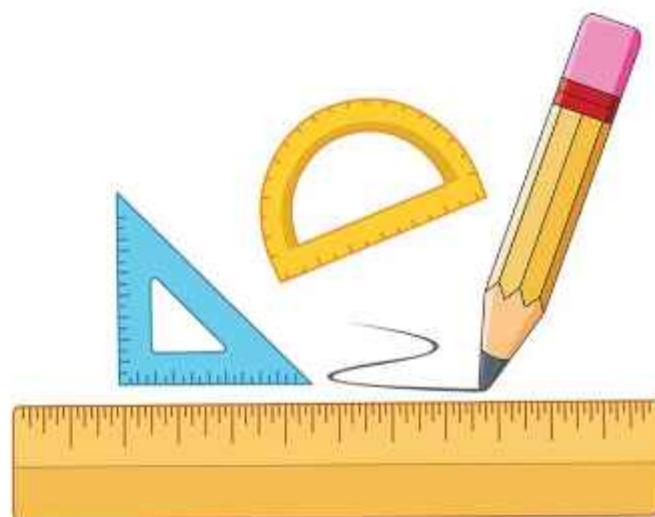
प्रश्न 5. क्या आप अपनी वर्तमान शोध परियोजनाओं पर प्रकाश डाल सकते हैं तथा बता सकते हैं कि वे गणितीय और सांख्यिकीय विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति में किस प्रकार योगदान देती हैं?

उत्तर: मेरा शोध एप्लाइड टोपोलॉजी और कॉम्बिनेटरिक्स पर कोंट्रिट है। मेरी कुछ परियोजनाएँ विशुद्ध रूप से कॉम्बिनेटरिक्स हैं, खासकर ग्राफ थ्योरी में, लेकिन मैं मुख्य रूप से टोपोलॉजी के अनुप्रयोगों में रुचि रखता हूँ।

टोपोलॉजी गणित की एक शाखा है जो निरंतर विरूपण के तहत अपरिवर्तित रहने वाली वस्तुओं के आकार और गुणों का अध्ययन करती है। इसे ज्यामिति के अमूर्त रूप के रूप में भी देखा जा सकता है।

मेरे शोध का मुख्य विचार दिए गए कॉम्बिनेटरिक्स डेटा (जैसे ग्राफ और पॉसेट) से एक टोपोलॉजिकल स्पेस बनाना है और फिर डेटा के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए उस स्पेस की टोपोलॉजी का उपयोग करना है। हम मुख्य रूप से एलजेब्रीक टोपोलॉजी के सिद्धान्तों का उपयोग करते हैं, जो बीजगणित का उपयोग करके स्पेस के गुणों का अध्ययन करता है।

वर्तमान में, एप्लाइड टोपोलॉजी गणित में अनुसंधान का एक बहुत ही सक्रिय और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। टोपोलॉजिकल डेटा विश्लेषण और टोपोलॉजिकल रोबोटिक्स जैसे उपक्षेत्र उभरते हुए क्षेत्र हैं जिनके डेटा विज्ञान, नेटवर्क विश्लेषण, जीव विज्ञान, स्वास्थ्य सेवा और छवि प्रसंस्करण सहित विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोग हैं।





भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी के शारीरिक प्रशिक्षण अनुदेशक, श्री कौल सिंह के साथ हुए साक्षात्कार का सारांश-

वर्ष 2023 में, अहमदाबाद में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित आईआईटी स्पोर्ट्स मीट में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मण्डी ने क्रिकेट में स्वर्ण पदक जीतकर विजय प्राप्त की। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के मद्देनजर, हिंदी प्रकोष्ठ ने आईआईटी मण्डी में क्रिकेट टीम के कप्तान और शारीरिक प्रशिक्षण प्रशिक्षक श्री कौल सिंह को बधाई दी। साथ ही, श्री कौल सिंह के साथ 'उहल' पत्रिका के लिए उनका एक ज्ञानवर्धक साक्षात्कार आयोजित किया। हमारे पाठकों के लिए श्री कौल सिंह के साथ साक्षात्कार का सारांश यहां प्रस्तुत है :-

प्रश्न 1 : इंटर-आईआईटी स्पोर्ट्स मीट में क्रिकेट में स्वर्ण पदक जीतने के लिए आपकी टीम की सबसे बड़ी प्रेरणा क्या थी?

उत्तर : हमारा लक्ष्य पदक जीतना था। हम कई वर्षों से इसके लिए प्रयास कर रहे थे। हमने 2013 में स्वर्ण पदक और 2014 में कांस्य पदक जीता। अब 10 साल बाद हमने फिर से क्रिकेट में पदक जीता है। हमारे निदेशक ने सभी खिलाड़ियों से

व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और उन्हें बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। संस्थान ने बेहतरीन सुविधाएं, उपकरण और पर्याप्त धनराशि उपलब्ध कराई, जिससे हमें अपनी तैयारी में कोई समस्या न आए। मैं इसके लिए निदेशक प्रौ. लक्ष्मीधर बेहेरा का आभारी हूँ। मुझे उम्मीद है कि खिलाड़ियों को भविष्य में भी इसी तरह का सहयोग मिलता रहेगा।

प्रश्न 2 : आपके अनुसार इस टूर्नामेंट में सबसे चुनौतीपूर्ण टीम कौन सी थी और आपकी टीम ने उस चुनौती का सामना कैसे किया?

उत्तर : हमारे लिए सबसे चुनौतीपूर्ण टीम शुरुआती मैच में आईआईटी भुवनेश्वर थी और फाइनल में आईआईटी धनबाद थी। हमने अपने स्पिन गेंदबाजों की मदद से इस कठिन चुनौती का सामना किया।

प्रश्न 3 : आपकी टीम ने जीत के लिए क्या रणनीति अपनाई और किन खिलाड़ियों ने अहम भूमिका निभाई?

उत्तर : हमने अपने स्पिन गेंदबाजों पर बहुत भरोसा किया और हमारी रणनीति कारगर साबित हुई। बल्लेबाजी में डॉ. भास्कर,



श्री अमित शर्मा, श्री देशराज और डॉ. आदित्य निगम ने अहम भूमिका निभाई। गेंदबाजी में श्री अमित शर्मा, श्री देशराज, श्री प्रकाश सिंह नेगी, डॉ. आदित्य निगम और डॉ. गजेंद्र सिंह ने अलग-अलग मैचों में अच्छा प्रदर्शन किया। हमारे फील्डर्स और विकेटकीपर ने भी पिछले साल की तुलना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रश्न 4 : आपने टीम के भीतर समन्वय और संचार कैसे बनाए रखा?

उत्तर: कप्तान के तौर पर मैंने अच्छे फँसले लिए और टीम के बीच अच्छा समन्वय बनाए रखा। हमने पूरे टूर्नामेंट में पिच का सावधानीपूर्वक आकलन किया और टीम को जीत दिलाने के लिए अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी की योजना बनाई।

प्रश्न 5 : आपने और आपकी टीम ने इस प्रतियोगिता से क्या नव्या सबक सीखा जो भविष्य में काम आ सकता है?

उत्तर: फिट खिलाड़ियों के चयन से अच्छे नतीजे मिले, जो भविष्य में काम आएंगे। हमें एक मजबूत टीम बनाने के लिए अभ्यास और कड़ी मेहनत जारी रखने की ज़रूरत है।

प्रश्न 6 : इंटर-आईआईटी स्पोर्ट्स मीट की तैयारी के दौरान आपको किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और

आपने उनसे कैसे पार पाया?

उत्तर: ऑफिस के काम में व्यस्त होने के कारण हमारी पूरी टीम एक साथ अभ्यास नहीं कर पाई। हालांकि, हमने उपलब्ध खिलाड़ियों का सर्वोत्तम उपयोग किया और टीम को कभी हतोत्साहित नहीं किया। हमने उनका मनोबल ऊँचा रखा और अभ्यास जारी रखा।

प्रश्न 7 : भविष्य की खेल प्रतियोगिताओं के लिए आईआईटी मंडी टीम को मजबूत करने की आपकी क्या योजना है?

उत्तर: हम एक अच्छी टीम का चयन करके और अधिक प्रशिक्षण प्रदान करके यह सुनिश्चित करेंगे कि टीम भविष्य की प्रतियोगिताओं में भाग ले।

प्रश्न 8 : यह प्रदर्शन आईआईटी मंडी में खेल संस्कृति को कैसे प्रेरित करेगा और इसे और कैसे मजबूत किया जा सकता है?

उत्तर: इससे अन्य खेलों और खिलाड़ियों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। हमारी क्रिकेट टीम को 26 जनवरी, 2024 को गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान हमारे निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया था। इस तरह के समारोह भविष्य में भी होते रहने चाहिए।





भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी के लिए गौरव का क्षण - भूतपूर्व छात्र नितेश कुमार ने पेरिस पैरालिंपिक में जीता स्वर्ण पदक

हम भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी के एक शानदार भूतपूर्व भूतपूर्व नितेश कुमार को पेरिस पैरालिंपिक में उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई देते हैं। नितेश ने 2 सितंबर को पुरुष एकल SL3 श्रेणी में भारत का



पहला बैडमिंटन स्वर्ण पदक जीतकर संस्थान और गष्ट को बहुत सम्मान दिलाया है।

एक रोमांचक फाइनल में, नितेश ने ग्रेट ब्रिटेन के डेनियल ब्रेथेल को तीन गेम के रोमांचक मुकाबले में 21-14, 18-21, 23-21 से हराया। यह मैच नितेश के लचीलेपन और दृढ़ संकल्प का प्रमाण था, क्योंकि उन्होंने स्वर्ण पदक हासिल करने के लिए बेहतरीन कौशल और धैर्य का प्रदर्शन किया। उनकी जीत विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी, क्योंकि यह ब्रेथेल पर उनकी नीं पिछली मुठभेड़ों के बाद पहली जीत थी।

नितेश की जीत न केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि भारत के लिए भी एक शानदार क्षण है, क्योंकि इससे पेरिस पैरालिंपिक में देश की पदक तालिका में इजाफ़ा हुआ है। उनका समर्पण और दृढ़ता सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है और उनकी सफलता भविष्य के एथलीटों के लिए आशा की किरण है।



संस्थान में, हम इस उपलब्धि को हमारे समुदाय को परिभाषित करने वाली उत्कृष्टता और दृढ़ संकल्प के प्रतिबिंब के रूप में मनाते हैं। नितेश कुमार ने हम सभी को गौरवान्वित

किया है और हम उनके आगे के सफर में उनकी निरंतर सफलता की कामना करते हैं।



देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

मानक हिन्दी वर्णमाला और वर्तनी

भारत संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप हिन्दी का मानक रूप निर्धारित करना बहुत आवश्यक था, ताकि वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता रहे और टाइपग्राफर, कंप्यूटर आदि आधुनिक यंत्रों के उपयोग में लिपि की अनेकरूपता बाधक न हो।

इन सभी बातों को ध्यान में रखकर हिन्दी वर्णमाला तथा अंकों का मानक रूप निम्न प्रकार से है :-

हिन्दी वर्णमाला

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	
मात्रा	-	।	f	ॉ	ौ	ू
	,	,	,	,	,	,
उदाहरण क	का	कि	की	कु	कू	
क्	के	कै	को	कौ		
ध्यान दें	र+उ = रु		र+ऊ = रू			
मूल व्यंजन	क	ख	ग	घ	ड	
	च	छ	ज	झ	ঢ	
	ট	ঠ	ড	ঝ	ণ	
	ত	থ	দ	ধ	ন	
	প	ফ	ব	ভ	ম	
	য	র	ল	ব		
	শ	ষ	স	হ		
	ঢ	ঢ				
संयुक्त व्यंजन	ক্ষ	ত্র	জ্ঞ	শ্র		

ক্ষप्या ध्यान दें : (ক+ষ = ক্ষ) (ঠ+ৰ = ত্র) (জ+ঞ = শ্র)

आधुनिक हिन्दी में জ/কा उच्चारण 'ঞ' होता है।

- अनुस्वार . (जैसे - हंस)
- चंद्रबिंदु * (जैसे - सাঁस)
- विसर्ग : (जैसे - प्रातः)

हल् चिह्न

(जैसे - वाक्)

आगत ध्वनियों के वर्ण

स्वर

ঁ

(जैसे - कॉलेज)

ব্যংজন

খ

(জैसे - সখ্ত)

়

(জैसे - মে়জ্)

ফ

(জैसे - সাফ্)

देवनागरी अंक

১, ২, ৩, ৪, ৫, ৬, ৭, ৮, ৯, ০

भारतीय अंकों का अंतरगट्टीय रूप

১, ২, ৩, ৪, ৫, ৬, ৭, ৮, ৯, ০

संयुक्त व्यंजन

हिन्दी में संयुक्त व्यंजन निम्नलिखित चार प्रकार से बनते हैं :-

(1) 'ক' और 'ফ' के हुक को हटाकर

ক+ত = ক (মুক) ফ+ত = (মুফ্ত)

(2) খড়ী পাই বালे वर्ण : পাই হটা कर बनते हैं :-

খ+য = মুখ্য ঙ+ন = লাগন ঙ+ন = বিঘ্ন

চ+চ = তচ্চ জ+ব = জ্বালা ণ+য = পুণ্য

ত+ত = কুত্তা থ+য = তথ্য ধ+ব = ধ্বজ

ন+ম = জন্ম প+য = প্যার ব+দ = শব্দ

ঁ+য = সঁখ্য ম+ম = সম্মান চ+য = শচ্যা

ল+ক = শুল্ক ঠ+য = ব্যাপার শ+ব = শবাস

ঁ+ট = কঁষ্ট স+ম = স্মরণ খ+ত = সখ্ত

জ+ব = জঁবাত থ+য = লক্ষ্য জ+ম = নজ্ম

ত্র+য = ত্র্যঁবক

তীন व्यंजन बाले

ত+র+য = স্বাতংত্র্য স+থ+য = স্বাস্থ্য

(3) বিনা খড়ী পাতী बালे वर्ण - वर्ण के नीचे हल् चिह्न लगा कर बनते हैं :-

ঁ+ম = বাইময় ছ+ব = উচ্ছবাস ট+ট = লদ্বু

द+य = पाठ्य इ+य = इयोडी ह+य = धनाढ़य
 द+व = विद्वान् द+य = विद्या ह+म = ब्रह्म
 ह+न = चिह्न ह+व = जिह्वा

(4) 'र' के तीन रूप हैं :-

- (1) इ+क (क) = तर्क
- (2) क+र (क्र) = क्रम
- (3) द+र (द्र) = द्राम, राष्ट्र

वर्तनी का मनकीकरण

1. परसर्ग शब्द

- (i) संज्ञा और विशेषण शब्द के साथ ने, को, से, का, में आदि परसर्ग अलग लिखे जाएँ - गाँधी जी ने, बच्चों को, घर पर आदि।
- (ii) क - सर्वनामों के साथ परसर्ग मिलाकर लिखे जाएँ - मैंने आपको, उस पर, किससे आदि। सर्वनाम के बाद यदि 'ही, तक' आते हैं तो परसर्ग अलग लिखे जाएँगे आप ही को, उस तक को (ध्यान - दें - 'मैंने ही') आदि।
 ख - सर्वनाम के साथ यदि दो परसर्ग हों तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग लिखा जाए उसके लिए, इसमें से आदि।

2. क्रिया पद

क्रिया पद के भीतर आने वाले सारे शब्द अलग लिखे जाएँ - जाता था, पढ़ा करता था, किया जा सकता है, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।

3. योजक चिह्न (हाइफन)

- (i) दुन्दु समास वाले शब्दों के बीच योजक चिह्न अवश्य लगाया जाए - धीरे-धीरे, आटे-दाल का भाव, छोटे-बड़े, चाल-चलन, जाते-जाते, पढ़ना-लिखना आदि।
- (ii) तुलना के लिए प्रयुक्त 'सा' के पहले योजक चिह्न का प्रयोग किया जाए - तुम-सा, चाँद-सा मुखड़ा, चाकू से तीखे आदि।
- (iii) तत्पुरुष समास के बीच शब्द जो किसी एक संकल्पना के सूचक हों उन्हें मिलाकर लिखा जाए ग्रामसभा, आत्महत्या, भाषाविज्ञान आदि।
- (iv) कुछ समरूप शब्दों में अर्थ भ्रम दूर करने के लिए

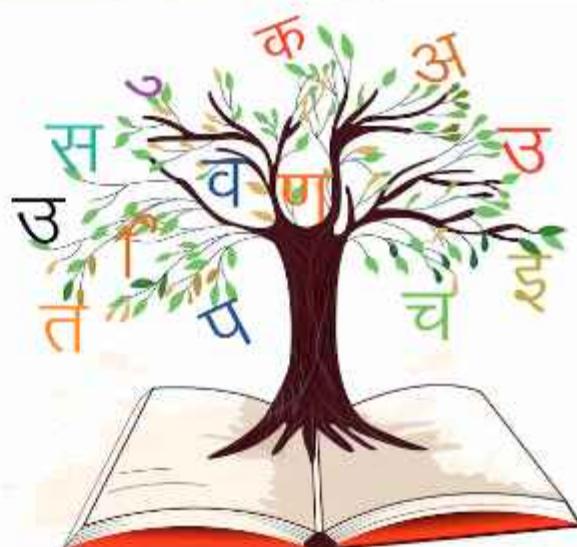
तत्पुरुष समास में भी योजक चिह्न का प्रयोग अवश्य किया जाए। जैसे (भूमि के तत्व) (समस्त पद है) य भूतत्व (भूत होने का भाव) (भूत के साथ प्रत्यय जुड़ा है) भू-तत्व (अ) कठिन संधियों से बचने के लिए भी योजक चिह्न का प्रयोग किया जा सकता है:- द्वि-अक्षर (द्वयक्षर), द्वि-अर्थक (द्वयर्थक), त्रि-आक्षरिक (त्व्यक्षरिक) आदि।

4. अव्यय

- (i) 'जी, श्री, भर, मात्र' शब्द से अलग लिखे जाएँ। जैसे-बाबू जी, पिता जी, श्री राजेंद्र, दिन भर की दौड़-धूप, इतना भर बता दो, पाँच रुपए मात्र, निमित्त मात्र।
- (ii) समस्त पदों में प्रति यथा आदि अव्यय पृथक न लिखे जाएँ-प्रतिशत प्रतिदिन, यथासमय, यथोचित आदि।

5. श्रुतिमूलक 'य' और 'व' के शब्द

- (i) श्रुतिमूलक 'य' और 'व' का प्रयोग क्रिया रूपों में होता है। क्रिया रूप इस तरह से बनेंगे आया आए आई आई (हुवा...) हुआ हुए हुई हुई जिन शब्दों में मूल रूप से 'य' और 'व' शब्द के अंग हों, तो वे छोड़े नहीं जा सकते। जैसे - पराया - पराये पहिया - पहिये रुपया - रुपये दायाँ - दायें करुणामय - करुणामयी उत्तरदायी - उत्तरदायित्व स्थायी, अव्ययीभाव आदि।



6. अनुस्वार(बिंदी या शिरोबिंद)

- (i) 'य' से 'ह' तक कई शब्दों में अनुस्वार का प्रयोग निम्न प्रकार से होगा। यहाँ अनुस्वार के स्थान पर व्यंजन न लिखे जाएँ। जैसे संरचना, संताप, संवाद, संशय, संसार, संयम, संरक्षण, सिंह।
- (ii) अन्य नासिक्य व्यंजनों के साथ संयुक्त व्यंजन के रूप इस प्रकार बनेंगे। जैसे- अन्वय, वाह्यमय, अन्य, ताप्र, काम्य, सम्हालना, अम्ल।
- (iii) अंग्रेजी और उर्दू शब्दों में स, श, ज से पहले 'न' के उच्चारण के लिए अनुस्वार लिखें। जैसे पेंसिल, मुंशी, मॉजिल, पेंशन, मंजूरी।
- (iv) पंचमाक्षर संयुक्त व्यंजन के रूप में पंचम वर्ण (नासिक्य) उसी वर्ग के पहले चार वर्णों के साथ नासिक्य का उच्चारण देता है।
क - वर्ग अंक, शंख, जंग, संघ
च - वर्ग चंचल, पंछी, पंजा, झंझट
ट - वर्ग टंट्य, कंठ, डंडा, पंढा
त - वर्ग अंत, पंथ, बंद, अंधा
प - वर्ग कंपन, गुफन, संबल, संभव
- (v) पंचम वर्णों का द्वित्व आधे व्यंजन से लिखा जाए। जैसे- विष्णु, अन्न, सम्मान, सम्मेलन।
- (vi) तत्सम शब्दों के अंत में अनुस्वार का प्रयोग 'म' का सूचक है। जैसे अहं (अहम्) एवं (एवम्), शिवं (शिवम्)।
- (vii) अंग्रेजी और उर्दू से गृहीत शब्दों में नासिक्य व्यंजन पूरा लिखा जाए। जैसे- लिमका, तनख्वाह, तिनका तमगा, कमसिन, इनकार, इनसान।

7. अनुनासिक चिह्न(चंद्रबिंदु)

- (i) अनुनासिक चिह्न व्यंजन नहीं है, स्वरों का ध्वनि गुण है। इसमें स्वर के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नाक से भी हवा निकलती है अँ, ाँ, उँ, ऊँ, ऐँ। जैसे - हँसना, ाँख, ऊँगली, ऊँट, जाऊँ, जाएँ।
- (ii) वर्ण की शिरोरेखा के ऊपर मात्रा हो तो अनुनासिकता को मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए बिंदी से दिखाया जाता है। जैसे- सिंचाई, नीद, गेंद, में, पैंतीस, हैं, गोंद, लोगों ने, ाँधा। (वस्तुतः यहाँ बिंदी अनुनासिकता

की ही सूचक है अनुस्वार की नहीं ।)

8. विसर्ग

- (i) तत्सम शब्दों के अंत में जहाँ विसर्ग का प्रयोग होता है, वहाँ उनका लोप न किया जाए। जैसे पुः, अतः, प्रातः, प्रायः। इन शब्दों से - अंतः पुर, अंतः करण, प्रातः काल, स्वतः, अंततः, मूलतः क्रमशः आदि शब्द बनते हैं।
- (ii) कुछ शब्द संधि के नियमों से बनते हैं, इसलिए इनमें विसर्ग के स्थान पर व्यंजन आते हैं। जैसे- निः + वचन निर्वचन निः + छल निश्छल,
दुः + साहस दुस्साहस,
निः + शब्द = निश्शब्द ।

9. हल्चिह्न

- (i) अगर व्यंजन को स्वर के बिना दिखाना हो तो उसमें हल्चिह्न लगता है। ऐसे वर्ण को हलंत व्यंजन कहा जाता है।
- (ii) वर्णमाला में व्यंजनों को उच्चारण की सुविधा के लिए 'अ' स्वर से युक्त ही दिखाया जाए।
- (iii) प्राणिदेशा, बागदेवी, साक्षात्कार, जगन्नाथ आदि का समास विग्रह करें तो पहला शब्द हलंत होगा।
- (iv) 'संसद', 'परिषद' के साथ हल् का प्रयोग वैकल्पिक है। तत्सम शब्द के रूप में यदि कोई इन शब्दों को हल् चिह्न के साथ लिखे तो उसे अशुद्ध न माना जाए। जैसे संसद्, परिषद् आदि ।
- (v) हे राजन्, भगवन् जैसे तत्सम संबोधन शब्दों में हल् चिह्न का प्रयोग करें, अन्यथा हे राजा, हे भगवान का प्रयोग किया जाए।
- (vi) शिक्षण में संधि-विच्छेद करने पर हल चिह्न जरूर दिखाएँ। जैसे उन्नयन = उत् नयन, उल्लास उत् लास, जगन्माता जगत् माता ।
- (vii) जो शब्द संस्कृत के महत्, विद्वत् आदि से बने हैं, उनमें हल चिह्न न लगाने का प्रयत्न किया जाए। जैसे - महान्, विद्वान् आदि ।

10. तीन व्यंजनों के गुच्छ

निम्नलिखित शब्दों में तीन की जगह दो व्यंजनों वाले शब्दों का प्रयोग बेहतर होगा। जैसे - महत्व - महत्व,

तत्त्व - तत्त्व, अर्द्ध तत्त्व, अर्ध - अर्ध (टिप्पणी तुलना के लिए उच्चारण (उत् + ज्वल), प्रज्वलित = (प्र+ज्वलित) के वर्तनी रूपों पर विशेष ध्यान दें।)

11. ऐ/ऑ के शब्द

- (i) कौवा का उच्चारण 'कव्वा' जैसा है तथा भैया का 'भ्य्या'। उच्चारण को ध्यान में रखते हुए शब्दों की वर्तनी देखिए। जैसे - कौवा, चौबन, पौवा, हौवा, गैया, सवैया, तैयार, ऐयाशी, रवैया।
- (ii) संस्कृत शब्द शय्या, 'शय्यन' से बना है। इसे शैया न लिखें।

12. पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर'

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए। जैसे खाकर, मिलाकर, रो-रोकर।

13. 'वाला' प्रत्यय

- (i) जब 'वाला' प्रत्यय से दूसरा संज्ञा या विशेषण शब्द बने तो वह एक शब्द के रूप में मिलाकर लिखा जाए। जैसे-फूलवाली, टोपीवाली, गाँववाला, जानेवाले लोग।
- (ii) अन्य स्थानों में 'वाला' को अलग करके लिखें।
हम वहाँ जाने ही वाले हैं।
वह पहला वाला मकान।

14. विदेशी ध्वनियाँ

- (i) अरबी-फारसी या अंग्रेजीमूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतरण हो चुका है, उनके लिए हिंदी रूप ही स्वीकार किए जाएँ। जैसे कलम, किला, दाग आदि (क़लम, क़िला दाग नहीं); पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग दिखाना अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो वहाँ उनमें यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ। जैसे खाना दवा खाने जाना है - 1 ख़ाना - दवा खाने जाना है।

राज : राज, फन (साँप का) : फन

सारांश में यह कहा जा सकता है कि अरबी-फारसी एवं अंग्रेजी की मुख्यतः क्, ख् ग्, ज्, फ्, और ऑ ध्वनियाँ हिंदी में आई हैं जिनमें से दो 'क् और ग्' तो हिंदी उच्चारण में परिवर्तित हो गई हैं, एक 'ख्'

लगभग हिंदी 'ख' में खपने की प्रक्रिया में है और शेष दो 'ज, फ' धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोने/बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं।

- (ii) अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ऑ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा (।) के ऊपर अर्धचंद्र का (ऑ, ौ) प्रयोग किया जाए। जैसे ऑक्सीजन, ऑर्डर, कॉफी, कॉलेज, डॉक्टर, नॉलेज।

- (iii) हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। विद्वत्समाज में दोनों रूपों की एक-सी मान्यता है। कुछ उदाहरण हैं- गरदन / गर्दन, गरमी / गर्मी, बरफ/बर्फ, बिलकुल / बिल्कुल, सरदी/सर्दी, कुरसी/कुर्सी, फुरस/फुर्सत, बरदाश्त/बर्दाश्त, बरतन/बर्तन, दोबारा/दुबारा आदि। इन वैकल्पिक रूपों में से पहले वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।

विरामादि चिह्न

शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।

- (i) फुलस्टाप को छोड़कर शेष विरामादि चिह्न वही ग्रहण कर लिए जाएँ, जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं।
- (ii) अल्पविराम (,), अर्धविराम (य), उपविराम (:), प्रश्नचिह्न (?), विस्मयसूचक चिह्न या संबोधनसूचक चिह्न (!), निर्देशक चिह्न (-), उद्धरण चिह्न (" - "), शब्द या अवतरण चिह्न (' '), विवरण या आदेश चिह्न (:-), लोप चिह्न (.....), संक्षेपसूचक चिह्न (°), योजक चिह्न (-), कोष्ठक [{ (-) }], अर्धव अल्पविराम ('), तुल्यता सूचक चिह्न (=), हंसपद (^)

- (iii) फुलस्टाप (पूर्णविराम) के लिए खड़ी पाई (।) का ही प्रयोग किया जाए।

श्री नितिन सिंह तोमर
कनिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा)

वर्तमान परिदृश्य में पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में मूल्य-चेतना की आवश्यकता

“यह दीप अकेला स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।”

यह सच्चिदानन्द हीरानंद वात्प्रायान 'अज्ञेय' की पंक्तियाँ सार्थक प्रतीत होती हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य और समाज का सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ठ है। सदाचार, दया, समानता, उदारता, संस्कृति को बचाए रखना, सभी धर्मों के प्रति सामान दृष्टि रखना जिसमें हिंसा का कोई स्थान न हो आदि जीवन के ठोस मूल्य हैं। आज इन मूल्यों की आवश्यकता को बनाएं रखने की जरूरत है। स्वयं को भले ही आधुनिकता की श्रेणी में रखना चाहें तो भी हम अत्यंत ही पिछड़े हैं। आज के इस यांत्रिक युग में हर कोई स्वयं को विशेष पंक्ति में रहने की होड़ लगाएं हुए हैं और ऐसे में जीवन के मूल्यों का ज्ञास होना स्वाभाविक है। सही मायनों में आधुनिकता मूल्य से सम्बंधित हैं। सदाचार का पालन करना इसलिए जरुरी नहीं है गाँधी का जीवन सत्य और अहिंसा पर आधारित रहा है जिसमें आँख के बदले आँख देने का अर्थ है जीवन को अंधकारमय बनाना है। उन्होंने अपनी आत्मकथा "सत्य के प्रयोग" में लिखा है सत्य बोलने से आत्मा की शुद्धि होती है और मन में भारी दबाव नहीं होता है आज के समय में सत्य बोलना बहुत कठिन है क्योंकि सत्य भीती सतह से उपजा है जिस कारण आज झूठ बोलना अत्यंत ही सरल हो गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मूल्य बहुत ही लचीले पड़ गये हैं जिसके लिए एक बार इतिहास में पुनः झाँकने की जरूरत है। आधुनिकता की तकनीक ने ऐसे उपकरणों का निर्माण किया है जिसने एक और फर्जी, झूठ, लूट खसूट, पारिवारिक मूल्यों में गिरावट को स्थान दिया है, वहीं दूसरी ओर बेरोजगारी की समस्या में बढ़ोतरी ने मनुष्य को उसके मूल्यों से अलग किया है। आज वृद्ध आश्रमों में लोगों की भर्ती नैतिकता के ह्लास की ओर संकेत करती है। यह स्वाभाविक है कि उम्र के पहले पड़ाव पर हम जिसका विरोध करते हैं वहीं उम्र के दूसरे पड़ाव पर उसका समर्थन करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों के उम्र के अधिकांश समय तक उनका साथ देते हैं किन्तु वही बच्चे बड़े होने पर बुढ़ापे में उनसे पीछा छुड़ाते हैं, जिन्होंने हमें इस काबिल बनाया कि हम कुछ

विशेष कर सकें और हमने उनके महत्व को ही नकार दिया है।

मनुष्य अपने मूल्यों से पिछड़ता जा रहा है जिस कारण यह कहा जा सकता है कि आज के समय में पारिवारिक और सामाजिक सन्दर्भ में मूल्यों की आवश्यकता बहुत उपयोगी है। नई पीढ़ी स्वयं को पुरानी पीढ़ी से अलगाने की निरंतर कांशिश में वास्तविक मूल्यों को छोड़ती जा रही है और अनेक पारिवारिक समस्याओं में वृद्धि हो रही है जैसे संयुक्त परिवार का एकल परिवार में विलय होना जिसमें घर के सभी बालक सामूहिक रूप से नैतिक शिक्षा अपने वरिष्ठ लोगों से प्राप्त करते थे किन्तु आज प्रत्येक व्यक्ति क्षण में जीना चाहता है। आज के अभिभावकों के पास अपने बच्चों के लिए समय ही नहीं है कि वे उन्हें जीवन के मूल्यों से अवगत करायें और ऐसे में बच्चे इन्टरनेट को अपना जीवन साथी बना लेते हैं जिस कारण भयंकर समस्याएं सामने आती हैं। यह भी ध्यान रखने की बात है कि अकेलापन एक सीमा तक उचित है फिर वही अकेलापन हम पर हावी हो जाता है और ऐसे में विकल्पहीनता की स्थिति उत्पन्न होती है और मनुष्य के लिए आत्महत्या ही उपयुक्त मार्ग बनती है। 'ज्यां पाल सात्र' के अनुसार आत्महत्या सबसे बेहतर विकल्प है। भारतीय संविधान में आत्महत्या कानूनी अपराध है जिसमें 302 धारा के तहत एक साल की सजा और जुर्माना का भुगतान अनिवार्य है। वह समाज से कटकर अलग नहीं रह सकता है किन्तु वह अपनी विशिष्टताओं के कारण विशेष भी है और समाज के सन्दर्भ में उसके दायित्व भी है जिनका निर्वाह उसे पूरी निष्ठा से करना होता है। एक बार पुनरु 'वसुधेव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को अपनाने की आवश्यकता है जिसमें विश्व के सभी नागरिक एक पूरा परिवार हैं। मनुष्य परिवार से बिछुड़ते हुए तकनीक के गस्ते पर चल रहा है। मनुष्य में संवेदना समाप्त हो रही है वह व्यक्ति-विशेष के लिए समग्र राष्ट्र की संकल्पना को नष्ट करना चाहता है जापान के हिरेशिमा और नागासाकी में परमाणु विस्फोट तकनीक के नकारात्मक पक्ष को उद्घाटित करता है। प्रतिद्वंदिता के काल में हर कोई उन्नति चाहता है और इसके लिए वह मानुष जीवन के मूल्यों की बलि चढ़ा देता है। किसी को भी बर्दाश नहीं है कि दूसरा

गष्ट उससे आगे की ओर अग्रसर हो ऐसे में वह शॉटकट मार्गों का चयन करता है जो जितनी जल्दी आते भी है और उतनी तीव्रता से चले भी जाते हैं।

वैज्ञानिक विकास के समय में सामाजिक जीवन से स्नेह, प्रेम, उदारता, मदद, समानता मिटती जा रही है जिसमें एक बार फिर से मध्यकाल को टटोलने की जरूरत है और जीवन के मूल्यों को व्यवहार में उतारने की आवश्यकता है जिसमें परिवार से यात्रा को आरम्भ करना होगा। आज हम सभी अपने आप में इतने व्यस्त हैं कि अपने बृद्धों को महत्व नहीं देते और उनके दुःख में भागीदारी को तो छोड़िये उनके खुशी में शामिल भी नहीं होते हैं आज के समय में ऐसा क्या है जो हमें अपनों से अलग रहने को बाध्य करता है। शायद इसकी समझ उम्र के उस पढ़ाव पर होगी जब हमारे पास विकल्प नहीं होंगे। जिन्दगी में सफलता का उत्साह मनाने के लिए अनेक लोग मिल जायेंगे किन्तु विफलता में परिवार ही सहयोगी के रूप में पहल करता है। इस सत्य को लोग नजरंदाज करते हैं कि मनुष्य अपने मूल्यों को परिवार तथा समाज से सीखता है अपितु समस्या यह है कि वह उन मूल्यों को अपने जीवन में किस हद तक अपनाता है?

इस समय में कुछ मूल्य शेष अवश्य हैं, जो हमें गष्ट से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ते हैं। जीवन में मूल्य चेतना की आवश्यकता बनी हुई है गष्टीय स्तर पर दूसरों के प्रति मानवता का दायित्व और घरेलू स्तर पर आपसी जीवन संबंधों में आई खाई को पाठने की कोशिश करना है। भारत में विडम्बना है कि विमर्श तो पारिवारिक, सभ्यता, समाज, संस्कृति, परंपरा, भाषा पर करेंगे किन्तु केंद्र में संस्कृति का पर्याय 'धर्म' होगा और वह भी हिंदुत्व होगा। हम सभी अपने धर्म से इतना बंध जाते हैं कि अपना धर्म ही सर्वोपरि होता है और उसी को अपना सब कुछ मान लेते हैं। समानता के मूल्य को फिर से अपनाने की जरूरत है और अपने विचारों को बड़े स्तर पर खोलने की जरूरत है बास्तव में धर्म ने इतनी छूट दी है कि मनुष्य धर्म से प्रश्न कर सकता है और मनुष्य के लिए धर्म बना है न कि धर्म के लिए मनुष्य। धर्म ने भी मूल्यों की स्थापना की और जो भी पुरातन है वो रुढ़ नहीं है। सदैव सकागतमक पहलुओं को लेकर ही आगे बढ़ना चाहिए ये भी जीवन के प्रमुख मूल्यों में से एक है।

संस्कृति में नृत्य, संगीत, स्थापत्य आदि आते हैं और आज कुशल संसाधन होते हुए भी मनुष्य उन संस्कृति मूल्यों को बचाने में प्रयत्न नहीं करता है यह हमारे नैतिक मूल्यों का अभाव ही है। हमने ऐसा मान लिया कि जो भी प्राचीन है वो

समग्र परम्परा पोषक है और संस्कृति के लिए कोई विशेष कार्य नहीं किया है। संस्कृति को बचाएं रखना हमारा प्रथम उद्देश्य है जो हम आने वाली पीढ़ी को स्वच्छन्द रूप से दे सकते हैं हमारी संस्कृति हमारी धरोहर है जिससे हमारी पहचान बनी हुई है। हमारी निष्ठा ही प्रथम मूल्य है जो हमें देश की संस्कृति से जोड़ती है।

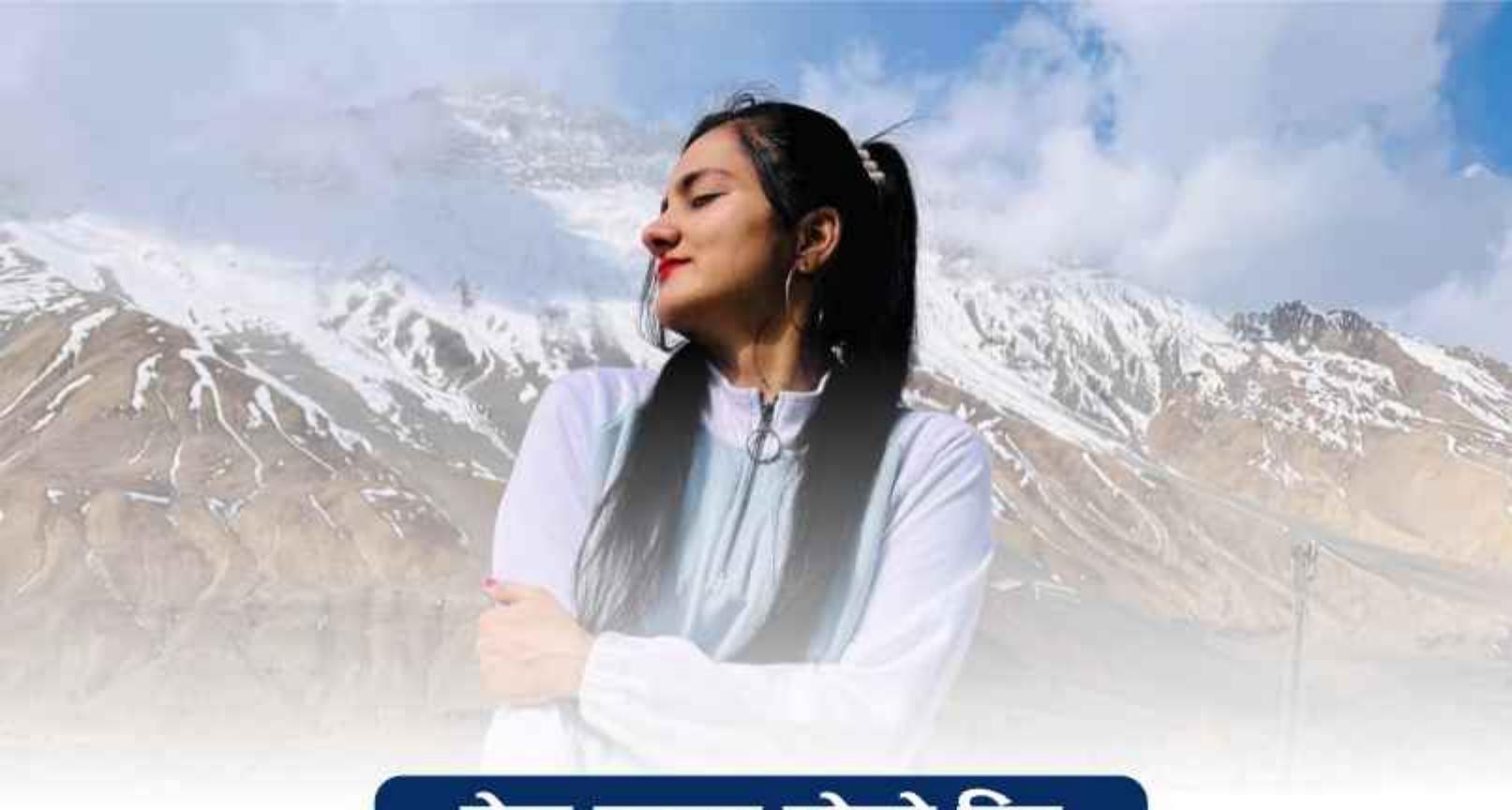
ऐसे क्या है जो हमें अपने ही मूल्यों से अलग करता है इसीलिए एक बार पुनः मूल्यों को अपनाने की जरूरत है जो की वर्तमान परिषेक्ष्य में अनिवार्य है जिसका माध्यम प्रेम बन सकता है क्योंकि प्रेम में इतनी शक्ति है कि वो बन्धनों को जोड़ सकता है रहीम ने लिखा है: "प्रेम पंथ ऐसो कठिन सब कोऊ निभत नाहिं" और वह विफल होकर भी अमर हो जाता है जिस प्रकार हीर-राङ्गा, लैला-मजनू, सलीम अनारकली मिल नहीं पाएं फिर भी उनका प्रेम सफल माना जाता है एक बार फिर उन्हीं मूल्यों के साथ आगे बढ़ना अवश्य है।

पारिवारिक सम्बन्धों में विश्वास की कमी होना बहुत बड़े संकट की ओर संकेत करता है जिससे परिवार का ढांचा बिखर रहा है और ऐसे में मूल्यों की आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है। मनू भंडारी द्वारा रचित "आपका बंटी" नामक उपन्यास रिश्तों में आई खाई के मध्य झुझते रहते बाल मनोवैज्ञानिक पर आधारित कहानी है और अराजकता भी निरंतर फैलती है। इस संदर्भ में पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में मूल्य चेतना की आवश्यकता बहुत ज़रूरी है। यह ज्यादा आदर्शवादी लग रहा है किन्तु आज के परिषेक्ष्य में नैतिकता की अल्पत ज़रूरत है। यदि अपनी पैत्रिक धरातल पर फिर से लौटना है तो आदर्श, नैतिकता, स्नेह, प्रेम का विस्तार, सदाचार का पालन करना आज की अनिवार्य ज़रूरत है।

भारत में संबंधों की संवेदना समाप्त होने की कगार पर है लेकिन उसे बचाया जा सकता है क्योंकि जिस मानवतावाद की हमने कल्पना की थी वह इसी का पर्याय है। अन्य देशों के लिए भारत पारिवारिक मूल्य की दृढ़ता का प्रतीक है जहां पर आत्मीयता और भावनाओं को केंद्र में रखा जाता है।

- श्रुति सिन्हा, हिंदी अनुवादक
ipc-shruti@gmail.com

एनएचपीसी
पार्वती जलविद्युत परियोजना चरण- ॥, नगवाई,
जिला -मंडी, हिमाचल प्रदेश



मेरा पहला सोलो ट्रिप

मुझे धूमना बहुत पसंद है और इस बार मैंने कुछ अलग करने का फैसला लिया – सोलो ट्रिप। मैं इस यात्रा पर अकेली नहीं थी, मैंने एक ग्रुप ज्वाइन किया था। इस यात्रा की शुरूवात हुई पहाड़ों की रानी शिमला से, जो अपनी खूबसूरत पहाड़ियों और अंग्रेजी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। शिमला तक की यात्रा तो मैंने पहले भी की है – लेकिन शिमला से आगे मैं पहली बार गई।

शिमला की ठंडी हवा और खूबसूरत वादियों ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। यहाँ पर मैंने अपने ग्रुप से मुलाकात की, जो अलग-अलग हिस्सों से आए उत्साही यात्रियों का समूह था।

हम सभी का लक्ष्य एक ही था – स्पीति घाटी की अद्वितीय सुंदरता को करीब से देखना और महसूस करना। शिमला से हमारी यात्रा की शुरूआत हुई और पहला पड़ाव था रामपुर। पहाड़ी गास्तों से होकर गुजरते हुए हम रामपुर पहुँचे। यहाँ की हरियाली और हिमालय की ऊँचाईयाँ हमारे सफर को और भी खूबसूरत बना रही थीं।

रामपुर में एक रात बिताने के बाद हम चितकूल की ओर बढ़े, जो भारत का आखिरी गाँव माना जाता है। चितकूल पहुँचकर हम सभी इसकी सुंदरता में खो गए। गाँव के चारों ओर

बर्फ से ढके पहाड़ और बास्पा नदी का बहाव, मानो किसी स्वर्गिक दृश्य की अनुभूति करा रहा था। रात को हमने बोनफायर किया, गाने गाए और एक-दूसरे के साथ अनुभव साझा किए। उस रात के तारों भरे आसमान के नीचे, हमने एक अनोखी शांति महसूस की।

अगली सुबह हम काल्पा की ओर खाना हुए। काल्पा, अपने सेब के बगीचों और किनर कैलाश के शानदार दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पहुँचकर हमने किनर कैलाश की झलक देखी, जो एक अद्भुत अनुभव था। हमने काल्पा के स्थानीय बाजारों का दौरा किया और वहाँ के पारंपरिक हिमाचली व्यंजनों का आनंद लिया। काल्पा से हमने ताबो के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में हमने खूबसूरत नाको झील और खाब संगम का भी दौरा किया।

खाब संगम, जहाँ सतलुज और स्पीति नदियाँ मिलती हैं, एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है। ताबो पहुँचते ही हमने ताबो मठ का दौरा किया, जो अपनी प्राचीनता और सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। मठ के शांतिपूर्ण वातावरण ने हमें आत्मिक शांति दी।

ताबो से काजा की यात्रा ने हमें स्पीति घाटी के दिल

तक पहुँचा दिया। काजा में हम तीन दिन रुके और यहाँ की प्रमुख जगहों का दौरा किया। काजा में हमारे पहले दिन, हमने मठ का दौरा किया, जो एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है और यहाँ से पूरे स्पीति घाटी का नजाग देखा जा सकता है। मठ की प्राचीनता और भिक्षुओं की साधना ने हमें बहुत प्रभावित किया।

दूसरे दिन, हमने धंकर मठ का दौरा किया। धंकर मठ मेरी पसंदीदा जगहों में से एक बन गया। यह मठ एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है और यहाँ से स्पीति नदी का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। उस दिन अचानक बर्फबारी होने लगी, जिसने इस मठ को और भी जादुई बना दिया। बर्फ के गिरते फाहे और मठ के शांतिपूर्ण वातावरण ने मेरे दिल को छू लिया।

हमारी यात्रा का सबसे खूबसूरत हिस्सा था चंद्रताल झील। यह झील अपने नीले पानी और चारों ओर के पर्वतों से घिरी हुई थी। हम सभी ने झील के किनारे कैंपिंग की और ताजगी भरी हवा में सांस लेते हुए, जीवन के हर पल को जिया। सूरज की किरणों से झील का पानी चमक उठता था, मानो किसी ने नीला रत्न बिखेर दिया हो।

स्पीति की इस रोमांचक यात्रा का समापन मनाली में हुआ। काजा से मनाली का सफर भी अपने आप में अनोखा था। हम सभी मनाली पहुँचकर एक बार फिर से हिमालय की खूबसूरती में खो गए। यहाँ पर हमने एक अंतिम गुप्त डिनर का आयोजन किया, जहाँ हमने अपनी यात्रा के अनुभवों को साझा किया और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की।

इस यात्रा के दौरान, हमने काफी सारे फोटोग्राफ्स लिए और वीडियो भी बनाई, ताकि इस अद्भुत सफर की यादें हमेशा हमारे साथ रहें। प्रकृति के अद्भुत नजारे देखने का यह अनुभव वास्तव में अविस्मरणीय था। इस यात्रा ने मुझे आत्म-निरीक्षण करने का अवसर दिया।

मैंने महसूस किया कि यात्रा सिर्फ स्थानों को देखने का नाम नहीं है, बल्कि यह एक आत्मिक यात्रा भी है। यहाँ के हर स्थान ने मुझे कुछ नया सिखाया और मेरे जीवन में नई ऊर्जा भरी। स्पीति की शांतिपूर्ण वादियों में मैंने आत्म-शांति और संतुलन को महसूस किया।

स्पीति की यह यात्रा मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय

अध्याय बन गई है। इसने मुझे न केवल नई जगहों की सुंदरता दिखायी, बल्कि नए मित्र भी दिए। अब मैं और भी उत्सुक हूँ, अपने अगले सोलो ट्रिप के लिए। यह यात्रा मेरे लिए एक प्रेरणा बन गई है और मैं भविष्य में और भी ऐसे अनगिनत सफर पर निकलने के लिए तैयार हूँ। स्पीति की यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि यात्रा के दौरान मिले अनुभव और सीखें जीवनभर हमारे साथ रहती हैं। यह सोलो ट्रिप मेरे जीवन की सबसे अद्भुत यात्राओं में से एक बन गई है और अब मुझे अगली यात्रा का बेसब्री से इंतजार है।

-मिनी कौर
एसोसिएट, भाप्रौ.सं, कंटेलिस्ट



मैं कौन हूँ

जब भी कुछ लिखना चाहूँ एक उत्सुकता के साथ किसी भी विषय पर, लिखना शुरू करते ही मन में आ जाते हैं ये सवाल, कि मैं क्या लिखूँ, मैं क्या कर रहा हूँ, क्या मिलेगा मुझे लिखके और सबसे विशेष प्रश्न कि मैं कौन हूँ?

इसमें पिछले सवालों के लिए कोई न कोई जस्टीफिकेशन में ढूँढ़ लेता हूँ या समझ जाता हूँ कि ये हैं बस मन का खेल, काम टालने के बहाने हैं ये परन्तु इस सवाल पे आके मैं प्रोती हो जाता हूँ। मैं कौन हूँ? फिर इसमें उभरते हैं सवाल जैसे मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ। मैं यहाँ क्या करने आया हूँ। मैं यहाँ हूँ ही क्यों? ये सिलसिला सवालों का बढ़ता ही जाता है उत्तर खुद से पूछा कि वो मिला नहीं। तो निकल पड़ा था मैं इसकी खोज में जानने की इच्छा से कि मैं कौन हूँ? आखिर ये उत्तर मिलता कैसे है?

एक बच्चे के प्रश्नों का उत्तर उसके माँ-बाप देते हैं जोकि अनुभव और अभ्यास से जानते हैं कि बच्चा जानना क्या चाह रहा है। ये अनुभव व अभ्यास जिस व्यक्ति के पास हमें मिलता है हम उसके पास जाते हैं, उम्मीद से कि हमें उत्तर मिलेगा। उत्तर मिलने से प्रश्न खत्म नहीं होते नोटिस कीजिएगा,

उत्तर मिलने से मिलती है संतुष्टि। एक भार अपनी चेतना पर होता है, उस प्रश्न का उत्तर मिलते ही वो भार हल्का हो जाता है। ध्यान रखिए भार खत्म नहीं होता, बस कम हो जाता है थोड़े समय के लिए। समय बीतते ही कब वो भार बढ़ जाता है अन्य प्रश्नों के साथ, इसका ज्ञात तो मुझे भी नहीं रहता है। काफी प्रश्न आते हैं, जिनमें से कुछ गुम हो जाते हैं इस अनंत विचारों के सागर में, इनमें से कुछ रह जाते हैं अनचाहे जो कन्फ्यूजन, पीड़ा व अनचाहा कुछ ऐसा ही प्रश्न है ये सवाल कि मैं कौन हूँ? मेरी इस अलगाव के साथ दोस्ती बड़ी पुरानी और पक्की है। हाँ मैंने इस सिलसिले को दे दिया है दोस्ती का नाम। ये एक अनोखा दोस्त है। इस दोस्त को मैंने पुकारा और इसको जानना चाहा, खूब तोड़-फोड़ की मैंने इस दोस्त के साथ, डाँय, पूछा प्यार से, और क्या न किया। चाहा कि ये भाग जाए वो चला गया और मेरे विचारों के अनंत सागर में वापस जहाँ से वह आया था, फिर वापिस उसे मैं ही ले आया। अब इतना समय हमने साथ बिता दिया है कि अब मैं इसे अपना मित्र मानता हूँ। न ये मेरा साथ छोड़ता है, न मैं इसे छोड़ पाता हूँ।

इस सवाल के भार से एक अलग सा लगाव हो गया है। अब ये भार-भार नहीं लगता। और ये मत सोचिए कि ये मेरा मित्र मेरी मदद नहीं करता। मित्रता की नींव ही सेवा है। और ये मित्र मेरी भी खूब सेवा करता है। जब भी मैं भटक जाता हूँ, इन इन्द्रियों की माया में डूबने/संलग्न होने लगता हूँ तो मेरा दोस्त, मेरा मित्र मेरी मदद करने आ जाता है वापस मुझे होश में लाने के लिए बस इकलौता यही दोस्त आता है। चाहे जितना भी वजन क्यों न हो जाए, मुझे इसका साथ पसन्द है। पर अन्ततः मैं इस जीवन में आया हूँ अकेला और निःसन्देह जाड़ेगा भी अकेला। इस मित्र को मैं साथ न ले जा पाऊंगा। उसकी पीठ पीछे मैं फिर लग जाता हूँ इस तलाश में कि मैं हूँ कौन? काफी खोज इस 21 साल के जीवन में करने के बाद अभी इस सवाल से विदा न ले पाया। ये मित्रता है या भ्रम? ये जानने के लिए हमें रुकना पड़ेगा अगले आर्टिकल तक। जो आयेगा या नहीं न मुझे पता है न आपको।

-प्रेरक शर्मा

छात्र, भा.प्रौ.सं. मण्डी



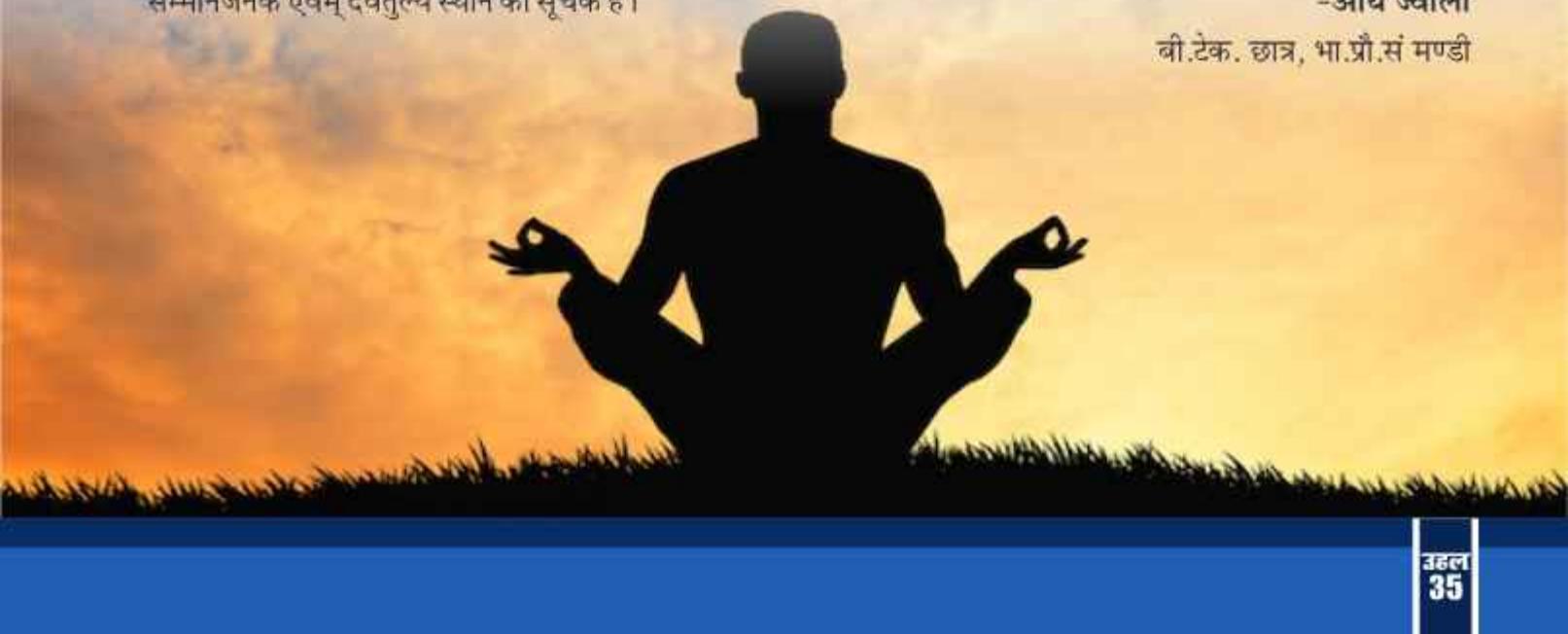
मेरी भाषा ही मैं हूँ

हम इस जग में आकर जो पहला अथवा सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त करते हैं वो होती है हमारी भाषा, भाषा को भी हम हर आम सुविधा की तरह अविश्लेषित छोड़ देते हैं परन्तु हमारे व्यक्तित्व को प्रगाढ़ करने एवम् दिशा देने में हमारी भाषा का महत्व अपेक्षा से अधिक होता है। भाषा किसी समाज का सबसे सटीक प्रतिबिम्ब होता है, हम किसी भी समय समाज द्वारा बोली जा रही भाषा से उसके उस समाज के सामाजिक अथवा नैतिक ढाँचे का सर्वानुकूल अनुमान लगा सकते हैं। यह कथन प्रथम विचार में तनिक सकुचाता अवश्य है परन्तु इसका सत्यापन अति सख्त है, उदाहरण के लिए यदि हम हिंदी में प्रयोग किए जाने वाले कुछ प्रचलित मुहावरों को केन्द्रित करें तो अत्यंत सखलतापूर्वक हम भाषा के समाज का प्रतिबिम्ब होने का सन्तोषजनक सत्यापन कर सकते हैं। जैसे यदि आप हिंदी के मुहावरों को छान मारना शुरू करें तो आपको भैंस, बन्दर या बकरे आदि पर मुहावरे मिल जाएंगे। परन्तु आप गाय के ऊपर कोई व्याख्यात्मक मुहावरा नहीं खोज पाएंगे, यह तथ्य साक्ष्य है कि हिंदी बहूल उत्तर भारत के समाज में गाय का एक महत्वपूर्ण स्थान है अथवा गाय एक पूजनीय प्राणी है। भाषा हमारे सामाजिक मूल्यों का स्तर भी दिखा देती है, जैसे कि हिंदी में अभिवादन करने हेतु 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग होता है जिसका अर्थ है - "मैं आपको नमन करता हूँ।" यह अर्थ हमारे समाज में परस्पर सम्मान के सिद्धान्त को प्रदर्शित करता है। अध्यापक के लिए 'गुरुदेव' जैसा शब्द हमारे समाज में गुरु के सम्मानजनक एवम् देवतुल्य स्थान का सूचक है।

उपरोक्त उदाहरणों से हम भाषा के समाज का प्रतिबिम्ब होने का संतोषजनक प्रमाण पाते हैं साथ ही यह कथन भी सत्यापित होता है कि हमारे द्वारा किया जा रहा शब्दों का चयन बहुत हद तक संयोग न होकर हमारी सामाजिक परिस्थिति एवम् हमारे नैतिक स्तर का प्रमाण है। अब मैं यदि आपसे यह कहूँ कि मात्र आपकी भाषा बदलने से आप अपने समाज एवम् संस्कृति को खो सकते हैं तो शायद आप अधिक अर्चभित नहीं होंगे।

चलिए, आज की स्थिति पर प्रकाश डालते हैं, आजकल 'नमस्ते' को गुडमॉर्निंग या 'हाय' से बदल दिया गया है, गुरुदेव का स्थान 'टीचर', 'फैकल्टी' या 'प्रोफैसर' जैसे शब्दों ने ले लिया है। आज का हिंदी समाज हिंदी में गिनती बोल तक नहीं सकता, हमें हिंदी पचांग के महीनों का नाम नहीं पता। यहाँ तक कि अपने त्यौहारों का नाम जानने के लिए भी हम इंटरनेट की शरण में जा बैठते हैं। यह सभी चिंताएं कितनी घातक हैं। इसका अनुमान शायद हम अभी लगा नहीं पाएंगे। परन्तु अधिक से अधिक पचास वर्षों में यह सभी परिवर्तन हमारे समाज को एक अनचाही एवम् अनुचित दिशा में धकेल देगा। मैं किसी और भाषा को सीखने के विरोध में नहीं हूँ परन्तु इस प्रकार अपनी भाषा का प्रयोग न्यूनतम कर अपनी ही संस्कृति की हत्या करना सर्वथा मुख्यतापूर्ण है। अंत में मेरा आप पाठकों से यह अनुरोध है कि हिंदी का प्रयोग अथवा पाठन प्रारम्भ करें तथा इस संस्कृति का अंत होने से बचाएं।

-आर्य ज्वाला
बी.टेक. छात्र, भा.प्रौ.सं मण्डि



ईशू का क्रेच में सफर

रोजाना भोर की पहली किरणें अक्सर हमारे घर को एक नए दिन की मधुर गुनगुनाहट से भर देती हैं, जिसमें कोमल हँसी, जिज्ञासु बढ़बढ़ाहट और मनमोहक आवाज के साथ हमें पुकारती हमारी बिटिया आन्या, जिसे हम प्यार से ईशू कहते हैं। उसका नाम, उसकी तरह ही, हमारे जीवन में गेशनी लाता है। वषों के इंतजार, प्रार्थना और उम्मीद के बाद, ईशू वह खुशी है, जिसका हमने सपना देखा था। हमारे परिवार के लिए ईशू को बढ़ते हुए देखना आश्चर्य से भग एक सफर है। उसकी मासूमियत, जिस पवित्रता के साथ वह दुनिया को देखती है,

वह जीवन की सादगी
और सुंदरता की याद
दिलाती है। वह हर



दिन बड़ी उत्सुकता के साथ देखती है, चाहे वह किसी नए खिलौने के साथ खेलना हो, रंगीन तितली को उड़ाते देखने का आकर्षण हो या अपना पसंदीदा गाना सुनने की खुशी हो। ईशू की हँसी हमारे दिलों का संगीत है, उसके नन्हे हाथ दुनिया को तलाशने के लिए आगे बढ़ते हैं।

हाल ही में, ईशू ने क्रेच में जाकर शिक्षा की ओर अपना पहला कदम उठाया है। इस नए अध्याय ने, रोमांचक होने के साथ-साथ, हमारे अंदर मिली-जुली भावनाएँ भी दी हैं। हमारे घर की सुरक्षित सीमाओं से परे एक दुनिया में कदम रखने वाली हमारी नन्ही परी के बारे में सोचना गर्व की अनुभूति देता है। लेकिन, बहुत से सवाल मन को धेरे रहते हैं, जैसे क्या वह क्रेच में अच्छी तरह से एडजस्ट कर पाएगी? लेकिन हम जानते हैं कि यह उसके विकास के लिए एक जरूरी कदम है, आजादी की ओर उसका पहला कदम।

क्रेच एक ऐसी है, जहाँ ईशू की मासूम दुनिया का विस्तार होना शुरू हुआ है। यहाँ पर वह चीजों को साझा करना, दूसरे बच्चों के साथ बातचीत करना, ऐसी कहानियाँ सुनना सीखती है, जो उसके नन्हे दिमाग के लिए नई दुनिया का विस्तार है। क्रेच से लौटने के पहले दिन, उसकी आँखें उत्साह से चमक उठीं, क्योंकि वह हमें अपने नए दोस्तों और उनके द्वारा खेले जाने वाले खेलों के बारे में अपने तरीके से बताने की कोशिश कर रही थी। उसकी शब्दावली बढ़ रही है, उसके आस-पास की दुनिया के बारे में उसकी समझ धीरे-धीरे बढ़ रही है। इन छोटे-छोटे, गेजमर्ग के पलों में ही हम उसके बचपन के जादू को देख पाते हैं। ईशू की शिक्षा सिर्फ अक्षरों और संख्याओं के बारे में नहीं है यह उन मूल्यों के बारे में है जो वह सीख रही है, वह खुशी जो उसे सबसे सरल चीजों में मिलती है। वह एक स्पंज की तरह है, जो अपने आस-पास की हर

चीज को उस उत्सुकता के साथ सोख लेती है, जो सिफं एक बच्चे में ही हो सकती है। जब वह क्रेच में सीखी गई कोई कविता सुनाती है या किसी तस्वीर की ओर इशारा करके उसका सही नाम बताती है, तो हमारा हृदय गर्व से भर जाता है। उसकी प्रगति, भले ही चीजों की बड़ी योजना में छोटी हो, लेकिन हमें बहुत बड़ी लगती है।

फिर भी, इतनी सारी सीख और विकास के बीच, जो चीज स्थिर रहती है, वह है ईशु की मासूमियत। यह उस तरह से है जिस तरह से वह अभी भी हमें सांत्वना देने के लिए हाथ बढ़ाती है, जिस तरह से वह लंबे दिन के बाद हमें देखकर खुश हो जाती है, जिस तरह से वह आश्वस्त होने के लिए अपने



पसंदीदा खिलौने को थामें रहती है। दुनिया धीरे-धीरे उसके सामने खुल रही है, लेकिन उसका शुद्ध हृदय उसकी सबसे कीमती संपत्ति है। माता-पिता के रूप में, ईशु के साथ हमारी यात्रा निरंतर सीखने की भी रही है। हम इस नई दुनिया में आगे बढ़ने की उसकी क्षमता पर भरोसा करना और उसे रोके बिना उसका साथ देना सीख रहे हैं। ईशु के साथ हर दिन हमें याद दिलाता है कि बचपन कितना नाजुक और क्षणभंगुर होता है। हम उसकी हर हँसी, हर आँसू, हर नए शब्द को संजोते हैं, यह जानते हुए कि ये पल जल्द ही यादें बन जाएंगे।

श्री सुनील चौहान
कनिष्ठ अधीक्षक,
अधिष्ठाता अवसरंचना एवं सेवाएं कार्यालय

पंचकर्म: एक आयुर्वेदिक उपचार

पंचकर्म उपचार क्या है?

यदि आप बीमारियों से पीड़ित हैं, बार-बार संक्रमण हो रहा है, अत्यधिक थकान का अनुभव कर रहे हैं, या सुस्ती और उदासी महसूस कर रहे हैं, तो आपको शरीर की व्यापक



सफाई के बाद कायाकल्प की आवश्यकता है। आयुर्वेद के अनुसार, अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए शरीर की प्रमुख ऊर्जा वात, पित्त और कफ को अच्छी तरह से संतुलित किया जाना चाहिए। यदि इनमें से एक या अधिक ऊर्जाएँ असंतुलित हो जाती हैं, तो इसका स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। इससे शरीर में अवाञ्छित अपशिष्ट या विषाक्त पदार्थों का निर्माण हो सकता है। शरीर में ऐसे विषाक्त पदार्थों की उपस्थिति सामान्य शारीरिक कार्यों में बाधा डालती है जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न बीमारियाँ होती हैं।

शरीर में चयापचय विषाक्त पदार्थों के असामान्य स्तर की उपस्थिति से शरीर के ऊर्जा चैनल अवरुद्ध हो सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो सकती है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि समय-समय पर शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकाला जाए ताकि शरीर साफ और तरंगताजा रहे। इससे सर्वोत्तम स्वास्थ्य सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है। आयुर्वेद में पंचकर्म उपचार शरीर को डिटॉक्स करने और कायाकल्प में मदद करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है।

आयुर्वेद में पंचकर्म क्या है?

कई लोग आश्चर्यचित हो सकते हैं कि पंचकर्म क्या है या पंचकर्म उपचार क्या है। पंचकर्म एक आयुर्वेदिक

चिकित्सा है जिसमें पंच (पांच) कर्म शामिल हैं जो स्वास्थ्य को बहाल करने के उद्देश्य से संचित विषाक्त पदार्थों के शरीर को साफ करने में मदद करते हैं। आपका चिकित्सक, जो आपके विभिन्न शारीरिक और मानसिक मापदंडों का मूल्यांकन करता है, आपके लिए सही सफाई प्रक्रिया चुनने के लिए सबसे अच्छा न्यायाधीश होगा। विभिन्न मार्गों से विषाक्त पदार्थों को शुद्ध करके सफाई की जाती है।

पंचकर्म कैसे मदद करता है?

शरीर पर विभिन्न सकारात्मक प्रभावों के बीच, पंचकर्म चिकित्सा पाचन एंजाइमों, या जटराग्नि को फिर से जागृत करने में मदद करती है। इष्टतम पाचन और अवशोषण ओजस के उत्पादन में सुधार करने में मदद करता है जो शरीर को जीवन शक्ति प्रदान करता है। जो दोष असंतुलित हैं उन्हें प्राकृतिक तरीके से बहाल किया जाएगा। यह अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा तरीका बताया गया है। आयुर्वेद का मानना है कि पंचकर्म शरीर और मन दोनों को शुद्ध करता है। रोग पैदा करने वाले कारकों को हटा दिया जाता है, जिससे कल्याण की स्थिति सुनिश्चित होती है।

पंचकर्म चिकित्सा की उत्पत्ति क्या है?

विषाक्त पदार्थों के शरीर को साफ करने के उद्देश्य से पंचकर्म चिकित्सा या आयुर्वेदिक उपचार प्रक्रिया नई नहीं है। यह आयुर्वेदिक उपचार दर्शन का एक हिस्सा है जिसकी उत्पत्ति लगभग 5,000 साल पहले हुई थी। जिन ऋषियों ने आयुर्वेदिक सिद्धांतों को विकसित किया और ग्रंथ लिखे, उन्होंने अपने ग्रंथों में इस उपचार प्रक्रिया का उल्लेख किया है।



भगवान धन्वंतरि की छवि, जिन्हे आयुर्वेद का जनक माना जाता है, को स्थानीय अशुद्ध रक्त को हटाने के लिए रक्तपात प्रक्रिया के लिए अपने हाथ में जोंक पकड़े हुए दिखाया गया है। 3,000 साल से भी पहले लिखी गई चरक संहिता पंचकर्म की अवधारणा को संदर्भित करती है। तब से, यह प्रणाली वर्षों से विकसित हुई है और कुछ बीमारियों को प्रभावी ढंग से हल करने में मदद के लिए आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके रक्तपात जैसी प्रक्रियाओं का अभी भी अभ्यास किया जा रहा है।

5 पंचकर्म चरण क्या हैं?

एक बार तैयारी प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद, शरीर अब विषाक्त पदार्थों के नियंत्रित उन्मूलन के लिए तैयार है। आपके लिए आदर्श पंचकर्म प्रक्रियाएं आपके चिकित्सक द्वारा निर्धारित की जाती हैं और उनकी निगरानी में सावधानीपूर्वक की जाती हैं। प्रक्रिया को व्यक्ति की स्थिति के अनुसार सावधानीपूर्वक अनुकूलित किया जाता है।



वमन : इस प्रक्रिया में कफ को संतुलित करने में मदद करने के लिए प्रेरित उल्टी शामिल है और श्वसन संबंधी बीमारियों और त्वचा रोगों में इसका संकेत दिया जाता है।

विरेचन : पित्त अधिक होने पर पाचन संबंधी समस्याएं पैदा करता है। निर्धारित रेचक पेट में एकत्रित विषाक्त पदार्थों को शुद्ध करने में मदद करता है ताकि पित्त का संतुलन बहाल हो सके।

वस्ति : इस प्रक्रिया में वात को संतुलित करने में मदद के लिए एनो-रेक्टल मार्ग के माध्यम से निर्धारित तेलों और काढ़े के संयोजन का प्रशासन शामिल है।

नस्य : नाक के छिद्र के माध्यम से की जाने वाली यह प्रक्रिया

साइनस को कम करने और कपाल नसों की असामान्यताओं को ठीक करने में मदद करती है।

रक्तमोक्षण : यह पारंपरिक विधि शरीर से अशुद्ध रक्त को निकालने के लिए जोंक या निष्फल तेज उपकरणों का उपयोग करती है।

पंचकर्म के क्या लाभ हैं?

- ❖ पंचकर्म उपचार एक आयुर्वेदिक चिकित्सा है जो शरीर और दिमाग से विषाक्त पदार्थों और अशुद्धियों को दूर करने में मदद करती है।
- ❖ यह प्रक्रिया दोषों के संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है और इस प्रकार अच्छे स्वास्थ्य की स्थिति को बहाल करती है।
- ❖ यह गैस्ट्रो-आंत्र पथ, तंत्रिका तंत्र, कार्डियो-संवहनी, श्वसन, प्रजनन, अंतःस्नानी, लसीका प्रणाली के कार्यों को अनुकूलित करने में मदद करता है।
- ❖ यह प्रतिरक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने में मदद करता है और शरीर को संक्रमणों का विरोध करने में सक्षम बनाता है।
- ❖ यह शरीर और दिमाग को आगम सुनिश्चित करने में मदद करता है। यह तनाव दूर करने में मदद करता है।
- ❖ यह शरीर को फिर से जीवंत करता है और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने में मदद कर सकता है।



भा.प्रौ.सं.मण्डी में विभिन्न पंचकर्म चिकित्साएं

- | | |
|----------------------|--------------------|
| ❖ नेत्र तर्पणम् | ❖ नस्य |
| ❖ ग्रीवा वस्ति | ❖ कटि वस्ति |
| ❖ जानु वस्ति | ❖ शिरोधारा |
| ❖ फुट रिफ्लेक्सोलॉजी | ❖ स्नेहन और स्वेदन |
- डॉ. मिलन बहल
आयुर्वेद चिकित्सक, भा.प्रौ.सं.मण्डी

वृक्षारोपण अभियान की कहानी

पहाड़ियों के बीच बसे एक छोटे से शहर का समुदाय उज्ज्वल बसंत की सुबह एक महान् उद्देश्य के लिए एकत्र हुआ। वह शहर के पार्क में एकत्र हुआ, फावड़े, पानी के डिब्बे और सभी प्रकार के पौधे लेकर आया जैसे-फूल वृक्ष, फल वृक्ष, औषधीय वृक्ष, सुगंधित वृक्ष, और भी बहुत कुछ। हवा में उत्साह था, क्योंकि बच्चे इधर-उधर दौड़ रहे थे, बयस्क गड्ढे खोद रहे थे और बुजुर्ग मार्गदर्शन दे रहे थे। शहर के मेयर ने भविष्य की पीढ़ियों के लिए पेड़ों के महत्व के बारे में एक उत्साहपूर्ण भाषण दिया और सभी ने गर्व के साथ तालियाँ बजाईं, क्योंकि उन्होंने आने वाले वर्षों में पार्क को ऊँचे पेड़ों से भर दिया।

- ❖ रोपण दिवस एक शानदार सफलता थी। इसके अंत तक, दर्जनों युवा पेड़ मिट्टी में मजबूती से जड़े जमा चुके थे, उनकी नाजुक पत्तियाँ हल्की हवा में हिल रही थीं। शहर के लोगों ने तस्वीरें लीं, एक-दूसरे की पौठ थपथपाई और हर साल यह देखने के लिए वापस आने का वादा किया कि पेड़ कैसे बढ़े होंगे।
- ❖ लेकिन जैसे-जैसे दिन हफ्तों में और हफ्ते महीनों में बदल गए, उत्साह कम होने लगा और फीका पड़ गया। शहरवासी अपने जीवन में व्यस्त हो गए- काम, स्कूल, परिवार और अन्य जिम्मेदारियाँ प्राथमिकता बन गईं। एक बार जीवंत सामुदायिक प्रयास धीरे-धीरे किनारे पर चले गए। पार्क, जो कभी गतिविधि से गुलजार रहता था, अब खामोश हो गया।
- ❖ हालांकि, पौधों को उपेक्षा की विलासिता नहीं मिली। नियमित पानी और देखभाल के बिना कई जीवित रहने के लिए संघर्ष करते रहे। गर्मियों की धूप कठोर थी और पर्याप्त पानी के बिना युवा पेड़ मुख्झा गए। कुछ कमजोर पौधे भूरे और भंगुर हो गए, उनके हरे पत्ते बेजान होकर जमीन पर गिर गए।
- ❖ कभी-कभी, कोई राहगीर संघर्षरत पेड़ों को देखता, शायद एक पल के लिए रूक जाता और फिर अपने रास्ते पर आगे बढ़ जाता। यह सोचकर कि कोई और उनकी देखभाल करेगा। लेकिन किसी ने ऐसा नहीं किया। पार्क,

जो इतनी उम्मीद और वादे से भरा था, अब भूली हुई जिम्मेदारी की याद दिलाता है।

- ❖ मौसम बदल गए और गर्मियों में बचने वाले कुछ पौधे अब सर्दियों की ठंडी हवाओं से जूझ रहे थे। उनकी वृद्धि रूक गई थी और वे उदास खड़े थे, जो उस खुशी भरे दिन पर शहरवासियों के सपने के बिल्कुल विपरीत था।
- ❖ साल बीत गए और पार्क में खरपतवार उग आए। समुदाय ने उन पेड़ों को भूला दिया जो उसने लगाए थे, लेकिन प्रकृति ने नहीं। कुछ पौधे, हालांकि कम थे, टिके रहे। उनकी जड़ें गहरी हो गई थीं, पानी के छिपे हुए स्रोतों को खोंज लिया था और वे बाधाओं के बावजूद मजबूत हो गए थे। ये बचे हुए पौधे, हालांकि जख्मी थे, लेकिन लचीलेपन के प्रमाण के रूप में खड़े थे।
- ❖ एक दिन, एक छोटा लड़का, जो मूल रोपण के दिन वहाँ था, पार्क में वापस आया। अब एक आदमी अपराध बोध की पीड़ा महसूस करते हुए उपेक्षित पेड़ों के बीच चला गया। उसे किए गए वादे और उस दिन की खुशी याद आ गई। उसने सुधार करने के लिए दृढ़ संकल्पित खरपतवारों को साफ करना, शेष पेड़ों को पानी देना और उन्हें वह देखभाल देना शुरू कर दिया जो इतने लंबे समय से नकार दी थी।
- ❖ शहर के अन्य लोग, उसके प्रयासों को देखकर उसके साथ जुड़ने लगे। धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, पार्क का रूपांतरण शुरू हो गया। एक बार उपेक्षित रहे पेड़ नए सिरे से देखभाल और ध्यान के तहत पनपने लगे। समुदाय ने महसूस किया कि पेड़ लगाना पर्याप्त नहीं था। उनका पालन-पोषण करना भी उतना ही महत्वपूर्ण था और इसीलिए, पार्क एक जीवंत अनुस्मारक बन गया, कि कार्य चाहे कितने भी अच्छे इरादे से किए गए हों, प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी की आवश्यकता होती है। पेड़ जो कभी भूले हुए वार्दों का प्रतीक थे, अब ऊँचे खड़े हैं, जो दृढ़ता और देखभाल की शक्ति का प्रमाण है।

-श्री मुना कुमार
कनिष्ठ अभियंता बागवानी

दूँघरी मेला मनाली

14 मई के दिन मनाली का दूँघरी मेला शुरू होता है, जो लगातार तीन दिन चलता है और ये हर साल मनाया जाता है। यह मेला जंगल के बीच में स्थित दूँघरी स्थान में देवी हिंडिंबा के प्रांगण में मनाया जाता है। यहाँ देवी हिंडिंबा का पैगोड़ा शैली में बना तीन मंजिला मंदिर है। जिसे उस समय के राजा बहादुर सिंह द्वारा 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बनाया गया था।

माना जाता है कि 14 मई का दिन देवी हिंडिंबा का जन्मदिवस है जो जिला कुल्लू की आराध्य देवी हैं। इस उपलक्ष्य पर ये मेला धूम-धाम से मनाया जाता है और आस-पास के गाँव से देवी-देवता दूँघरी आते हैं और मेले में शिरकत करते हैं। यह मेला लगभग 5-6 गाँव के लोग मिलकर मनाते हैं। यहाँ के मेलों की खास बात यहाँ के लोगों की एक दूसरे की मेहमान नवाजी है। मेले के दौरान कोई भी मेहमान या किसी देवता के साथ आये लोग जिन्हें देउल भी कहते हैं कि किसी भी घर में या अपने रिश्तेदारों के यहाँ जाते हैं। देवताओं के साथ आये लोगों का तो खास ख़्याल रखा जाता है। मेलों का यहाँ के लोगों के बीच की बंधुता को बनाये रखने में बहुत बड़ा योगदान रहा है, कुछ विद्वानों के अनुसार माना भी जाता है कि मेले की शुरूआत का एक प्रमुख कारण लोगों के बीच के बैमनस्य को ख़त्म करने के लिये हुआ है।

पहले दिन दो ही देवता दूँघरी मेले में आते हैं – एक देवी हिंडिंबा और दूसरा उनका पुत्र घटेत्कच्छ। इस दिन शाम को महिलाओं द्वारा एक नृत्य किया जाता है जिसे 'लालड़ी' कहते हैं। इसमें सिर्फ महिलाएँ, लड़कियाँ ही भाग ले सकती हैं। यह नृत्य काफी देर चलता है और अंत में देवी हिंडिंबा नृत्य की माला को तोड़कर इसे विश्राम देती हैं। यह नृत्य लगातार शाम के समय तीन दिन तक चलता रहता है और महिलाएँ पुराने गीत गाती हैं और नाचती हैं। यह एक तरह की नाटी होती है, जिसमें एक के पीछे पंक्ति लगाकर उसके नृत्य की नकल की जाती है। ये आगम से चलने वाली नाटी है, जिसे मन को मोह देने वाले पुराने गीत, पाटू (लोकल महिलाओं द्वारा पहने जाना वाला वस्त्र) में सजधजकर आयी मातायें, बहनें, मित्र, उनके पैरों और हाथों की मुद्रायें कितनी शानदार और जानदार होती हैं,

वे देखने वाले ही जानते हैं। इसमें लगभग रोज 100 से 150 स्त्रियाँ लालड़ी नाटी में भाग लेती हैं। दिन के समय में पुरुषों द्वारा कुल्लूवी नाटी का नृत्य होता है, जिसमें देवी हिंडिंबा के रथ को भी नचाया जाता है। ये नाटी भी तीनों दिन की जाती है और इसमें कोई भी पुरुष, महिला भाग ले सकते हैं व नाटी की माला के मध्य भी नाच सकते हैं। इस नाटी में ढोल वादक से लेकर, शहनाई वादक सभी उपस्थित होते हैं पर लालड़ी में कोई वाद्य यंत्र नहीं होते।

देवी हिंडिंबा के पुजारी से बात करते हुए पता लगा कि भनारा गाँव के देवता मंदिर के साथ लगते हुए मुख्य गस्ते से देवी के मैदान तक नहीं जाते। बल्कि उनका अपना एक रास्ता है जो मंदिर के बाएँ और नीचे की तरफ से पेड़ों के बीच से होते हुए निकलता है। पुजारी बता रहे थे कि एक वर्ष उनके पैर में मोच आयी हुई थी और भनारा के देवता जब पहुँचे तो उन्हें मुख्य गस्ते से ले जाया जा रहा था पर देवता आगे नहीं बढ़ रहे थे और देवता ने देवी के पुजारी को अपने रथ में लिया और उनको अपने पुराने गस्ते की ओर ले गए। यहाँ गेट पर ताला था, ताले को तोड़कर देवता अपने गस्ते से चल दिये। तब से इस बात का ध्यान रखा जाता है कि जब भी भनारू नाग आये तो उनका गस्ता खुला रहे। ये गस्ता मंदिर के बाएँ जंगल के बीच से होकर जाता है। दूँघरी मेले में करीब 17 से 20 देवता होते हैं और देवी हिंडिंबा। कहते हैं कि भाड़के की देवी कभी-कभी पधारती है। पर वह मंदिर के पास न आकर नीचे जंगल में अपना विश्राम करती है। माना जाता है कि देवी के मंदिर के पास आने से उनके द्वारा लायी गई बुरी शक्तियाँ यहाँ छोड़ जाती हैं और अशुभ घटना होने की संभावना रहती है। इसके साथ इस मेले में बहुत सी व्यापारिक दुकानें भी लगी रहती हैं और लोगों को काफी सस्ते दाम पर चीजें मिलती हैं और बच्चों के मनोरंजन के लिए भी काफी सामान व क्रियात्मक चीजें रहती हैं। यहाँ के लोगों के लिए यह एक तरह का छोटा दशहरा ही है।

– श्री पवन ठाकुर
अनुसंधान सहयोगी
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल
भा.प्रौ.सं. मण्डी

हमारे साहित्य का ध्येय

-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

आज हमारे साहित्य को देश तथा साहित्यिकों के समाज में वह महत्व प्राप्त नहीं, जो उसे राजनीति के बायुमंडल में रहने चाले में, जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप से प्राप्त है। इसलिए हमारे देश के अधिकांश प्रांतीय साहित्यिक राजनीति से प्रभावित हो रहे हैं। यह सच है कि इस समय देश की दशा के सुधार के लिए कार्यकारी सच्ची राष्ट्र-नीति की अल्पत आवश्यकता है, पर वह भी सच है कि देश में नवीन संस्कृति के लिए व्यापक साहित्यिक ज्ञान भी उसी हद तक जरूरी है। उपाय के विवेचन में वही युक्ति है, जो राजनीतिक कार्यक्रम को क्रियात्मक रूप देती है। एक साहित्यिक जब राजनीति को साहित्य से अधिक महत्व देता है, तब वह साहित्य की ग्राथार्थ मर्यादा अपनी एकदशीय भावना के कारण घटा देता है, जो उन्नति और स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए शरीर के तमाम अंगों की पुष्टि की तरह समभाव से आवश्यक है।

राजनीति में उन्नति-क्रम के जो विचार गणित के अनुसार प्रत्येक दशा की गणना कर संपत्तिवाद के कायदे से कल्पना द्वारा देश का परिष्कृत रूप खोंचते हुए चलते हैं, वही साहित्य में प्रत्येक व्यक्ति के इच्छित विकास को निर्बंध कर उनको बहुमुखी उच्चाभिलाषाओं को पूर्णता तक ले चलते हुए समर्पित पूर्णता या ब्राह्म स्वातंत्र्य मिला करते हैं।

अधिकांश सम्मान्य नेताओं की उक्ति है, पहले गम्य, फिर सुधार, व्यवस्थाएँ, शिक्षा आदि। मनुष्य जब अपनी ही सत्ता पर जोर देकर संसार की विगड़ी हुई दशा के सुधार के लिए कमर कस लेता है, तब वह प्राथरू सोऽहम् बन जाता है, प्रकृति के विरोधी गुणों, दुनिया की अड़चनों तथा मनुष्यों की स्वभाव-प्रियता को एक ही छलांग से पार कर जाता है। समर्पित के मन को यंत्र तुल्य समझकर अपनी इच्छानुसार उसका संचालन करता है। इसी जगह एक सच्चे नेता से एक सच्चे साहित्यिक का मतभेद है। साहित्यिक मनुष्य की प्रकृति को ही श्रेय देता है। उसके विचार से हर मनुष्य जब अपने ही प्रिय मार्ग से चलकर अपनी स्वाभाविक वृत्ति को कला-शिक्षा के भीतर से अधिक मार्जित कर लेगा, और इस तरह देश में अधिकाधिक प्रतिकार पैदा होंगे, तब सामूहिक उन्नति के साथ-ही-साथ काम्य स्वतंत्रता आप-ही-आप प्राप्त होगी, जैसे युवकों को प्रेम की भावना आप ही आप प्राप्त होती है, यौवन की एक परिणति की तरह।

संपत्ति-शास्त्र और गणित-शास्त्र कभी ईश्वर की परवा नहीं करते। उनके आधार पर चलने वाले नेता भी अदेख शक्ति या अज्ञात रहस्यों पर विश्वास करना अपने को पंगु बनाना समझते हैं, और उनके लिए यह स्वाभाविक है भी, जब संपत्ति और गणित के साथ देश की मिट्टी में उन्हें जड़-ही-जड़ मिलता है, और उनकी स्वतंत्रता भी बहुत कुछ जड़ स्वतंत्रता है। साहित्यिक के प्रधान साधन हैं सत् चित् और आनंद। उसका लक्ष्य है अस्ति, भावि और प्रिय पर उसकी स्वतंत्रता इनकी स्फूर्ति से व्यक्ति के साथ समर्पित के भीतर से आप निकलती है।

साहित्य के व्यापक अंगों में राजनीति भी उसका एक अंग है। अतएव राजनीति की पुष्टि भी वह चाहता है। पर जो लोग राजनीतिक क्षेत्र से यह प्रचार करते हैं कि पहले अधिकार तब सुधार, उनके इस गुरु प्रभाव से वह दबना नहीं चाहता, कारण, यह व्यक्तिमुख की उक्ति उसकी दृष्टि में 'पहले मुर्गी, फिर अंडा या पहले अंडा तब मुर्गी' प्रश्न की तरह रहस्यमयी

तथा जटिल है। वह केवल बहिर्जगत् को अंतर्जगत् के साथ मिलाता है। उदाहरण के लिए भारत का ही बाहरी संसार लिया जाए। साहित्यिक के कथन के अनुसार भारतीयों की भीतरी भावनाओं का ही बाहर यह विवादग्रस्त भयंकर रूप है। जिस बिगाड़ का अंकुर भीतर हो, उसका बाहरी सुधार बाहरी ही है, गंदगी पर इत्र का छिड़काव। इस तरह विवाद व्याधि के प्रशमन की आशा नहीं। दूसरे जो गंगा भीतर है, जड़ प्राप्ति द्वारा, रूपये-पैसे या जर्मों से उसका निरुकरण हो भी नहीं सकता। मानसिक रोग मानसिक सुधार से ही हट सकता है। साहित्य की व्यापक महत्व यहीं सिद्ध होती है।

जीवन के साथ राजनीति का नहीं, साहित्य का संबंध है। संस्कृति जीवन-कुम्हार की बनाई मिट्टी है, जिससे इच्छानुसार हर तरह के उपयोगी बर्तन गढ़े जा सकते हैं, जिसकी प्राप्ति के लिए हम प्रायः एक दूसरे तरीका अद्यत्यार कर बैठते हैं, वह, साहित्य के भीतर से अद्यवसाय के साथ काम करने पर, अपनी परिणति आप प्राप्त करेगा।

इस समय देश में जितने प्रकार की विभिन्न भावनाएँ हिंदू मुसलमान, ईसाई आदि-आदि की जातीय रेखाओं से चक्कर काटती हुईं गंगासागर, मक्षा और जरूसलेम की तरफ चलती रहती हैं, जिनसे कभी एकता का सूत्र टूटता है, कभी ऊंचे शत्रुता बन जाती है। उनके इन दुष्कृतियों का सुधार भी साहित्य में है, और उसी पर अमल करना हमारे इस समय के साहित्य के लिये नवीन कार्य, नई स्फूर्ति भरने वाला, नया जीवन पूँक्से वाला है। साहित्य में बहिर्जगत्-संबंधी इतनी बड़ी भावना भरनी चाहिए, जिसके प्रसार में केवल मवक्का और जरूसलेम ही नहीं, किंतु संपूर्ण पृथ्वी आ जाए। यदि हद गंगासागर तक रही, तो कुछ जन-समूह में मवक्के का खिंचाव जरूर होगा, या बुद्धदेव की तरह वेद भगवान् के विरोधी घर ही में पैदा होंगे। पर मन से यदि ये जड़-संयोग ही गायब कर दिए जा सकें, तो तमाम दुनिया के तीर्थ होने में संदेह भी न रह जाए। यह भावना साहित्य की सब शाखाओं, सब अंगों के लिए हो और वैसे ही साहित्य की सुष्टि।

यह साहित्यिक रंग यहीं का है। काल-क्रम से अब हम लोग उस रंग से खींचे हुए चित्रों से इतने प्रभावित हैं कि उस रंग की याद ही नहीं, न उस रंग के चित्र से अलग होने की कल्पना कर सकते हैं, और इसलिए पूर्ण मौलिक बन भी नहीं पाते, न उससे समयानुकूल ऐसे चित्र खींच सकते हैं, जो समर्पित मन की शुद्धि के कारण हों।

राजनीति में जाति-पौति-रहित एक व्यापक विचार का ही फल है कि एक ही वक्त तमाम देश के भिन्न-भिन्न वर्गों के लोग समस्वर से बोलने और एक राह से गुजारे लगते हैं। उनमें जितने अंशों में व्यक्तिगत रूप से सीमित विचार रहते हैं, उनमें ही अंशों में वे एक दूसरे से अलग हैं, इसलिए कमज़ोर। साहित्य यह काम और खूबी से कर सकता है, जब वह किसी भी सीमित भावना पर उहरा न हो। जब हर व्यक्ति हर व्यक्ति को अपनी अविभाजित भावना से देखेगा, तब विरोध में खंड-क्रिया होगी ही नहीं। यही आधुनिक साहित्य का ध्येय है। इसके फल की कल्पना सहज है।

स्रोत :

पुस्तक : कुछ चुनी हुई साहित्यिक पुस्तकें (पृष्ठ 158)

रचनाकार : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

प्रकाशन : गंगा फाइन आर्ट प्रेस

संस्करण : 1934

ल्हासा की ओर

-राहुल सांकृत्यायन

चोटः प्रस्तुत पाठ एजसीईआरटी की कक्षा नौवीं के पाठ्यक्रम में शामिल है।

वह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य गस्ता है। फरी-कलिइयोड का गस्ता जब नहीं खुला था, तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीजें इसी गस्ते तिब्बत जाया करती थीं। यह व्यापारिक ही नहीं सैनिक गस्ता भी था, इसीलिए जगह-जगह फौजी चौकियाँ और किले बने हुए हैं, जिनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं। ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी किला था। हम वहाँ चाय पीने के लिए रहे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पांति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें पर्दा ही करती हैं। बहुत निम्न श्रेणी के भिखरियों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते। नहीं तो आप बिल्कुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिल्कुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं। वह आपके लिए उसे पका देगी। मक्खन और सोडा-नमक दे दीजिए, वह चाय चोड़ी में कूटकर उसे दूधवाली चाय के रंग की बना के मिट्टी के टोटीदार ब्रतन (खोटी) में रखके आपको दे देगी। यदि बैठक की जगह चूल्हे से दूर है और आपको डर है कि साग मक्खन आपकी चाय में नहीं पड़ेगा, तो आप खुद जाकर चोड़ी में चाय मथकर ला सकते हैं। चाय का रंग तैयार हो जाने पर फिर नमक-मक्खन डालने की जरूरत होती है।

परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे, तो एक आदमी गहदारी माँगने आया। हमने वह दोनों चिट्ठे उसे दे दीं। शायद उसी दिन हम थोड़ा के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। वहाँ भी सुमति के जान-पहचान के आदमी थे और भिखरियों गहते भी उहरने के लिए अच्छी जगह मिली। पाँच साल बाद हम इसी गस्ते लौटे थे और भिखरियों नहीं, एक भद्र यात्री के वेश में घोड़ों पर सवार होकर आए थे। किंतु उस वक्त

किसी ने हमें रहने के लिए जगह नहीं दी, और हम गाँव के एक सबसे गरीब झोपड़े में रहे थे। बहुत कुछ लोगों की उस वक्त की मनोवृत्ति पर ही निर्भर है, खासकर शाम के वक्त छड़पीकर बहुत कम होश-हवास को दुरुस्त रखते हैं।

अब हमें सबसे विकट ढाँड़ा थोड़ा पार करना था। ढाँड़े तिब्बत में सबसे खतरे की जगह हैं। सोलह-सत्रह हजार फीट की ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ मीलों तक कोई गाँव-गिराँव नहीं होते। नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता। डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है। तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए, तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया-विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। डकैत पहिले आदमी को मार डालते हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं। हथियार का कानून न रहने के कारण यहाँ लाठी की तरह लोग पिस्तौल, बंदूक लिए फिरते हैं। डाकू यदि जान से न मारे तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है। गाँव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोड़ा के पास खून हो गया। शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते, क्योंकि हम भिखरियों थे और जहाँ-कहाँ वैसी सूख देखते, योंपी उतार जीभ निकाल, कुची-कुची (दया-दया) एक पैसा कहते भी खामोश रहते। लेकिन पहाड़ की ऊँची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते? और अगला पड़ाव 16-17 मील से कम नहीं था। मैंने सुमति से कहा कि यहाँ से लड़कों तक के लिए दो घोड़े करलो, सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

दूसरे दिन हम घोड़ों पर सवार होकर ऊपर की ओर चले। ढाँड़े से पहिले एक जगह चाय पी और दुपहर के वक्त ढाँड़े के ऊपर जा पहुँचे। हम समुद्रतल से 17-18 हजार फीट ऊँचे खड़े थे। हमारी दक्षिण तरफ पूरब से पच्छिम की ओर

हिमालय के हजारों श्वेत शिखर चले गए थे। भीटे की ओर दीखने वाले पहाड़ बिल्कुल नंगे थे, न वहाँ बर्फ की सफेदी थी, न किसी तरह की हरियाली। उत्तर की तरफ बहुत कम बर्फबाली चोटियाँ दिखाई पड़ती थीं। सर्वोच्च स्थान पर डाँड़े के देवता का स्थान था, जो पत्थरों के ढेर, जानवरों की सींगों और रंग-बिरंगे कपड़े की झाँड़ियों से सजाया गया था। अब हमें बगबर उत्तराई पर चलना था। चढ़ाई तो कुछ दूर थोड़ी मुश्किल थी, लेकिन उत्तराई बिल्कुल नहीं। शायद दो-एक और सवार साथी हमारे साथ चल रहे थे। मेरा घोड़ा कुछ धीमे चलने लगा। मैंने समझा कि चढ़ाई की थकावट के कारण ऐसा कर रहा है, और उसे मारना नहीं चाहता था। धीरे-धीरे वह बहुत पिछड़ गया और मैं दोन्किवक्स्टों की तरह अपने घोड़े पर झूमता हुआ चला जा रहा था। जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे। जब मैं जोर देने लगता, तो वह और सुस्त पड़ जाता। एक जगह दो रास्ते फूट रहे थे, मैं बाएँ का रास्ता ले मील-डेढ़ मील चला गया। आगे एक घर में पूछने से पता लगा कि लड़कोर का रास्ता दाहिने वाला था। फिर लौटकर उसी को पकड़ा। चार-पाँच बजे के करीब मैं गाँव से मील-भर पर था, तो सुमति इंतजार करते हुए मिले। मंगोलों का मुँह वैसे ही लाल होता है और अब तो वह पूरे गुस्से में थे। उन्होंने कहा—मैंने दो टोकरी कंडे फूँ डाले, तीन-तीन बार चाय को गर्म किया। मैंने बहुत नर्मी से जवाब दिया—लेकिन मेरा कसूर नहीं है मित्र! देख नहीं रहे हो, कैसा घोड़ा मुझे मिला है! मैं तो रात तक पहुँचने की उम्मीद रखता था। खैर, सुमति को जितनी जल्दी गुस्सा आता था, उतनी ही जल्दी वह ठंडा भी हो जाता था। लड़कोर में वह एक अच्छी जगह पर ठहरे थे। यहाँ भी उनके अच्छे यजमान थे। पहिले चाय-सत्रू खाया गया, रात को गर्मागर्म थुक्पा मिला।

अब हम तिड़ी के विशाल मैदान में थे, जो पहाड़ों से घिरा टापू-सा मालूम होता था, जिसमें दूर एक छोटी-सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखाई पड़ती है। उसी पहाड़ी का नाम है तिड़ी-समाधि-गिर। आसपास के गाँव में भी सुमति के कितने ही यजमान थे, कपड़े की पतली-पतली चिरी बत्तियों के गंडे खत्म नहीं हो सकते थे, क्योंकि बोधगया से लाए कपड़े के खत्म हो जाने पर किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे। वह अपने यजमानों के पास जाना चाहते थे। मैंने सोचा, यह तो

हफ्ता-भर उधर ही लगा देंगे। मैंने उनसे कहा कि जिस गाँव में उहरना हो, उसमें भले ही गंडे बाँट दो, मगर आसपास के गाँवों में मत जाओ। इसके लिए मैं तुम्हें ल्हासा पहुँचकर रूपए दे दूँगा। सुमति ने स्वीकार किया। दूसरे दिन हमने भरिया ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन कोई न मिला। सबेरे ही चल दिए होते तो अच्छा था, लेकिन अब 10-11 बजे की तेज धूप में चलना पड़ रहा था। तिब्बत की धूप को ढाँक लें, तो गर्मी खत्म हो जाती है। आप 2 बजे सूरज की ओर मुँह करके चल रहे हैं, ललाट धूप से जल रहा है और पीछे का कंधा बर्फ हो रहा है। फिर हमने पीठ पर अपनी-अपनी चीजें लादी, डंडा हाथ में लिया और चल पड़े। यद्यपि सुमति के परिचित तिड़ी में भी थे, लेकिन वह एक और यजमान से मिलना चाहते थे, इसलिए आदमी मिलने का बहाना कर शेकर विहार की ओर चलने के लिए कहा। तिब्बत की जमीन बहुत अधिक छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन जागीरों का बहुत ज्यादा हिस्सा मठों (विहारों) के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में हरेक जागीरदार कुछ खेती खुद भी करता है, जिसके लिए मजदूर बेगार में मिल जाते हैं। खेती का इंतजाम देखने के लिए वहाँ कोई भिक्षु भेजा जाता है, जो जागीर के आदमियों के लिए राजा से कम नहीं होता। शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु (नम्से) बड़े भद्र पुरुष थे। वह बहुत प्रेम से मिले, हालाँकि उस बक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था। यहाँ एक अच्छा मंदिर था। जिसमें कंजुर (बुद्धवचन-अनुबाद) की हस्तलिखित 103 पोचियाँ रखी हुई थीं, मेरा आसन भी वहीं लगा। वह बड़े मोटे कागज पर अच्छे अक्षरों में लिखी हुई थीं, एक-एक पोथी 15-15 सेर से कम नहीं रही होगी। सुमति ने फिर आसपास अपने यजमानों के पास जाने के बारे में पूछा, मैं अब पुस्तकों के भीतर था, इसलिए मैंने उन्हें जाने के लिए कह दिया। दूसरे दिन वह गए। मैंने समझा था 2-3 दिन लगेंगे, लेकिन वह उसी दिन दुपहर बाद चले आए। तिड़ी गाँव वहाँ से बहुत दूर नहीं था। हमने अपना-अपना सामान पीठ पर उठाया और भिक्षु नम्से से विदाई लेकर चल पड़े।

स्रोत : पुस्तक : क्षितिज भाग-1 (पृष्ठ 25)

रचनाकार : राहुल सांकृत्यायन

प्रकाशन : एन.सी.ई.आर.टी

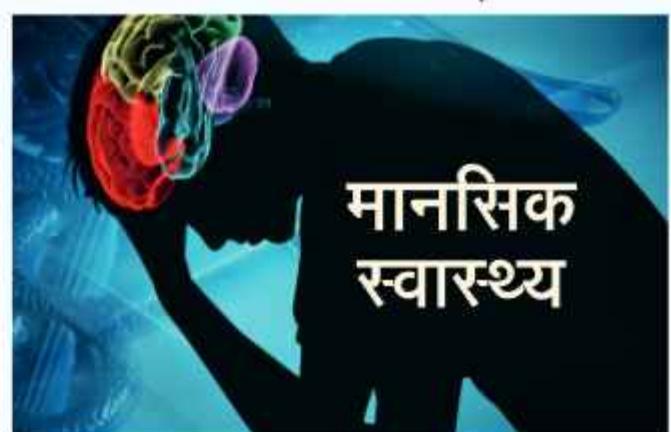
संस्करण : 2022

चुनौती बनती मानसिक बीमारियाँ

- मानसिक बीमारी? जो हाँ यह शब्द सन् 2000 के बाद ही प्रचलित हुआ है। मानसिक बीमारी है क्या? किसी भी तरह का विचार, जो अनियंत्रित हो वह मानसिक रोग या बीमारी में शुभार किया जाएगा।
- कई सारे शोध पत्रों में यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित और लिखा गया है कि अनियंत्रित विचार, मस्तिष्क में स्थिरता न होने के कारण उत्पन्न होते हैं। आज तकनीक के युग में, हर व्यक्ति पर समय व्यस्त है। आज अधिकतर लोगों का अधिकांश समय टीवी, मोबाइल, लैपटॉप के साथ ही गुजरता है। यह भी कई वैज्ञानिकों द्वारा साबित किया गया है, कि जैसा व्यक्ति अपने आस-पास देखता सुनता है, वैसा ही विचार करता है। जिस तरह की सूचनाएँ वह एकत्रित करता है, वैसे ही उसकी विचार श्रृंखला बनती है। इन विचारों का अवचंतन मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अगर नकारात्मक सूचनाएँ या खबर ज्यादा सुनी जाएं तो व्यक्ति में निराशा उत्पन्न होगी। कई धर्म गुरुओं का भी यही कथन है कि जैसा बीज आप दिमाग में रोपेंगे, वैसा ही वृक्ष बनेगा।
- आज हम 21वीं शताब्दी में तकनीक के उच्चतम स्तर पर हैं। अगर पहले से तुलना की जाए तो तकनीक, विज्ञान की मदद से जीवन और जीवनशैली आसान हुई
- है। मगर आज तकनीक के विकास के साथ कई सारे प्रचलन और बढ़ गये हैं, जिनकी मानसिक शांति भंग करने में बहुत बड़ी भूमिका है।
- उदाहरण के लिए इंस्ट्राग्राम (Instagram), फेसबुक (facebook) जैसे ऐप से लोग पैसा तो बहुत कमा रहे हैं, पर कहीं न कहीं बहुत अकेले हो गए हैं।
- एक शायर ने क्या खूब लिखा है—
 “जनाजे में जिसके सारा शहर शामिल था
 सुना है वो शख्स, तनहाईयों से परा”

इन ऐप पर आपके जानने वालों की संख्या हजारों, लाखों में हो सकती है, पर ऐसे लोगों की संख्या बहुत ही कम होगी, जो भावनाओं को समझ सकें, या जिनसे आप अपने हृदय की बात साझा कर सकें। यही कारण है कि समस्त सुख-सुविधाएँ होने के बावजूद भी व्यक्ति प्रसन्न नहीं है, और अवसाद, निराशा जैसी मानसिक बीमारियों का शिकार बनता जा रहा है। इसी बजह से लोगों में नशे की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। नशे की लत में पड़कर लोग जीवन जैसी बहुमूल्य सौगात को व्यर्थ कर रहे हैं। किसी कवि ने क्या खूब कहा है:

“हे नाथ!
 अब तो ऐसी कृपा हो,
 जीवन निरर्थक जाने न पाए”



एक बड़े प्रसिद्ध धर्म गुरु ने इसका बड़ा सटीक उदाहरण दिया था, उनसे एक पत्रकार ने पूछा कि गाँव और शहरों में, सबसे बड़ा अन्तर आपकी दृष्टि में क्या है, उन्होंने जवाब दिया कि अगर प्रभु शहर में किसी व्यक्ति के सामने प्रकट हो जाएं और कहें कि वर मांगो तो अधिकतर लोग गाड़ी, पैसा, शोहरत मांगेंगे, लेकिन यही अगर प्रभु किसी गाँव के व्यक्ति से पूछे कि वर मांगो तो ग्रामीण व्यक्ति हाथ जोड़कर 'मोक्ष' मांगेगा।

- जो व्यक्ति अभी तकनीक की अंधी होड़ से बच गए हैं, या अपने संतुलित जीवन से खुश हैं, उन्हें शांति का असल अर्थ पता है।
- ग्रामीण जीवन और ग्रामीण परिवारों में आज भी शांति, सुकून जैसे शब्दों के असली मायने पता हैं।
- पहले हमने देखा है कि संयुक्त परिवार हुआ करते थे, तब हर सदस्य एक-दूसरे से बात करता था, सुख-दुःख का साथी हुआ करता था। हमारे तुम्हारे की जगह परिवार के बच्चे हुआ करते थे। उस सुखद जीवन में निराशा, अवसाद, मानसिक बीमारी जैसे शब्द नहीं हुआ करते थे। परिवार से टूटना भी कई सारी समस्याओं की जड़ है।
- मानसिक बीमारियों के बढ़ने का एक मूल कारण,

जीवनशैली से व्यायाम, ध्यान, योग का लुप्त हो जाना भी है।

- महर्षि पंतजलि ने योगसूत्र दिए, जिसकी मदद से ज्ञान, ध्यान, स्थिरता की परकार्षा को प्राप्त किया जा सकता है।
- आज आधुनिक और सफल समाज शांति की खोज में जाने क्या-क्या नए तरीकों में ऊर्जा, पैसा गंवा रहा है, जो शांति पहले बड़े सरल तरीके से उपलब्ध थी।
- अब समय है कि विकास की तरफ प्रयास करते हुए भी हमें प्राचीन तरीकों सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, ध्यान को अपने जीवन का मूलभूत अंग बनाए, जिससे सफलता के साथ जीवन में शांति भी आए।

अंत में मनुव्वर गणा साहब का एक शेर-

**"बुलन्दी देर तक किस शख्स के हिस्से में रहती है,
बहुत ऊँची इमारत पर घड़ी खतरे में रहती है ॥"**

-अनुराग गवत
कनिष्ठ सहायक
भा.प्रौ.सं. मण्डी



ऑनलाइन शिक्षा और चुनौतियाँ

प्रस्तावना:-

ऑनलाइन शिक्षा तथा शिक्षा के मध्य गहरा सम्बन्ध है। यह शिक्षा का ही एक नया विस्तृत रूप है। शिक्षा को विभिन्न रूप में अपनाया तथा बांटा जाता है। शिक्षा का अर्थ है एक बच्चे से लेकर एक परिवार तथा एक समाज का विकास करना। शिक्षा के कई रूप हैं जिसमें शिक्षा को उचित रूप से सही माध्यम से बच्चों, बड़े, बूढ़े तक पहुँचाया जाता है। आजकल शिक्षा को ग्रहण करने के लिए विभिन्न रूपों का जन्म हुआ है, जिसमें कम्प्यूटर के माध्यम से पाठशाला में जाकर, मोबाइल विधि के द्वारा अनेक रूपों का उपयोग किया जा रहा है। जिससे न केवल एक बच्चे का बल्कि एक परिवार का और समाज का विकास किया जा सके।

शिक्षा के प्रकार:-

शिक्षा को ग्रहण करने के लिए कई प्रकार के माध्यम को अपनाया जाता है शिक्षा लिखित तथा मौखिक रूप में अपनाई जाती है, लिखित रूप में शिक्षा को पाठशाला, कॉलेज, विश्वविद्यालय, ऑनलाइन इंटरनेट के माध्यम से अपनाया तथा ग्रहण किया जाता है, जबकि मौखिक रूप में शिक्षा को सुनकर मौखिक की विभिन्न विधियों जैसे मोबाइल फोन, टेलीविजन के विषय को सुनकर उच्चारण के द्वारा, या किसी सभा में बाद-बाद विषय पर चर्चा करके, नाटकों का आयोजन करके किसी विषय के बारे में जानकारी देना भी शिक्षा की मौखिक विधि कहलाती है।

शिक्षा

लिखित रूप

- ❖ पाठशाला/महाविद्यालय माध्यम
- ❖ ऑनलाइन मोबाइल विधि सभा आयोजन

मौखिक रूप

- ❖ ऑनलाइन विषय सुनकर
- ❖ प्रतियोगिता आयोजन
- ❖ रेडियो विधि

मौखिक शिक्षा

मौखिक शिक्षा वह प्रणाली है, जिसमें शिक्षक या

विद्या ग्रहण करने वाला व्यक्ति बोलकर, सुनकर अपनी शिक्षा जारी कर तथा ग्रहण कर सकता है। इस विधि को अपनाकर छात्र न केवल अपना समय बचा सकता है अपितु अपने शब्दों को अच्छे से व्यक्त भी कर सकता है, जिससे अपने ज्ञान में बढ़ौतरी तथा शिक्षा को उचित रूप से ग्रहण भी कर सकता है। इस विधि में कई प्रकार की नई तकनीकियों का भी जन्म होता है उदाहरण के लिए जो छात्र या बच्चा अपने शब्दों या अपने भाव को लिखकर नहीं बता सकता है वह अपने शब्दों को बोलकर स्पष्ट रूप से समझा भी सकता है। अभी इस प्रणाली का प्रयोग बहुत कम मात्रा में हमारे देश में किया जा रहा है। परन्तु इस विधि से बच्चों का नकल करना तथा बच्चों के भावों को समझने में भी आसानी हो जाती है तथा उनके फेल होने की मात्रा भी कम हो जाती है। यही एक कारण है कि मौखिक विधि का उपयोग एक प्रभावशाली माना जाता है। ऑनलाइन चैनल (यू ट्यूब) के माध्यम से बच्चे इस विधि को अपनाकर मौखिक रूप से सुनाकर अपने-अपने क्षेत्र में प्रगति कर रहे हैं न केवल प्रगति अपितु अपने लिए संसाधन तथा रोजगार भी प्राप्त कर रहे हैं।

लिखित शिक्षा

लिखित शिक्षा भी वह एक सुचारू प्रणाली है, जिसमें छात्र को शिक्षा ग्रहण करवाने के लिए लिखने की विधि का उपयोग करके शिक्षा ग्रहण करवाई जाती है। यह विधि अक्सर छोटे बच्चे जैसे कि 5 वर्ष से 12 वर्ष तक के बच्चों पर अधिक सफल मानी जाती है। क्योंकि इस अवस्था (बाल्यकाल) में बच्चे अपने शब्दों को व्यक्त करने में असमर्थ होते हैं तथा इस अवस्था में बच्चा ज्ञान/भाषा/लेखनी से भी अवगत होता है उसे पता चलता है कि वह किस प्रकार से अनुशासन में रहकर शिक्षा को ग्रहण करे। इस लिखित रूप में भी शिक्षा देने के कई माध्यम जिसमें पाठशाला/विश्वविद्यालय/कम्प्यूटर कार्यशाला/घर के माध्यम से जिसमें घरें में गुरुकुल खोल बच्चों को शिक्षा देना/ऑनलाइन पढ़ति का उपयोग करके न केवल अपनी लगूशन फ्रीस भी बच्चा सकता है, जिसमें गरीब असमर्थ बच्चों का मानदण्ड भी जाता है तथा नई-नई विभिन्न तकनीकी का भी

उपयोग कर लेता है।

ऑनलाइन शिक्षा

ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा का ही विस्तृत सा रूप तथा नई पद्धति है, जिसमें शिक्षा के पुराने माध्यम को पीछे रखकर नई प्रणाली को अपनाया जा रहा है। इस प्रणाली अथवा ऑनलाइन शिक्षा से छात्र न केवल अपना समय तथा खर्च आने-जाने का, गरीब परिवार के बच्चों को सही शिक्षा प्राप्त तथा साधन का मिलना भी अपने आप में विशाल अनुभव तथा प्राप्ति है। आजकल इस पद्धति के प्रयोग से बच्चा नये-नये विषय को पढ़ने में सरल से सरल भाव का उपयोग कर पाता है। बल्कि अपने भविष्य का भी सही गह खोजने में सफलता प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए अगर कोई छात्र पाठशाला में जाने के लिए असमर्थ है तो वह पाठशाला में शिक्षक को उसकी अनुमति से उसी शिक्षा को ऑनलाइन ग्रहण कर सकता है। इस प्रणाली से ही बच्चों का सर्वांगीण विकास अधिक से अधिक अवसर से अवगत हो रहा है।

लॉकडाउन तथा ऑनलाइन शिक्षा

लॉकडाउन एक बहुत ही विनाशकारी बिमारी का प्रभाव था या यह कह सकते हैं कि कोरोना ने लॉकडाउन शब्द को जन्म दिया। इस लॉकडाउन शब्द के कुछ अच्छे तथा बुरे प्रभाव से सभी अवगत हुए परन्तु इसी लॉकडाउन से बच्चों की शिक्षा पर बहुत अच्छा तथा बूरा प्रभाव भी पड़ा। बूरा भाव तथा प्रभाव यह कि बच्चों का पाठशाला जाना बन्द हो गया और अच्छा यह कि माता-पिता अपने बच्चे की शिक्षा पद्धति से उनके विचारों से अवगत हुआ, जिसमें अभिभावकों को उनकी शिक्षा पद्धति से ज्ञात करवाया तथा समझा गया कि किसी अभिभावक/माता-पिता का बच्चा किस विषय में अधिक गुणवान है। इसी से ज्ञान प्राप्त कर अभिभावकों ने खुद को भी तथा अपने बच्चों को इस प्रभावशाली शिक्षा पद्धति से अवगत किया तथा ज्ञान बांटने में और सही ज्ञान प्राप्त करने में सफलता हासिल की। इसी पद्धति को हम शिक्षा का नया रूप भी कह सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा प्रकार

- ❖ कम्प्यूटर के माध्यम से
- ❖ मोबाइल के माध्यम से
- ❖ टेलिविजन विधि द्वारा

❖ इंटरनेट प्रयोग विधि

ऑनलाइन शिक्षा का उद्देश्य

ऑनलाइन शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षित पीढ़ी का जन्म करना है, जिसमें भारत एक शिक्षा न केवल शहर तक बल्कि गांव-गांव तक हर एक घर में शिक्षा को सही तथा सुचारू रूप से पहुंचाना है इसका एक उद्देश्य यह भी है कि न केवल शिक्षा देना बल्कि छात्र/परिवार/समाज का मानसिक, शारीरिक, धार्मिक विकास करना है ताकि कम से कम रूपयों में अधिक से अधिक साधन तथा संसाधन तथा जॉब का छात्रों को अधिक से अधिक लाभ हो। वह न केवल शिक्षा साथ में अपने लिए रूपये कमाने जीवन जीने की विधि तथा सुचारू रूप से चलाने के ज्ञान से अवगत हो सके, ताकि कम से कम संसाधन से अधिक से अधिक शिक्षा का वितरण किया जा सके।

ऑनलाइन जॉब विश्वविद्यालय/जॉब कोर्स पाठशाला/कार्यशाला का आयोजन करके अधिक से अधिक ज्ञान को बांटा जा सके।

ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव

लाभकारी

हानिकारक

ऑनलाइन शिक्षा के कुछ लाभकारी तथा हानिकारक प्रभाव भी हैं, जिससे छात्रों को समय-समय पर अवगत करवाया जाना चाहिए।

अच्छे तथा लाभकारी प्रभाव :

1. अच्छे भाव तथा प्रभाव- इसमें बच्चा ऑनलाइन शिक्षा को कम तथा सस्ते दामों में प्राप्त करके वह अपनी शिक्षा को सुचारू रूप से चला सकता है।
2. लोगों को समाज को ऑनलाइन फ़िल्म तथा प्रतियोगिता/कार्यशाला का आयोजन करवा कर उन्हें रोजगार से अवगत करवाया जा सकता है। जिससे लघु उद्योग को अधिक से अधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।
3. गरीब परिवारों को ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से उन्हें दिनचर्या के तथा रोजमर्य के जिन्दगी से साफ सफाई में रहना/रोजगार दिलवाना, उनके बच्चों को पाठशाला जाने के महत्व से अवगत केवल ऑनलाइन कार्यशाला और अनेक विधियों से अवगत करवाया जा सकता है।
4. नई शिक्षा पद्धति से अवगत करवाना भी ऑनलाइन शिक्षा का एक माध्यम है। पुराने समय में बच्चा या छात्र

केवल एक या दो ही भाषा से अवगत होता था या होता ही नहीं था। परन्तु अभी छात्र ऑनलाइन माध्यम से जर्मन भाषा/ प्रॉफेशनल शब्द /भाषा /अंग्रेजी बोलने लिखने आदि कई भाषा से न केवल अवगत हैं बल्कि उसे सीखकर उसमें नये-नये कोर्स करके अपनी शिक्षा प्रणाली में सफलता प्राप्त की है।

हानिकारक प्रभाव

ऑनलाइन अपने आप में एक लाभकारी हानिकारक शब्द भी है। लाभकारी के साथ यह हानिकारक प्रभाव भी देता है। हानिकारक को यदि ध्यान में न रखें तो यह विनाश का कारण भी बन सकता है। यह निम्न प्रकार से है।

1. ऑनलाइन शिक्षा से हम अवगत तो हो गए, परन्तु इससे बच्चों का स्वास्थ्य, आँखों में जलन/मलत आदतों में पड़ना/खेल विधि में रहना/किसी कार्यक्रम में भाग न लेना/अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी बिमारी का जन्म हो रहा है।
- 2- ऑनलाइन शिक्षा/विधि से जुर्म/क्राइम/ठगी/काफी मात्रा में नये-नये तकनीकी का उपयोग कर इन जुर्मों को अपने पर उपयोग कर समाज को हानि पहुंचा रहा है। बच्चे जब पहले कुछ ही समाज की गतिविधियों से अवगत होते भी थे तथा नहीं भी। परन्तु अभी बच्चों को इंटरनेट/ऑनलाइन/विधि के द्वारा बम बनानाधनकल मारना/साइबर क्राइम गतिविधियों का पता चल चुका है।

जो विनाश के कारण भी बनते जा रही हैं।

ऑनलाइन शिक्षा तथा चुनौतियाँ

ऑनलाइन शिक्षा का जिस तरह प्रभाव तथा उसके प्रकार थे, उसी प्रकार उससे सुचारू रूप से चलाना अपने आप में चुनौती है क्योंकि अगर इस पद्धति का सही रूप से प्रयोग नहीं किया गया तो यह विनाशकारी प्रभाव दे सकती है। इसी को सही रूप से चलाना तथा लोगों को लाभ तथा हानि के प्रभाव से अवगत करना इसकी चुनौती में शामिल है, जिससे हम तक सभ्य समाज की स्थापना कर सकते हैं। सबसे बड़ी चुनौती गरीबी को खत्म करना ही ऑनलाइन शिक्षा का उद्देश्य रहेगा।

निष्कर्ष:

ऑनलाइन शिक्षा पद्धति एक प्रभावशाली पद्धति है, जिसमें सही तथा सुचारू रूप से शिक्षा को चलाया जा सकता है, जिसमें प्रभाव तथा चुनौतियाँ भी देखने को मिलती हैं, परन्तु इन सभी शब्दों को अगर सही से मात्रा में प्रयोग किया जाये तो ऑनलाइन शिक्षा एक सुदृढ़ रूप से सफलतापूर्वक प्रणाली बनाकर उसका उपयोग किया जा सकता है, ताकि एक शिक्षित समाज/परिवार की स्थापना की जा सके, न कि अशिक्षित। ऑनलाइन शिक्षा से सही तरीके से सफल भारत शिक्षित भारत को सफलता प्राप्त करवाई जा सकती है।

-श्रीमती सुरुचि
कनिष्ठ सहायक,
जैव विज्ञान एवम् जैव अभियांत्रिकी स्कूल



रोजगार का संकट

जैसा कि हम सभी भलि-भाँति जानते हैं कि रोजगार का संकट हमारे देश भारत में बहुत समय से प्रभावी रूप से चला आ रहा है और यह एक ऐसा मुद्दा रहा है, जिसकी चर्चा हमेशा युवाओं और राजनीतिक लोगों के बीच बनी रहती है।

हमारे देश भारत में रोजगार संकट का कोई एक कारण नहीं है। इसके लिए बहुत सारे कारण हैं।

हमारे देश में ज्यादातर युवा गाँव देहात में निवास करते हैं। मंग मतलब है देश की ज्यादातर जनसंख्या अभी भी गाँव देहात में निवास करती है। और अक्सर ऐसा देखा गया है कि गाँव के युवाओं का एक ही सपना होता है कि कैसे भी करके सरकारी नौकरी मिल जाये। इसके अलावा किसी दूसरी ओर उनका ध्यान जाता ही नहीं है। दूसरा कारण भारत की बढ़ती आबादी। हमारे दिमाग में ये बैठा हुआ है रोजगार का मतलब सिर्फ सरकारी नौकरी है, जो कि गलत अवधारणा है। रोजगार का संकट इतना हद तक बढ़ गया है कि लोग अपनी जान तक



देने में संकोच नहीं करते हैं। रोजगार एक ऐसा संकट बन गया है, जिसके कारण लोग मानसिक तनाव से गुजर रहे हैं। लोगों के पास अच्छी योग्यता है उच्च शिक्षा है, उसके बावजूद भी लोग रोजगार के लिए भटकते हुए दिखाई देते हैं।

हर बार जब भी नई सरकार आती है तो रोजगार के हजारों बादे तो करती है, लेकिन उस बादे को पूरा करने में नाकाम भी नजर आती है। यह सच है कि सरकार हर व्यक्ति को सरकारी नौकरी नहीं दे सकती, लेकिन युवाओं के विभिन्न प्रकार के कौशल को देखते हुए उनके लिए अन्य प्रकार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए विशेष प्रकार से जो युवा गाँव देहात में रहते हैं, उनके लिए ऐसी पहल की जाये कि छोटी-छोटी फैक्ट्रियों, कारखाने गाँव के नजदीक स्थापित किये जायें, जिससे उन्हें रोजगार के लिए शहरों और दूसरी जगह न भटकना पड़े।

देश की ज्यादातर आबादी कृषि पर निर्भर है तो हमारे देश की सरकार को आधुनिक तकनीक को देश के हर किसान तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए, जिसके कारण हमारे देश का किसान ज्यादा से ज्यादा आधुनिक संसाधनों का प्रयोग करते हुए ज्यादा से ज्यादा पैदावार कर पाये और जब देश का किसान खुशहाल होगा तो ये संकट सम्भवतः कम हो जाएगा।

देश के युवा जो गाँव में निवास करते हैं, उनके लिए सरकार को स्कूल डबल्पर्सेट पर काम करने की आवश्यकता है, जिसमें उन युवाओं के पास सरकारी नौकरी के अलावा अन्य

विकल्प भी उपलब्ध रहेगा। घरों में महिलाएँ अक्सर घर के कामों में उलझ कर रह जाती हैं और उन्हें भी सशक्त बनाने के लिए सरकार को कदम उठाने चाहिए।

आज के आधुनिक दौर में मशीनों का प्रयोग बहुत ज्यादा बढ़ गया है, इन्सानों की जगह मशीनें ले रही हैं। जिस कारण से रोजगार का संकट अत्यधिक बढ़ता जा रहा है। अभी हाल ही में 'चैट जीपीटी' नाम का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंट सिस्टम बहुत ज्यादा सुर्खियों में रहा है। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि ये सिस्टम करीब दो करोड़ पचास लाख लोगों के रोजगार छीन सकता है और ये बहुत बड़ी चिंता का विषय है। सरकार को इस तरह की समस्याओं से निकलने के लिए ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। हाल ही में सरकार ने मिशन मॉड भर्ती के तहत भर्ती के लिए 10 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने की पहल शुरू की है जो कि सरकार की तरफ से एक अच्छा कदम है। जिससे लोगों के अन्दर विश्वास पैदा हुआ है। लेकिन रोजगार का जो संकट अभी बना हुआ है, उसके लिए ये पर्याप्त नहीं है।

हमारे देश भारत में अभी भी बहुत सारी वस्तुएँ आयात होती हैं। सरकार को ऐसे संसाधन जुटाने की आवश्यकता है, जिससे चीजों का भारत में ही निर्माण हो और हम आयात कम और निर्यात ज्यादा करें। इस सब के लिए मैंक इण्डिया पहल

को और मजबूती के साथ लोगों के बीच ले जाना होगा। सरकार को वह हर सम्भव प्रयास करने की आवश्यकता है, जिसमें इस तरह की पहल लोगों के बीच ज्यादा से ज्यादा पहुंच सके। देश के युवाओं को जागरूक करने की आवश्यकता है कि उन्हें विभिन्न प्रकार के स्किल सीखने के लिए प्रेरित किया जाए, जो युवाओं के दिमाग में ये धारणा बनी हुई है कि सरकारी नौकरी ही एकमात्र रोजगार है तो उसे बदलने की आवश्यकता है और ये बदलेगा जब सरकार विभिन्न प्रकार की ट्रेनिंग/स्किल सेंटर गाँव देहात में स्थापित करे और युवाओं को नये-नये कौशल में निपुण बनाएं। जिससे युवाओं की सोच बदलेगी और उनके पास रोजगार के अन्य संसाधन भी उपलब्ध होंगे।

इस पटल में हमारे देश के उच्च शिक्षण संस्थान भी अहम भूमिका निभा सकते हैं। संस्थानों के आसपास में जो गाँव, कस्बे होते हैं वहाँ पर एक टीम भेजकर लोगों को नये-नये कौशल से अवगत कराया जा सकता है और उन्हें मैंक इण्डिया/स्किल डेवलपमेंट जैसी पहल से अवगत कराया जाये। शिक्षा के प्रति उन्हें जागरूक किया जाये, क्योंकि पढ़ेगा भारत तभी बढ़ेगा भारत।

-समीम खाँन

कनिष्ठ सहायक,
अधिष्ठाता संकाय कार्यालय



महिला सशक्तिकरण और समाज

भूमिका

हमारा देश भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है और यह हमेशा से पुरुष प्रधान रहा है। परन्तु महिला सशक्तिकरण एक ऐसा गाँव है, जिससे देश में समानता की लहर दौड़ सकती है। हालांकि न केवल भारत बल्कि विदेशों में भी महिला सशक्तिकरण प्रचलित है। महिला सशक्तिकरण से न केवल महिलाओं को आगे बढ़ने का मौका मिला, बल्कि वे अपना और अपने परिवार का भविष्य उज्ज्वल बना सकती हैं। महिलाएँ हमेशा से ही प्रभावशाली रही हैं और महिला सशक्तिकरण के ज़रिए उनके लिए अनेक गाँव खुल गए हैं। आज के जमाने में ऐसा कुछ भी नहीं जो वे महिला हासिल नहीं कर सकती। हालांकि जैसा कि हम जानते हैं हमारा समाज हमेशा से पुरुष प्रधान रहा है, फिर भी महिलाएँ कभी भी अपनी योग्यता प्रस्तुत करने में पीछे नहीं रही हैं। हमारे सामने ऐसे कई अनन्य उदाहरण हैं जो इस बात को चरितार्थ करते हैं। उन अनन्य उदाहरणों में से सरोजिनी नायडू, जिन्हें आप भारत को किला के नाम से जाना जाता है। वह अपना योगदान समाज में देने के लिए सफल रही। मदर टेरेसा, उन्होंने भी समाज में अपनी दयालुता का प्रभाव फैलाते हुए अपना योगदान दिया, जिससे उन्हें आगे चलकर पुरस्कार (भारत रल) से सम्मानित किया गया।

समाज हम सबसे मिलकर बना है और हम सबको एक साथ मिलकर एक दूसरे का साथ देते हुए अपना योगदान देना चाहिए।



महिला सशक्तिकरण की लहर और इसका प्रभाव शहरों के साथ-साथ गाँव में भी हुआ है, लेकिन गाँवों में अभी भी जागरूकता फैलाने के लिए इस शहर का प्रचलन में रहना आवश्यक है।

इस प्रोग्राम के चलते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी बहुत सी ऐसी स्कीमों को बढ़ावा दिया, जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिले, इनमें से एक 'बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ' है।

'बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ' से न केवल बेटियाँ पढ़ पाएंगी बल्कि पढ़ लिखकर और आगे चलकर अपने पैरों पर खड़े होकर देश की आर्थिकी (जीडीपी) को भी बढ़ावा मिलेगा और सुधार ला पाएंगी। यह महिला सशक्तिकरण का ही प्रभाव है कि आज हमारे देश की राष्ट्रपति द्वांपदी मुर्मु और पहले प्रतिभा पाटिल रह चुकी हैं। हमारे समाज का भी इसमें एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है समाज ने भी इस स्कीम को अपनाकर और अपना सहयोग देकर इसे सफल बनाया। आज अगर हम आंकड़ों पर नजर डालें तो 90 प्रतिशत लड़कियाँ पढ़कर नौकरी पा रही हैं।

आखिर महिला सशक्तिकरण ही क्यों?

लेकिन हमें इस बात पर गौर करना आवश्यक हो जाता है कि हमें महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता हुई क्यों? और खासकर भारत जैसे देश में जहां पर देवियों को पूजा जाता है। हमारा देश विस्तृत और विकसित होने के कागार पर होने पर भी महिला सशक्तिकरण जैसी स्कीमों को उपलब्ध कराना पड़ रहा है। इसके पीछे एक ठोस बजह है जो कि "Female foeticide" यानि महिलाओं का गर्भपात करा देना यह जानने के बाद गर्भ में एक नहीं बिट्या पल रही है। "महिला गर्भपात" हालांकि आजकल कम हो गया है। परन्तु अगर इतिहास देखें तो हमारे देश के कुछ राज्यों में, जैसे हरियाणा, राजस्थान के गाँवों में यह काफी प्रचलित परम्परा सी ही थी। महिला गर्भपात को रोकने के लिए भी सरकार ने न जाने कितने ही प्रोग्राम चलाए।

महिला गर्भपात के अलावा बाल-विवाह भी हमारे

देश में काफी प्रचलन में रहा। जिसमें तथ्य उम्र से कम में (जो संविधान में लिखा हुआ है) यानि 18 वर्ष से कम आयु में विवाह करा देना और लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई रूकवा देना है, जिससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास न हो सके। ऐसी अनन्य घटनाएँ होना जिससे लड़कियों/बच्चियों के भविष्य पर काला साथा मंडगता है, देश में होती रहती हैं, जिसके चलते महिला सशक्तिकरण एक आवश्यक हथियार बन जाता है और महिलाओं के लिए नई उम्मीद की किरण, जिसके जरिए गैंगरेप, एसिड अटैक जैसे जघन्य अपराधों की पीड़िता बनी महिलाएँ वापस मैदान में आकर अपनी लड़ाई लड़ सकती हैं और अपना भविष्य संवार सकती हैं। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए न जाने कितनी कविताएँ और राष्ट्रीय सरकारी संस्थान कितने प्रोग्राम चलाते हैं, ताकि शहरों में गांवों में जागरूकता फैल सके। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए एक कवि ने खूब लिखा है— जोकि इस प्रकार से है—

बोझ नहीं मैं किसी के सिर का,
न मझधार मैं नैया,
पतवार बनौँगी, लहरों से लड़ौँगी
अरे! मुझे क्या बनेगा रूपैया।

इस प्रकार के गाने, कविताएँ, जागरूकता फैलाने के लिए काफी प्रचलित हैं। महिला गर्भपात गेंकना हालांकि सरकार के लिए काफी चुनौतिपूर्ण रहा और इसको सबल बनाने के लिए ठोस कानून की मदद लेनी पड़ी। टीवी चैनल्स ने भी इसमें खूब साथ दिया।

महिला सशक्तिकरण के कारण आज बेटियाँ सांस ले पा रही हैं और जिनकी हदें केवल रसोई घर कर सीमित थी आज वे अपनी जिन्दगी के फैसले अपने मुताबिक ले रही हैं। अपने पैरों पे खड़े होकर अपने देश का, अपने माता-पिता का नाम रोशन कर रही हैं। आज महिलाओं के सामने सारे ग्रस्ते खुले हैं, वे जहाँ चाहे अपनी किस्मत आजमा सकती हैं। फिर वह चाहे सेना में लेफिटनेंट बनने का सपना हो या वायुसेना में पायलट। फिर वह चाहे एक अध्यापिका बनने का सपना हो या प्रोफेटी बिजनेस। नौकरियों से लेकर बिजनेस तक महिलाएँ इस पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों को टक्कर दे रही हैं। देश में समानता की लहर दौड़ रही है।

परिणाम:

आज देशभर में बहुत सारे एनजीओ, राष्ट्रीय सरकारी संस्थान जागरूकता फैलाने के लिए, महिलाओं को घरेलू हिंसा से न्याय दिलाने के लिए प्रतिष्ठित हैं। सरकार के द्वारा महिला हेल्पलाइन नम्बर भी उपलब्ध कराया गया है, 1091, जिस पर वह कभी भी फोन कर मुसीबत से बाहर निकल सकती हैं। बहुत से कानून संविधान में जोड़े गए प्रोग्राम को सबल बनाने के लिए। बहुत सी हेल्पलाइन ऐप विकसित की गई जैसे कि दुर्गा हेल्पलाइन ऐप, जिससे वे सीधी पुलिस से सम्पर्क कर सकती हैं और अपने आप को बचा सकती हैं। इसके अलावा स्कूलों और कॉलेजों में जाकर जागरूकता फैलाने का प्रावधान भी है फिर वो चाहे महिलाओं के पीरियडस, यानि मासिक साइक्ल के बारे में हो या फिर मार्शल आर्ट्स सीखने के बारे में। इसमें स्कूल और कॉलेज संस्थान ने भी पूरा सहयोग दिया।

इसमें समाज का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा वरना यह कार्य सम्पूर्ण होना जटिल था। हम समाज में महिला सशक्तिकरण के कारण सुधार तो देख ही रहे हैं, जैसे कि पढ़ा-लिखा सुखद समृद्ध परिवार। महिला सशक्तिकरण के द्वारा हम देश की अर्थ व्यवस्था तो सुधार सकते हैं, बल्कि हम देश की बढ़ती आबादी को भी नियंत्रित कर सकते हैं। महिला सशक्तिकरण और समाज एक दूसरे से ऐसे जुड़े हैं जैसे आठे में नमक। महिला सशक्तिकरण एक ऐसा प्रोग्राम है जिससे न केवल देश बल्कि महिलाएँ अपना प्रभुत्व जमाने और योगदान देने में समर्थ हो सकी हैं। लेकिन यहाँ रूकना नहीं चाहिए महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता केवल यहीं तक नहीं, कुछ सालों के लिए और सतर्क रहना चाहिए वरना हम केवल आधा बदलाव लाने में ही सफल हो पाएंगे।

—सुश्री अंजली शर्मा
शोधार्थी, भा.प्रौ.सं. मण्डी



इतरतः

-जैनेंद्र कुमार



पाप का सवाल एक बहुत बड़ा सवाल है। पाप समाप्त होने की धर्म अनावश्यक हो जाता है। परम आस्तिक और परम नास्तिक दर्शन यहीं कहते हैं। आस्तिक कहता है कि तुम कुछ नहीं करते, सब परमेश्वर करता है। जो कुछ करता ही नहीं, कर सकता ही नहीं, वह पाप को करेगा। दूसरी ओर परम नास्तिक दर्शन भी कर्तव्य को आदमी में अलग कर देता है। जो हो रहा है, और तुम कर रहे हो, विकास में अन्नभूत ऐतिहासिक शक्तियों से हो रहा है। हर कोई है वह, जो परिस्थितियों ने उसे बनाया है। उनका चाहना और करना इस तरह उसका अपना नहीं है। कुछ, और कोई परिस्थितियों से स्वतंत्र नहीं है, सब 'कंडिंशंड' है। पदार्थ की ओर से यह इतिनिश्चितिका (डिटरमिनिस्ट) दर्शन इस तरह पाप को उड़ा देता है। साध्य में लीन हो तो साधन में पाप-पुण्य का प्रश्न ही नहीं रह जाता। उस तरह आस्तिक और नास्तिक दोनों दर्शन एक ऐसी श्रद्धा दे डालते हैं जिसमें पाप के भय से आदमी ऊँचा हो जाता है। पहला आदमी कहता है कि मैं ब्रह्म हूँ, दूसरा मानता है कि इतिहास मैं हूँ। ऐसे अकार्य कुछ रहता नहीं, क्योंकि कार्य ही नहीं रह जाता। बस होनहार होते जाने को रहता है। केवल क्रिया होती है, कर्ता और कर्तव्य मिट जाता है।

ऊपर की दोनों आस्थाएँ आसानी में नहीं प्राप्त होती। बड़े अभ्याम की जरूरत पड़ती है। इसलिए एक सुगम उपाय भी आदमी ने निकाला है। वह उपाय है, नशा। अंदर की भावनाओं में से पक्कापन पाने में जोर पड़ता हो तो शराब जैसी चीजों के सहारे एक नशा आसानी से सिद्ध किया जा सकता है। योगी जन मुल्फा, गाँजा और चरस जैसे द्रव्यों की सहायता लेते सुने जाते हैं। भारतीय पद्धति वाले अमरीकी लेखक आल्डम हक्सले ने एक नई बूटी खोज निकाली है और पुस्तक लिखकर उनका स्तवन किया है। उस बूटी में अध्यात्म-समाधि सहन होती है। नशों का लाभ यह होता है कि आदमी इधर-उधर का बहुत कुछ नीचे छोड़ देता है और स्वप्न में अपने को पहुँचा लेता है। तब अंदर कोई ग्लानि और कुतरने वाली चीज महसूम नहीं होती और जो सामान्यतः संभव नहीं है, उसी की सामर्थ्य भीतर में निकल आती है।

कहते हैं नशीली चीजों में मिलने वाला भ्रम थोड़ी देर रहता है, अपने अंदर के जोर से पकाया गया विश्वास देर तक

टिकता है। वह जीवन भर काम दे जाता है। इस विश्वास की पद्धति के सहारे जो पाप से उठते हैं महापुरुष समझे जाते हैं। इतिहास उन्हें याद रखता है। वे रण की ललकार जगाते हों और लाखों को जान और करोड़ों का माल नष्ट-भ्रष्ट करते हों तो भी उनकी महापुरुषता में क्षति नहीं पाती। कारण, प्रेरणा उन्हें सिद्धांत की होती है। नशा वस्तु से मिलता है, सिद्धांत से मिला 'इन्सपिरेशन' कहलाता है।

ऐसे उत्तर और उत्तम पुरुषों की बात मैं नहीं करता। पाप के सवाल के लिए वे संगत नहीं हैं। शेर शिकार करता है तो पाप करता है? इसी तरह मानव जाति के सिंह पुरुषों को विचार से बाहर मानिए। पाप करते भी होंगे तो इतना विशाल, इतना महान्, इतना चमत्कारी होता है कि उसके आगे माथे को विस्मय में उठाकर या स्तुति में झुकाना ही पड़ता है। पाप की बात सामान्य जन की है।

सच यह है कि सब हम सामान्य हैं। शराब हम में से कोई जरूरत से ज्यादा चढ़ा ले तो वहीं आसामान्य दीख आयेगा। ऐसी असामान्यता जहाँ प्रकट हो, वहाँ हम उसे विचार के लिए अनावश्यक कर देते हैं। 'अरे-अरे शराबी हैं, बेचारे को रहने दो। असल में इसी भाव से मानवोत्तर और मानवोत्तम को फिलहाल अलग किया जा सकता है। यों पाप के प्रयोग से बरी वे भी नहीं हैं। सिर्फ नशा उन्हें तेज होता है, उसमें अंदर की कुरेद का पता वे खो रहते हैं।

तो पाप है, इसलिए नहीं कि ईश्वर ने उसकी सृष्टि की है, बल्कि इसलिए कि मनुष्य को उन्नति करनी है। वह वर्तमान से आगे भविष्य को देखता है, और वर्तमान को व्यतीत में जोड़कर देखना चाहता है। वह क्षमता उसमें आकांक्षा और विवेक को पैदा करती है। पशु सिर्फ होता है, चाहना सोचना उसमें होने में अलग नहीं है। आदमी की चाह सदा होने (प्राप्त) से आगे सदा अनहोने (अप्राप्त) की ओर जाती है। इस तरह प्राप्त और प्राप्त में मनुष्य के भीतर सदा ही एक तनाव रहता है। इसी में से कर्म उपजता है और मनुष्य प्रगति करता है। जैसे दाएँ-बाएँ घर में चला जाता है, वैसे ही पाप-पुण्य के विवेक में ऊपर को उठा जाता है। पाप का होना इस दृष्टि से सृष्टि विधान में गलत नहीं रह जाता, बल्कि बेहद जरूरी हो जाता है। कारण, उसके अभाव में स्थिति से भिन्न हम गति की कल्पना ही नहीं

कर सकते। तब सारा पुरुषार्थ गिर जाता है और विकास की क्रिया रुक जाती है।

पाप वह जिनमें हम खिंचते हैं और खिंचना नहीं चाहते। जिसे आधा मन चाहता है, आधा एकदम नहीं चाहता जो हमें स्वाद में अच्छा लगता है, परिणाम में बुरा लगता है। पाप इस तरह आदमी के अपने अंदर के द्वन्द्व में बसता है। पशु की पशुता में पाप नहीं है, पाप मनुष्य की पशुता में है। अर्थात् पशुता को पाप नहीं कहा जा सकता। पाप का प्रवेश तभी होता है जब प्राणी निरा पशु नहीं हैं मनुष्य भी हैं। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि पाप की स्थिति बिना पुण्य के हो नहीं सकती।

पाप का क्या करें? कैसे उसे जानें? कैसे झेलें और भुगतें? पाप को यों ही तो अपनाया नहीं जाता। जैसे अच्छा काम करने में जोर पड़ता है, वैसे ही बुरा काम करने में जोर पड़ता है, बल्कि ज्यादा जोर पड़ता है। किसने चोरी की है और शुरू में डर नहीं लगा? जार कब कायर नहीं हुआ? पाप और भय का अभिन्न संग है। यानी कभी नहीं हो सकता कि पाप को निर्णय मन से अपनाया जा सके। भय में से पाप की उपज है।

यहाँ आवश्यक है हम समझ लें कि पाप अपराध नहीं है। अपराध समाज से बनता है। संत जन अपराधी माने गये हैं और दंडित हुए। गांधी ने जेल पर जेल पायी। अपराध के कारण ही बार-बार उन्हें कैद में डाला गया। पर इन अपराधों में पाप कहीं था ही नहीं। इस तरह पाप स्वापेक्ष (सब्जेक्टिव) वस्तु है। समाज की ओर से उसका इलाज बन नहीं सकता। चोर को चोरी की सजा में हमने जेल भेजा, पर मन को जेल कहीं हो पायी? मान लीजिए कि चोरी पकड़ी नहीं जाती या कि नहीं सिर्फ चाही जाती है, तब पाप तो उग गया, पर समाज किसी तरह उसे छू या छेड़ नहीं सकता। इसी तरह समाज की ओर से किये गये सब उपाय अपराध तक रह जाते हैं, पाप तक नहीं पहुँच पाते।

पाप के सवाल को जो चीज लू और समझ सकती है, वह है मनुष्य के भीतर चलने वाली आंतरिक क्रिया। सत्-असत् में भेद करने वाली एक अनिवार्य प्रक्रिया है जिसको मनुष्य के भीतर में लाख प्रयत्न करने पर भी भेदा नहीं जा सकता, उसे विवेक कहते हैं। अक्सर उस विवेक से हम सत् और असत् के टक्कर की प्रेरणा लिया करते हैं। यानी माने हुए सत् में अपने में माने हुए असत् को सीधे-सीधे लड़ाते हैं। पाप की वासना को नीति की धारणा से दबाते हैं। इसको संयम कहा जाता है।

कथाओं-पुण्यों में असंख्य उदाहरण हैं, और हम सबके जीवनों में उतने ही असंख्य अनुभव हैं, कि उग्र आग्रह

खंडित होता है। हठ दृट्टा है और जय उस गह व्यक्ति की नहीं, पाप की होती देखी जाती है। व्यक्ति करता है वह जो नहीं चाहता है कि करे। बहुतेरा झगड़ता है, पर अंत में बस ही नहीं चलता! यह आत्म-अनुभव है।

ऐसा क्यों होता है? व्यक्ति का उत्तम क्यों अपने अधम से हारता है? क्यों है कि इस द्वन्द्व में सदा व्यक्ति पराभूत हुआ है, संकल्प क्यों सदा दूटा ही है? क्यों है कि होनहार कभी भी व्यक्ति के अनुसार नहीं होता है, अपने ही अनुसार होता है। इसके मूल में जायें तो शायद पता लगेगा कि कुछ है जो हर व्यक्ति और उसके हर संकल्प से प्रमाण है और अनिवार्य है। उस अमोघ-अनिवार्य का नाम है ईश्वर। वही सत्य। इस स्वीकृति में से प्रार्थना और अकिञ्चनता की प्राप्ति होती है। मनुष्य का संकल्प दूटेगा, बिखरेगा, अगर नीचे उसके इस प्रार्थना मय अकिञ्चन्य का बल नहीं है। मैं जीतने वाला नहीं हूँ, जीतेगा सत्य। इस लिए वह संयम और वह संकल्प जो सारा बल 'मैं' से प्राप्त करता है, पाप को जीत नहीं पायेगा। उलटे अंत में यह पाप की ही विजय का उपादान होगा। अहंकार पाप का निमंत्रण है और स्वयं पाप है। इसलिए उस आधार पर जड़ जमाकर बड़ा होने वाला मनोबल (विल पावर) और उसमें मैं निकलने वाली स्पर्द्धापूर्ण यम-नियम-संयम और तप-त्याग-तपस्या का सिद्धांत अंत में अकृतार्थ ही होगा। कारण, यह अहं पुण्य के जोर से अहं पाप को जीतने का उपाय है। पर पुण्य-पाप की तो जुड़ी है और अहता से जुड़ी है! अतः द्वन्द्व का शमन तो सत्य में है। वहाँ पाप के प्रति हठ नहीं करुणा है और पुण्य में आकांक्षा नहीं समता है। सत्य वह जहाँ अविभक्तता है।

स्त्री-पुरुष के संबंधों में और सत्ता-संपत्ति को लेकर अक्सर मनों में कामनाएँ उठती हैं जिनके साथ पाप का बोध चलता है। नैतिक मत-मान्यताएँ उस बोध को उपजाती और तीखा करती है। उसका निपटाया दुर्जन और सज्जन के 'सु' और 'कु' के, दो वर्ग खड़ा करने और उनके विग्रह को तीक्ष्ण करने से नहीं होगा। होगा यदि तो इस पद्धति में कि सज्जन अपने अंदर दुर्जनता टटोल देखें और उधर दुर्जन के अंदर की सज्जनता पहचाने और उसे प्रकट करें।

स्रोत :

पुस्तक : निबंध गरिमा (नवल किशोर एम ए) (पृष्ठ 38)

संपादक : नवल किशोर (एम ए)

रचनाकार : जैनेन्द्र कुमार

प्रकाशन : जयपुर पब्लिशिंग हाउस

प्रेमचंद के फटे जूते

-हरिशंकर परसाई

नोट : प्रस्तुत पाठ एनसीईआरटी की कक्षा नौवीं के पाठ्यक्रम में शामिल है।

प्रेमचंद का एक चित्र मेरे सामने है, पल्ली के साथ फोटो खिंचा रहे हैं। सिर पर किसी मोटे कपड़े की टोपी, कुर्ता और धोती पहने हैं। कनपटी चिपकी है, गालों की हड्डियाँ उभर आई हैं, पर धनी मूँछे चेहरे को भरा-भरा बतलाती हैं।

पाँवों में केनवस के जूते हैं, जिनके बंद बेतरतीब बैंधे हैं। लापरवाही से उपयोग करने पर बंद के सिरों पर की लोहे की पतरी निकल जाती है और छेदों में बंद डालने में पोशानी होती है। तब बंद कैसे भी कस लिए जाते हैं।

दाहिने पाँव का जूता ठीक है, मगर बाएँ जूते में बड़ा छेद हो गया है जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई है।

मेरी दृष्टि इस जूते पर अटक गई है। सोचता हूँ- फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी? नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी-इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है।

मैं चेहरे की तरफ देखता हूँ। क्या तुम्हें मालूम है, मेरे साहित्यिक पुरखे कि तुम्हारा जूता फट गया है और अँगुली बाहर दिख रही है? क्या तुम्हें इसका जरा भी अहसास नहीं है? जरा लज्जा, संकोच या झेंप नहीं है? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि धोती को थोड़ा नीचे खींच लेने से अँगुली ढक सकती है? मगर फिर भी तुम्हारे चेहरे पर बड़ी बेपरवाही, बड़ा विश्वास है! फोटोग्राफर ने जब 'रेडी-प्लीज' कहा होगा, तब परंपरा के अनुसार तुमने मुस्कान लाने की कोशिश की होगी, दर्द के गहरे कुएँ के तल में कहीं पड़ी मुस्कान को धीरे-धीरे खींचकर ऊपर निकाल रहे होंगे कि बीच में ही 'क्लिक' करके फोटोग्राफर ने 'थैंक यू' कह दिया होगा। विचित्र है यह अधूरी मुस्कान। यह मुस्कान नहीं, इसमें उपहास है, व्यंग्य है!

यह कैसा आदमी है, जो खुद तो फटे जूते पहने फोटो खिंचा रहा है, पर किसी पर हँस भी रहा है!

फोटो ही खिंचाना था, तो ठीक जूते पहन लेते, या न खिंचाते। फोटो न खिंचाने से क्या बिगड़ता था। शायद पल्ली का आग्रह रहा हो और तुम, शब्दों, चल भई बहकर बैठ गए होंगे। मगर यह कितनी बड़ी शटेजडीश है कि आदमी के पास फोटो खिंचाने को भी जूता न हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते-देखते, तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पड़ना चाहता हूँ, मगर तुम्हारी आँखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है।

तुम फोटो का महत्व नहीं समझते। समझते होते, तो किसी से फोटो खिंचाने के लिए जूते माँग लेते। लोग तो माँगे के कोट से वर-दिखाई करते हैं। और माँगे की मोटर से बारात निकालते हैं। फोटो खिंचाने के लिए तो बीबी तक माँग ली जाती है, तुमसे जूते ही माँगते नहीं बने! तुम फोटो का महत्व नहीं जानते। लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए। गंदे-से-गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है।

टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस जमाने में भी पाँच रुपए से कम में क्या मिलते होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडंबना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ। तुम महान कथाकार, उपन्यास-सम्प्राट, युग प्रवर्तक, जाने क्या-क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है!

मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है। यों ऊपर से अच्छा दिखता है। अँगुली बाहर नहीं निकलती, पर अँगूठे के नीचे तला फट गया है। अँगूठा जमीन से घिसता है और पैनी मिट्टी पर कभी गड़ खाकर लहूलुहान भी हो जाता है। पूरा तला गिर जाएगा,

पूरा पंजा छिल जाएगा, मगर अँगुली बाहर नहीं दिखेगी। तुम्हारी अँगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है। मेरी अँगुली ढँकी है, पर पंजा नीचे धिस रहा है। तुम पर्दे का महत्व ही नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं।

तुम फटा जूता बड़े ठाठ से पहने हो! मैं ऐसे नहीं पहन सकता। फोटो तो जिंदगी भर इस तरह नहीं खिंचाऊँ, चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे।

तुम्हारी यह व्यांग्य-मुस्कान मेरे हौसले पस्त कर देती है। क्या मतलब है इसका? कौन सी मुस्कान है यह?

-क्या होरी का गोदान हो गया?

-क्या पूस की गत में नीलगाय हलकू का खेत चर गई?

-क्या सुजान भगत का लड़का मर गया क्योंकि डॉक्टर क्लब छोड़कर नहीं आ सकते?

नहीं, मुझे लगता है माधो औरत के कफन के चंदे की शराब पी गया। वही मुस्कान मालूम होती है।

मैं तुम्हारा जूता फिर देखता हूँ। कैसे फट गया यह, मेरी जनता के लेखक?

क्या बहुत चक्कर काटते रहे?

क्या बनिये के तगादे से बचने के लिए मील-दो मील का चक्कर लगाकर घर लौटते रहे?

चक्कर लगाने से जूता फटता नहीं है, धिस जाता है। कुंभनदास का जूता भी फतेहपुर सीकरी जाने-आने में धिस गया था। उसे बड़ा पछतावा हुआ। उसने कहा 'आवत जात पन्हैया धिस गई, बिसर गयो हरि नाम।' और ऐसे बुलाकर देने वालों के लिए कहा था-'जिनके देखे दुःख उपजत है, तिनको करबो परै सलाम।'

चलने से जूता धिसता है, फटता नहीं। तुम्हारा जूता कैसे फट गया?

मुझे लगता है, तुम किसी सख्त चीज को ठोकर मारते रहे हो। कोई चीज जो परत-पर-परत सदियों से जम गई है, उसे शायद तुमने ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया। कोई टीला जो गास्ते पर खड़ा हो गया था, उस पर तुमने अपना जूता आजमाया।

तुम उसे बचाकर, उसके बगल से भी तो निकल सकते थे। टीलों से समझौता भी तो हो जाता है। सभी नदियाँ पहाड़ थोड़े ही फोड़ती हैं, कोई गास्ता बदलकर, घूमकर भी तो चली जाती है।

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमजोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम-धरम' वाली कमजोरी? 'नेम-धरम' उसकी भी जंजीर थी। मगर तुम जिस तरह मुस्करा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम-धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

तुम्हारी यह पाँव की अँगुली मुझे संकेत करती-सी लगती है, जिसे तुम धृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

तुम क्या उसकी तरफ इशारा कर रहे हो, जिसे ठोकर मारते-मारते तुमने जूता फाड़ लिया?

मैं समझता हूँ। तुम्हारी अँगुली का इशारा भी समझता हूँ और यह व्यांग्य-मुस्कान भी समझता हूँ।

तुम मुझ पर या हम सभी पर हँस रहे हो, उन पर जो अँगुली छिपाए और तलुआ धिसाए चल रहे हैं, उन पर जो टीले को बरकाकर बाजू से निकल रहे हैं। तुम कह रहे हो मैंने तो ठोकर मार-मारकर जूता फाड़ लिया, अँगुली बाहर निकल आई, पर पाँव बच रहा और मैं चलता रहा, मगर तुम अँगुली को ढाँकने की चिंता मैं तलुवे का नाश कर रहे हो। तुम चलोगे कैसे?

मैं समझता हूँ। मैं तुम्हारे फटे जूते की बात समझता हूँ, अँगुली का इशारा समझता हूँ, तुम्हारी व्यांग्य-मुस्कान समझता हूँ।

स्रोत :

पुस्तक : क्षितिज-1 (कक्षा-9) (पृष्ठ 52)

रचनाकार : हरिशंकर परसाई

प्रकाशन : एन.सी.ई.आर.टी

संस्करण : 2022

अपने बारे में सोच जरा

अपने बारे में सोच जरा,
तुझे डरने की आदत सी है,
दिल में एक घबगहट सी है,
कदम जो आगे बढ़ाया है,
गिरते आंसु को पांछ जरा,
अपने बारे में सोच जरा ।

लोग आते-जाते रहते हैं,
जीवन को खूब न चाते हैं,
खुद की खुद ही हिम्मत बन तू,
गम को तू पीछे छोड़ जरा
निश-दिन ही अलग परीक्षा है
अव्वल सब में ही आना है
चमकती हुई इस दुनिया में
एक तारा तो नोच जरा
अपने बारे में सोच जरा ॥

गिरते संभलते चलना है,
जीवन से हारना छोड़ दे तू,
तू हिमालय की ऊँचाई है,
खुद में एक लम्बी चढ़ाई है,
भूल गया है खुद को क्यों,
जा खुद को जाकर खोज जरा,
अपने बारे में सोच जरा ॥

-श्री संखदीप मण्डल
बी.टेक. जैव अभियांत्रिकी छात्र
भा.प्रौ.सं. मण्डी

भ्रमजाल

पाषाण हृदय के पटखोलो
रुह और जिस्म का खुलासा देखो,
क्षितिज के उस भ्रमित मिलन का,
नित नया तमाशा देखो ।

पाया खोया सब इक सा,
गेल बदलते ताजो तख्त देखो
पब्लिक तो सब जानती हैं,
तुम खुद ही खुद का अक्ष देखो ।

आवाम को हम क्या बदलें,
जब बदले के तुम भाव देखो
खुद को थोड़ा बदलो तुम,
फिर औरें में बदलाव देखो ।

जीने के आधार हैं बदले
तकनीकी का जमाना देखो,
कोई चाँद सरीखी प्रियतम हूँदे
तुम चाँद पर भी ठिकाना देखो ।

स्पर्धा की रफतार निगली,
अपनों की निराशा देखो,
कुठित हैं सब भीतर-भीतर,
युवा पीढ़ी की ये हताशा देखो ।

गली सड़ी परम्पराओं को,
अब पल भर में बदलते देखो ।
सच को कोई सुन नहीं पाता,
झूठ को लगते पांच देखो ।

शाखें उसकी पत्ते भी उसके,
बक्क की ये हरियाली देखो,
बिना कुछ किये सब कुछ पाने की,
ख्वाहिश ये निगली देखो ।

-श्री तिलक राज
कनिष्ठ अधीक्षक,
अधिष्ठाता छात्र सचिवालय

आँखें

चलते-चलते किसी राह पे
हम साथी जो कोई मिला था,
कारवां को छोड़ के पीछे
आज जो अपनी राह चला है
क्यों उसको जाते देख
नम सी मेरी आँख हुई है?
साथ हमारा कितना ही था?

हर मोड़ पे कोई सहारा,
कोई बेचारा, जीता-हारा,
बंजार मिलता ही है,
एक मोड़ उसका भी था।

अनजानी गहों पे चलते,
कहीं भटकते, कहीं संभलते
जाने कितने जोड़ बने हैं,
एक जोड़ उसका भी था।

कंधे से कंधे को मिलाते,
जोड़-घटाते, कदम बढ़ाते,
ही तो काफिला बनता है।
उसी बड़े से काफिले में
एक छोर उसका भी था।

जिस तरफ वो निकल पड़ा है,
उसी तरफ पीछे की ओर
कितने सारे लोग खड़े हैं।
उसके जैसे हम साथी
जाने कितने और पढ़े हैं।
एक गया तो क्या ही होगा?
कल जब वो रस्ते में मिला था,
क्या तब मुझको ये न पता था
कि कल इसको जाना होगा?
मेरे रस्ते पर चल कर,
उसकी अपनी मंजिल को
नामुमकिन पाना होगा।

छोड़ के ऐसे ही इन सब को
मुझको भी कभी जाना होगा।
नया कारवां, लोग नए,
नई गहों को अपनाना होगा।

पर शायद ये तर्क विचार,
ये सूझ-बूझ के समाचार,
आँखों तक मेरी न पहुँचे।
उनकी भी अपनी मंजिल होगी,
किसी और राह को निकल पड़े,
और बेखबर ही आँखों को छोड़
किसी कोने में पसर गए।

दोनों बेचारी उसके चेहरे में
वो पल सारे देख रही हैं,
जो कभी साथ गुजारे थे।
वो लम्हे, वो बातें-किस्से,
जो सिर्फ़ और सिर्फ़ हमारे थे।
क्या वो बस इतने ही थे?

कहता तो है राह किसी पे,
चलते-चलते फिर से मिलेंगे
पर पता मुझे है मिले अगर भी
बदले से हम बस गुमसुम होंगे।

बस इन्हीं दिनों को याद करेंगे
कहां नए पल साथ बुनेंगे?
वही तिजोरी कुछ यादों की खोलेंगे और बंद करेंगे।
पर तब तक ये तहखाने में,
इसी के जैसे बीच खजाने पड़ी रहेगी।

छोड़ इसी को जो ये आँखें ताला बंद कर आई हैं,
कई पुराने बक्सों को ये फिर से देख कर आई हैं।
और कई की जगह वहाँ हैं, और कई रखने होंगे
शायद इसीलिए ये आँखें आज यूँ भर आई हैं।

-श्री आर्विक ओबराय
छात्र, भा.प्रौ.सं. मण्डी

बहो शान से बहको मत

बहो शान से बहको मत ,
मुकाम तक पहुंचो रुकना मत ।

खुद को कर लो कुछ ऐसा कि,
हर दरिया तुम तक बहकर आए ।
साहिल पार जो करना हो तो ,
हर मुसाफिर तुमसे होकर जाए ॥

अच्छे चुरे की बात नहीं है,
ध्येय कि तुम फिक्र करे ।
देह मिट्टी मन है समंदर ,
भीतर से तुम डिगना मत ॥

बहो शान से बहको मत ,
मुकाम तक पहुंचो रुकना मत ।

आओ कविता पकाएं

कभी मीठी गुड़ सी, कभी कड़वी नीम सी ।
ये कविता व्यंजन के स्वाद हैं एक कवि के ॥

दृश्य काटकर जग भरसे ,
बातें चुन - चुन कर जग भरसे ,
मतवाले रस को पी करके ,
जब मन मंदिर के बृहद क्षेत्र में ,
कवि रखकर गूंथे सर्व विचार ।
विवेक बुद्धि और तर्क से ,
करके उन पर नित्य प्रहार ॥

एकांतवास में अविचल रहकर ,
ध्यान लगाए बैठा रहता ।
पकने तक कविता का भोजन ,
ताप मानन का खूब लगाता ॥

जब कविता पकने को होती ,
तब सुगंध रस बाहर आता ।
रोक न पाता कभी खुद को भी ,
पृष्ठों का फिर थाल लगाता ॥
कच्ची कलम की ले कविता को ,
पृष्ठ थाल में खूब सजाता ।
जिसमें जो भी पाठक आता ,
वाह-वाह वाह-खूब सुनाता ॥

दत्ता, मद्य और भूख लगते हो ,
मीठी कड़वी सब हो जाती ।
अनेक रस - रंगों की कविता ,
खाने में है खूब सुहाती ॥
बीमार समाज कभी हो जाता ,
तब कड़वी भी होती जाती ।
और वह भोजन जो कविता है ,
कवि की मेहनत इसे बनाती ॥

-श्री हिमांशु जोशी
एम.टेक (अनुसंधान) छात्र
भा.प्रौ.सं. मण्डी

तेरा धर्म

तेरा धर्म खतरे में है,
उसका खून तो नहीं बह रहा,
ना वो रो रहा है,
अगर रो रहा है कोई तो
वो औरत जिसका
पति धर्म की खातिर मारा गया,

खून तो है पर धर्म के हाथ में नहीं,
पर उसको बचाने वाले के हाथ में,
धर्म अपना व्यापार कर रहा है,
और तू उसका प्रचार कर रहा है,
धर्म तेरे बारे में क्या जानता है,

ना तेरी जात, ना तेरा प्रेम संबंध, ना तेरी पढ़ाई,
मैं इस अनजान धर्म को देख रहा हूँ,
धर्म के हाथों मार खाते आदमी को देख रहा हूँ।
धर्म बच रहा है,
आदमी नहीं बचेगा शायद ॥

-श्री नलिन धीमान
छात्र, भा.प्रौ.सं मण्डी

वो पुराने दिन

एक अरसे के बाद, उठाई है कलम,
कविताबद्ध करने को, मन के कुछ विचार।
यूँ तो छिपा है बहुत कुछ, इस मन में,
बस हम बेवजह, बयां नहीं किया करते।
यादें हैं अतीत की, कुछ अच्छी, तो कुछ बुरी,
भविष्य की कल्पनाएँ हैं, कुछ पूरी, तो कुछ अधूरी।
कल्पनाओं से जग दूर, ले जा रही हूँ खुद को,
यादों के समीप, उन पुराने दिनों की।
वो दिन जिंदगी के, जिनमें उत्साह था,
उमंग थी, जोश था, और था एक अनोखा जुनून।
आज मानो कि जैसे, वक्त बस कट रहा है,
जिया तो कभी और ही था।
देखती हूँ पुरानी तस्वीरें, जितनी दफा,
न जाने क्यूँ, उतनी नई लगती हैं।
थोड़ा मुश्किल होता है, याद दिलाना खुद को,
कि बीत गया वो वक्त पुराना।
अब तो बस यादें, और सिर्फ यादें हैं,
जो कभी हँसाती, तो रुलाती हैं कभी, मन ही मन।
कहाँ गये वो दिन, जब हर पल,
संग होते थे, और संग रहते थे, दोस्त अनेक।
एक साथ पढ़ना, एक साथ खेलना,
एक साथ खाना, और ढेर सारा बतियाना।
उन दोस्तों का साथ तो आज भी है,
पर वो दोस्त ही नहीं हैं साथ, एक दूसरे के आस-पास।
आज, है व्यस्त हर कोई, जिंदगी की अपनी जंग में,
अलग मंजिल, अलग गत्स्ते, अलग कहानी, अलग जिन्दगानी।
कभी वो वक्त भी था, जब मिलकर चलते थे सब एक साथ,
हँसते भी थे, गंते भी थे, पर फुर्रत से जिन्दगी जीते थे।
एक अलग ही अहसास है, यादों में,

उन बीते हुए लम्हों की, जो जीवंत हैं आज भी, अन्तर्मन में।
अनेकों प्रतिस्पर्धाओं में, कभी लड़ जाते थे,
तो कभी प्रतिस्पर्धी होकर भी, निभाते थे एक-दूजे का साथ।
याद आता है बहुत, खेल के मैदान पर जोर से चिल्लाना,
अब तो जमाना बीत गया, खुशी से चिल्लाये।
सुरक्षित हैं, और भी ना जाने,
कितनी ही ऐसी यादें, आज भी मेरे पास।
आज लगता है कभी-कभी, बहुत अकेलापन, खालीपन,
और मैं फँस जाती हूँ, यादों के समंदर में।
फिर करती हूँ कोशिश, आज को जीने की,
उन यादों से खुद को, निकाल बाहर।
क्योंकि जो आज है, कल वो भी न होगा,
मानो या ना मानो, शायद यही जिन्दगी है।
हर बीता पल अतीत, और आने वाला भविष्य,
वर्तमान तो बस, क्षण भर का है।
मन भरा हुआ है, ऐसे अनंत विचारों से,
किन्तु अब रोकना होगा मुझे, कलम को अपनी।
विचारों की इस दलदल में, अक्सर आता एक विचार,
वो पुराने दिन...।

-सुश्री प्रतीक्षा चौहान
शोधार्थी, भा.प्रौ.सं. मण्डी

गुब्बारेवाली

होंठों पर मुस्कान थी उसके,
चेहरे पर एक थकान थी,
बेच रहीं, वो गुब्बारे,
9 साल की नन्ही जान थी !!

अपनी रूठी किस्मत को मनाने निकल गई,
खेलने की उम्र में, कमाने निकल गई,
दुनिया भी बेरहम, देखती रहीं,
लगता उनकी अकल, घास खाने निकल गई !!

गुब्बारा बिकने पर खुश होती,
एक और गुब्बारा फिर फूलाती है,
साँसे भी अब हवा मांग रहीं,
इतना जज्बा कहाँ से लाती है !!

शिक्षक अब मजदूर बने हैं,
अर्थ कमाने को मजबूर बने हैं,
शिक्षा पाकर भी घर बैठे हैं,
कुछ भिक्षा से फल-फूल रहे हैं !!

लगता है एक बवाल करेगी,
बच्ची की बात कमाल करेगी,
क्यों अनपढ़ मुख्य बने हैं?
सत्ता से तीखा सवाल करेगी !!

पानी बेचे सब बैठे हैं,
दुकानों पर शिक्षा का गोला है,
'ए छोटू चाय लाना'
किसी शिक्षक ने ये बोला है !!

शिक्षा पाकर मुख्य बनो तुम,
गुब्बारा कोई और फूला लेगा,
कर्तव्य अधिकार दोनों को जानो,
ये जीवन द्वार खुला देगा !!

गुब्बारा पकड़कर उड़ जाओ तुम,
सफलता के अनंत आसमान में,
'गुब्बारे वाली' भी अब चमकेगी,
इतिहास-ए-हिंदुस्तान में !!

गुब्बारे वाली के जैसे,
कितनों ने बचपन अपना खोया है !
दुःख, दर्द, पीड़ा को इसकी,
'हेमन्त' ने शब्दों में पिरोया है !!

-श्री हेमन्त लाटा
(भा.प्रौ.सं. मण्डी भूतपूर्व छात्र,
बिसाऊ, राजस्थान)



मैं फिर वही, तू फिर वही

कुछ पल और सही तू मेरे साथ न सही
मैं फिर वही, तू फिर वही
कहाँ ले चली ये हवाएं अपने संग
तू फिर नहीं, मैं फिर बस वहीं-कहीं
है याद मुझाको आज भी उदासियाँ तेरी कहीं
है मुरझाई हुई बहारें कहीं-कहीं
मैं रुखी-सूखी हुई
तेरी उदासी गई
वह निगाहें भरी-भरी
मैं आज फिर वहीं-कहीं
तू ले चल, आज भी अपने संग
बसा लें हम अपना नयन
फिर बहारें खिलीं-खिलीं
मैं आज भी वहीं-कहीं
मैं इलातजा करूँ या गुजारिशें करूँ
है निगाहें भरी मेरी
तू आज भी वहीं-कहीं
तू कबूल तो कर इक बार फिर से कर
है बहारें खिलीं-खिलीं, मेरी बेबाकियाँ वहीं कहीं
बसा लूँ तुमको अपने संग
तू इकबार थाम के देख
है मेरी उदासियाँ वहीं-कहीं
तू रहा जहाँ नहीं
कुछ पल और सही तू मेरे साथ न सही
मैं फिर वही, तू फिर वही।

-सुश्री तबस्सुम इकबाल,
शोधार्थी, भा.प्रौ.सं. मण्डी

ए कलम तू लिख जरा

ए कलम तू लिख जरा

हाल हुआ बेहाल देखकर हाल बुरा
ए कलम तू लिख जरा ।
कितने ही दीवानों ने खेर बक्शी आजादी की
सियासत के इन मोहरों को कढ़ नहीं खादी की
लूट लिया जरे जरे को इन सियासी गद्दारों ने
सुलगाते शोलों को ठंडा किया इन फिल्मी किरदारों ने
तू भी लिपटा रहा खुदगर्जी से
चलता रहा यूँ ही गैरों की मर्जी से
कर दे नाकाम इनके मंसूबों को
बाट जोह रहा वतन अपना
वतन परस्त जरा हाथ बढ़ा
हाल हुआ बेहाल देखकर हाल बुरा
ए कलम तू लिख जरा ॥॥॥
ना रख खुट को बस में
तू महक फिजा में
कर अभी से बुलंद हौसला
ना बैठ वक्त के इंतहा में
वक्त हैं सब कर दिखाने का
झुकेगा सर जमाने का
बनते हैं कारवां उसूलों से
ना बैठ हाथ पर हाथ धरा
हाल हुआ बेहाल देखकर हाल बुरा
ए कलम तू लिख जरा ॥॥॥

- श्री पंकज कुमार
शोधार्थी, भा.प्रौ.सं. मण्डी

कवि नहीं हूँ

मैं कोई कविता हूँ

अधूरी लिख कर कागज की सिल्वट में मरेड़ दी गयी,
किसी की बे-हिस में आया ख़्याल
जिसे सोचते हुए सब कुछ सोचा जा सकता था सिवाय उसके।

कवि की ड़ॅगलियों का स्पन्दन जो कागज तक पहुँच कर स्पाह फैल गया हो ,
वो सब अक्षर जो कभी मिलकर बनाते थे कोई अर्थ।

अनर्थ सा सब कुछ हो सकती थी मैं
कोई कविता या कविता होने का तसव्वुर।

मैं कवि नहीं हूँ

कवि सृष्टि है जो रच रहा है मेरो सी कितनी अधूरी-पूरी कविताओं को,
कितनी ही मेरी सी कविताएँ उसके कदमों में पड़ी
अपनी किस्मत पर कराह रहीं होंगी।
वो निर्मम कवि अधूरा लिख उन्हें छोड़ आगे बढ़ जाएगा,
आखिर कवि का उसकी
एक अधूरी कविता से क्या लगाव हो सकता है।
लेकिन उसकी स्पर्श की हुई हर एक कविता,
देखती है सपने अपनी तहों के खुलने का।

मैं कवि नहीं हूँ

मैं कुछ भी हो सकती थी,
लेकिन कवि सा साहस अपने रचे हुए को
हर बक्त नष्ट कर देने का
मुझे शायद कभी ना आएगा।

-सुश्री शक्तिजा मिश्रा
शोधार्थी, भा.प्रौ.सं. मण्डी

हर बेटी है खास : चलो मिलकर करें बेटियों का सम्मान



नन्ही सी परी, मेरी जान की प्यारी,
तुझमें है वो शक्ति, जो दुनिया को हारी।
तेरी मुस्कान में छुपी है, हर खुशी की चाबी,
तेरी आँखों में बसी है, सपनों की तस्वीर प्यारी।

जब तू हँसती है, फूल भी खिल जाते हैं,
तेरी मासूमियत से, सारे गम भी छुप जाते हैं।
तू मेरी दुनिया है, तू मेरा अभिमान है,
तेरे बिना यह जीवन, जैसे सूना मैदान है।

तू है मेरी रौशनी, तू है मेरी आस,
तुझमें बसी है, हर मुश्किल का हल और हर सवाल का जवाब।
तूने सिखाया है हमें, प्यार और स्नेह का असली मतलब,
तू है मेरे जीवन का, सबसे प्यारा और सुन्दर ख्वाब।

हर बेटी है अनमोल, हर बेटी है खास,
उनके बिना अधूरी है, यह दुनिया की आस।
बेटा-बेटी एक समान, यही सच्चा विश्वास,
सबको देना है यही संदेश, यही है हमारा प्रयास।

तेरी छोटी-छोटी बातें, तेरे भोले-भाले खेल,
तेरे बिना मेरा जीवन, जैसे अधूरा मेल।
तू है मेरी प्रेरणा, तू है मेरी शक्ति,
तेरे साथ ही मैंने पाई है, अपनी हर जीत की मस्ती।

तो चलो मिलकर करें, बेटियों का सम्मान,
क्योंकि बिना उनके अधूरी है, यह दुनिया की पहचान।
हर बेटी है खास, हर बेटी है महान,
उनके बिना अधूरी है, जीवन की हर कहानी और हर अरमान।



श्री अनूप कुमार,
कनिष्ठ अधीक्षक,
अधिष्ठाता डोग कार्यालय



ईश्वर ये कहलाता है

मेरा शत्रु न तो कोई नेता है, न भूखंड विजेता है
न उसने कोई युद्ध लड़ा, न उसकी कोई जीत हुई
न उससे मेरा बैर कही, न उससे मेरी भेट हुई
जब भी कोई कार्य आरंभ करूँ, पहले वो टांग अड़ाता है
फसल पकने पर बारिश बनकर, बूंदों के साथ वो आता है
मेहनत सारी साथ बहाकर अपने संग ले जाता है
सर्दी में कोहरा बनकर, सरसों वहीं गलाता है
नीरों को वहीं जमाता है, जीवन को वही ठिराता है
हिमों का ढाल बनाता है, रुधिरों का दाब घटाता है
भूखा भी वही सुलाता है, विष व्याला भी वहीं पिलाता है
फांसी भी वहीं लगवाता है, बिजली भी वहीं कड़काता है
आंधी भी वहीं तो लाता है, चृक्षों को वहीं हिलाता है
आमों को वहीं गिराता है, अपनों में युद्ध कराता है
युद्धों में शस्त्र न उठाता है, फिर भी नायक बन जाता है
अपितु इससे न कोई भिड़ पाता है,
क्योंकि ईश्वर ये कहलाता है ,
ईश्वर ये कहलाता है।

-श्री अभिषेक कुमार
शोधार्थी, भा.प्रौ.सं. मण्डी

रात खामोश है

शब् बुनाह गोश, मिट्टी में घुल रही
 तेरी याद नशे सी, है छाने लगी
 तन्हा-तन्हा सा पहुंचा तेरी गली
 धड़कने तेरा नाम, गुनगुनाने लगी
 ये मेरा प्यार है, जो तुझे नोश है
 शाम खामोश है, अब कहाँ होश है।
 दिल मेरा खो गया, तेरी आगोश में।

ये जो हैं तक रहे, चाँद-तारे तुझे
 तेरी हर इक अदा पर, निहारे तुझे
 मैं हूँ उलझा हुआ, तेरी जुल्फों में यूँ
 रेशमी बेड़ियाँ, यूँ पुकारे मुझे
 इसमें तू ही बता क्या मेरा दोष है
 शाम खामोश है, अब कहाँ होश है
 दिल मेरा खो गया, तेरी आगोश में

है हकीकत यही जानता भी हूँ मैं
 तू हुर जनत की है, मानता भी हूँ मैं
 मैं तो छनता हुआ एक कच्चा घड़ा
 तन्हा बारिश में हूँ धीमें से घुल रहा
 न ठहरता सा कुछ न महकता सा कुछ
 न ही महसूस हो हाये रमता सा कुछ
 खाली होता रहूँ बस तेरी प्यास पर
 चलती सांसों में अब तो यही जोश है
 मैं छलकता रहूँ, तेरी आगोश में
 शाम खामोश है अब कहाँ होश है

तेरी नजरों के साये में कट जाएगी
 गम की बदली जो आएगी छंट जाएगी
 जिन्दगी तेरे संग है कहानी कोई
 मीठी-मीठी सी शब्र नूरनी कोई
 गुनगुनाता रहूँ गीत गाता रहूँ
 सुबह-शाम इश्क जताता रहूँ
 तू सताती रहे मैं मनाता रहूँ
 तू इबादत बने तू ही आदत बने
 तू मेरा भोलापन तू शरारत बने
 ये ही तो प्यार है ये ही इकरार है
 शाम खामोश है अब कहाँ होश है
 दिल मेरा खो गया तेरी आगोश में।

-डॉ. दीपक स्वामी
 सह-प्राध्यापक एवं अधिष्ठाता
 सिविल एवं पर्यावरण अभियांत्रिकी स्कूल

माता-पिता

माता-पिता हैं 'जन्मदाता',
देवतुल्य उन्हें पूजा जाता।

उनसे बढ़कर नहीं कोई जगत् में,
प्राण बसे थे 'श्रवण' के उनमें।

वे ही गुरु और भगवान्,
चाहते बढ़कर निकले सन्तान।

भली-बूरी लगती सब प्यारी उनको,
वे नहीं सोचते चाहें हम किसको।

बच्चे नहीं लगते भार,
इतना ऊँचा उनका प्यार।

उनके चरणों में बसता सुख-संसार,
पालते-पोषते सन्तान, वे होते 'पालनहार'।

एक समान रखते दृष्टि,
उनके बल चलती सृष्टि।

उनसे बढ़कर क्या होगा कोई कहाँ,
घर बनता है स्वर्ग रहते वे जहाँ।

राम ने किया वनवास,
पर नहीं हुये उदास।

माता-पिता का किया था आज्ञापालन,
धन्य ! किया था, जिन्होंने उनका लालन-पालन।

राम जैसे हों आज्ञाकारी,
चाहती ऐसा पावन धरा हमारी।

-लावण्य प्रभा वत्सी
कार्यालय सहायक, हिन्दी प्रकोष्ठ

मैं समंदर हूँ

मैं समंदर हूँ।
लहरें आती हैं, लहरें जाती हैं।
सूरज से मेरी तरफ, और मुझसे सूरज की तरफ।
दूर क्षितिज पै मिलने की कोशिश करता रहता हूँ मैं।
यूँ ही भटकते, सूरज से कहीं
अनंत के पास, अनंत के आगे।
मैं टकराता रहता हूँ किनारे से
जहाँ पत्थर रखे हुए हैं
दीवारें बना दी हैं वहाँ।
युद्ध चलता रहता है वहाँ गोज
कोशिशें चलती रहती हैं
लहरों पै चढ़ के सूरज तक पहुंच जाने की
लेकिन आज किनारे पै उन्हीं पत्थरों पै बैठ के,
दीवारों पै चढ़ के महसूस हुआ।
हाँ, मैं समंदर हूँ।
पर लहरों में खुद को नजर आता ही नहीं।
मैं चीख कर ही रह जाता हूँ।
मैं फैन बना जाता हूँ।
बस लगातार किनारे से टकराता हूँ।
क्या हो कि मैं सचमुच समंदर जानूँ खुद को।
क्या हो कि मैं किनारों से दोस्ती कर लूँ।
क्या हो कि मैं देखता रहूँ इन लहरों को और मुस्कुराऊं
कि कितना बचकाना है समंदर हो के किनारों से बैर रखना।
ये जान पाना कि हर सुबह मुझमें ही उगता है सूरज
और हर शाम मुझमें ही समा जाता है।
बस देर है किनारे पै बैठ के इन लहरों को देखने की।
और तब शायद मैं हो जाऊंगा इस दौड़ से आजाद
लहरों के साथ, सूरज की ओर, अनंत की तरफ।

-हिमांशु पन्त
शोधार्थी, भा.प्रौ.सं. मण्डी

माँ

ईश्वर की सबसे सुन्दर रचना हो तुम
प्रकृति की सबसे अद्भुत कल्पना हो तुम
मेरे जीवन की किताब का सबसे अनमोल पना हो तुम
मेरे जीवन का सम्पूर्ण सार हो तुम
मेरे इस दुनिया में होने का कारण हो तुम
मेरी दुनिया का आरम्भ और अंत हो तुम
मेरे पिता की अधारिगिनी और धनलक्ष्मी हो तुम
मेरे घर का स्तम्भ हो तुम
मेरी सफलता की हकदार हो तुम
मेरी खुशी का जरिया हो तुम
मेरे दुःख का सहारा हो तुम
इस दुनिया की सबसे अद्वितीय नारी हो तुम

“मेरी जननी हो तुम
मेरी माँ हो तुम”

-सुश्री श्रीया देवलिया
छात्रा, भा.प्रौ.सं. मण्डी



आज बोलूँगी

सालों से खामोश हूँ, आज मुँह खोलूँगी ।
छोड़कर डर, आज सब सच बोलूँगी ।
मेरी खामोशी को मेरी कमजोरी मत समझो तुम
बच्ची से जवान हो गई, अब कब तक झेलूँगी ।

आज चाहिए मुझे जवाब अपने सवालों के ।
मेरे जन्म लेते ही, क्यों घर में मातम छाया था,
क्यों सब मुँह मुरझाया था, बात-बात पर सबने ताने मारकर मुझे रूलाया था ।
क्योंकि पीढ़ियों को चलाने वाला बेटा घर नहीं आया था ।

कूड़े दान में फैंका, शर्म उनको न आई थी,
कुत्तों ने नोचा कितना मैं चिल्लाई थी ।
कभी जंगल में फैंका कभी गन्दे नालों में,
ऐसा स्वागत होगा मेरा, सोचा न था ख्यालों में ।

दर्द को नजर अंदाज करना, हमने गर्भ से ही सीखा है,
सलूक हमारे साथ जान पर सलीका है ।
बंदिशें हमारे ऊपर जारी हैं
घर के अन्दर बाहर हजार शिकारी हैं
बेटी यहाँ जाना नहीं, बेटी ये खाना नहीं
ऐसे नहीं चलना, ऐसे नहीं पहनना है ।

दर्द देकर कहते हो रोना नहीं जोर से, सुनो बातें गौर से
तू पराया घर का धन है, तू हमारा बोझ है
जहर से ढूबे ताने मिलते हमको रोज हैं ।
लड़ाई हमारी तब तक होगी, जब तक बेटी नहीं होगी सुरक्षित ।
जब बेटी के आने पर ढोल बजाए जाएंगे, देने को खुशियां, संगीत गाए जाएंगे ।
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, जब ये नारा हकीकत होगा ।
उसी दिन हमारा यह महायज्ञ पूरा होगा ।

- सुश्री करिना
छात्रा, वल्लभ महाविद्यालय मण्डी

लिखता रह गया

थक कर रुक गया मैं यूँ ही,
मंजिल न मिली तो अफसोस होने लगा,
क्या लिखूँ कहानी अपनी, सोचता रह गया,
बस मैं लिखता ही रह गया।

फिर से चल पड़ा मंजिल की तलाश में,
चलते-चलते छोड़ दी पैरों ने हिम्मत
अब तो पैरों ने भी हिम्मत छोड़ दी, सोचता रह गया,
बस मैं लिखता ही रह गया।

सबने टुकराया किसी का साथ न मिला,
मुझ पर इल्जाम लगे विल्कुल बरसात की तरह,
कैसे मिटा पाऊँगा इतने इल्जामों को सोचता रह गया।
बस मैं लिखता ही रह गया।

गरीबी इतनी पड़ी कि घर बिक गया, जमीन बिक गई,
कैसे परिवार में खुशहाली लाऊँगा, सोचता रह गया,
बस मैं लिखता ही रह गया।

सिर पर बाप का साथा नहीं, भाई-बहन का साथ न मिला,
कैसे बच्चों को शिक्षित करऊँगा, सोचता रह गया
बस मैं लिखता ही रह गया।

कब दिन से गत हुई मुझे इस बात का अंदाजा न रहा,
न जाने कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा,
सोचता रह गया, बस मैं लिखता ही रह गया।

गुजरती जा रही है जिन्दगी, बस चलते जा रहे हैं।
आज हालात सुधर जाएंगे, सोचता रह गया,
बस मैं लिखता ही रह गया।

टूट कर बिखर गया मैं यूँ ही, कब नसीब में खुशियां आएंगी सोचता रह गया,
बस मैं लिखता ही रह गया।

-श्री तुलसी राम
सफाई परिचारक, भा.प्रौ.सं. मण्डी

जब लौट आए तो कुछ कहना नहीं

जब लौट आए तो कुछ कहना नहीं
बस देखना उन्हें गौर से
जिन्हें मंजिलों पर खबर हुई ये रस्ता कोई और था
सारी जिंदगी चल-चल-चल
जब पहुंचे जिसे मंजिल समझा था,
वहाँ पहुंचकर पता लगा कि मैं गलत आ गया

पी जा अस्याम की तल्खी को भी हँस के भी नासिर
गम के सहने में भी कुदरत ने मजा रखा है
अपने लहू के धूट पी ज़ख्म पे ज़ख्म खा के जी
आह ना कर लबों को सीई इश्क है दिल लगी नहीं
सोने पे तीर खाए जा आगे कदम बढ़ाए जा
यानी जबान ए हाल से कहदे के हाँ सताये जा ।

-मो. उमर फारूख
एम.टेक (अनुसंधान) सहयोगी
भा.प्रौ.सं. मण्डी

जननी

ममता की छाँव हो तुम
इस सृष्टि की रचयिता
इक जननी इक माँ हो तुम
घर का मान हो तुम
हम सबका स्वाभिमान हो तुम
हमारे लिए हमारा पूरा जहान हो तुम
बंदिशों में जकड़ी हुई
रस्मों, रिवायतों को पकड़ी हुई
जिए जो अपने लिए
ऐसी कहाँ इन्सान हो तुम
अपने सभी कायाँ को बखूबी निभाती हुई
हम सब के लिए अपना सुख चौन लुटाती हुई
इक जननी इक माँ हो तुम
हमारे अस्तित्व में
अपने आपको खोजती हुई
इक सुदृढ़, मृदु
इन्सान हो तुम
हमारे जीवन का आधार हो तुम
हर घर का सम्मान हो तुम
इस सृष्टि की रचयिता
इक जननी इक माँ हो तुम।



सुश्री आशा भण्डारी,
परिसर निवासी, भा.प्रौ.सं. मण्डी

सतपुड़ा के जंगल

-भवानीप्रसाद मिश्र

सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए-से,
ऊँधते अनमने जंगल ।
झाड़ ऊँचे और नीचे
चुप खड़े हैं आँख भींचे ।
घास चुप है, काश चुप है
मूक शाल, पलाश चुप है ।
बन सके तो धैंसो इनमें,
धैंस न पाती हवा जिनमें,

सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए-से
ऊँधते अनमने जंगल ।
सड़े पत्ते, गले पत्ते,
हरे पत्ते, जले पत्ते,
वन्य पथ को ढँक रहे-से
पंक दल में पले पत्ते,
चलो इन पर चल सको तो,
दलो इनको दल सको तो,

ये धिनौने-घने जंगल,
नींद में डूबे हुए-से
ऊँधते अनमने जंगल ।
अटपटी उलझी लताएँ,
डालियों को खींच खाएँ,
पैरों को पकड़ें अचानक,
प्राण को कस लें कपाएँ,

साँप-सी काली लताएँ
बला की पाली लताएँ,
लताओं के बने जंगल,
नींद में डूबे हुए-से
ऊँधते अनमने जंगल ।
मकड़ियों के जाल मुँह पर,
और सिर के बाल मुँह पर,
मच्छरों के दंश वाले,
दाग काले-लाल मुँह पर,
बात झंझा बहन करते,
चलो इतना सहन करते,

कष्ट से ये सने जंगल,
नींद में डूबे हुए-से
ऊँधते अनमने जंगल ।
अजगरों से भरे जंगल
अगम, गति से परे जंगल,
सात-सात पहाड़ वाले,
बड़े-छोटे झाड़ वाले,
शेर वाले बाघ वाले,
गरज और दहाड़ वाले,
कंप से कनकने जंगल,
नींद में डूबे हुए-से
ऊँधते अनमने जंगल ।
इन वनों के खूब भीतर,
चार मुर्गे, चार तीतर,
पाल कर निश्चिंत बैठे,

विजन वन के बीच बैठे,
झोंपड़ी पर फूस डाले
गोंड तगड़े और काले
जब कि होली पास आती,
सरसराती घास गाती,
और महुए से लपकती,
मत्त करती बास आती,
गूँज उठते ढोल इनके,
गीत इनके गोल इनके ।

सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए-से
ऊँघते अनमने जंगल ।
जगते अँगड़ाइयों में,
खोह खड़ों खाइयों में
घास पागल, काश पागल,
शाल और पलाश पागल,
लता पागल, वात पागल,
डाल पागल, पात पागल,
मत्त मुर्ग और तीतर,
इन बनों के खूब भीतर ।

क्षितिज तक फैला हुआ-सा,
मृत्यु तक मैला हुआ-सा
क्षुध्य काली लहर वाला,
मथित, उत्थित जहर वाला,
मरु वाला, शेष वाला,

शंभु और सुरेश वाला,
एक सागर जानते हो?
ठीक वैसे घने जंगल,
नींद में डूबे हुए-से
ऊँघते अनमने जंगल ।
धौंसों इनमें डर नहीं है,
मौत का यह घर नहीं है,
उतर कर बहते अनेकों,
कल-कथा कहते अनेकों,
नदी, निझर और नाले,
इन बनों ने गोद पाले,
लाख पंछी, सौ हिरन-दल,
चाँद के कितने किरन दल,
झूमते बनफूल, फलियाँ,
खिल रहीं अज्ञात कलियाँ,
हरित दूर्वा, रक्त किसलय,
पूत, पावन, पूर्ण रसमय,
सतपुड़ा के घने जंगल
लताओं के बने जंगल ।

स्रोत :

पुस्तक : मन एक मैली कमीज है (पृष्ठ 17)

संपादक : नंदकिशोर आचार्य

रचनाकार : भवानी प्रसाद मिश्र

प्रकाशन : वाग्देवी प्रकाशन संस्करण : 1998

मोकों कहाँ ढूँढे बंदे

-कबीर दास

मोकों कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास मैं।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलाश मैं।
ना तो कौन क्रिया-कर्म मैं, नहीं योग बैराग मैं।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहैं, पल भर की तलाश मैं।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस मैं॥

व्याख्या :-

ऐ बंदे, तू मुझे कहाँ ढूँढ़ता फिर रहा है, मैं तो तेरे पास ही हूँ। न मैं मंदिर में मिलूँगा, न मस्जिद में, न काबे और कैलाश में, न पूजा-पाठ में, न योग-बैराग में।
सच्चे मन से खोजने वाला हो तो उसे मैं पल-भर की तलाश में मिल जाऊँगा। कबीर कहते हैं, भाई साधु सुनो, वह तो हर साँस में मौजूद है।

स्रोत :

पुस्तक : कबीर बानी (पृष्ठ 31)
रचनाकार : अली सरदार जाफरी
प्रकाशन : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
संस्करण : 2010



चित्र : निकोलस रोएरिच की पेंटिंग

आहिंसा का पालन करने वाला व्यक्ति
दूसरों की गलतियों को माफ़ कर देता है
और सहनशीलता का व्यवहार करता है,
चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन
चयों न हों।

-महात्मा गांधी



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी



आवरण : निकोलस रोएरिच की पेंटिंग